संस्मरण

(पूज्य गुरुदेव से सम्बन्धित)

प्रकाशक :

संगत समतावाद (रजि०)

छछरौली रोड, जगाधरी (हरियाणा)

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्मरण अक्तूबर 1997

1100 प्रतियां

मूल्य : 20 रुपये

मुद्रक :

पैलीकन प्रिन्टसैटर्स प्रा. लि.

178, देशबन्धु गुप्ता मार्किट, करोल बाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष 524181

श्री सद्गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज

संक्षिप्त जीवन परिचय

पूज्यपाद श्री सदगुरुदेव महात्मा मंगतराम जी वर्तमान युग के जन्म सिद्ध सत्पुरुष हुए हैं। आपका जन्म मंगलवार दिनांक 9 मग्घर सम्वत् 1960 तदानुसार 24 नवम्बर 1903 को शुभ स्थान गंगोठियां ब्राह्मणां, जिला रावलपिंडी (पाकिस्तान) के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप बाल ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी परम त्यागी एवं ब्रह्मनिष्ठ आत्मदर्शी महापुरुष थे आप में "स्थितप्रज्ञ" के समस्त लक्षण पूर्ण रूपेण घटते थे 13 वर्ष की स्वलपायु में आत्म साक्षातकार कर लेने के पश्चात आप सांसारिक प्राणियों का उद्धार करते रहे। देश और काल के अनुसार जहाँ कहीं भी आपने धर्म की मर्यादा को भंग होते देखा तथा सामाजिक नियमों के पालन में त्रुटि पाई, वहां पर ही धर्म की मर्यादा की स्थापना की और सदाचारी जीवन बिताने का उपदेश देकर सामाजिक ढांचे को विछृंखल होने से बचाने का पर्यत्न करते रहे।

आप अपनी मधुर वाणी और निर्मल विचारों द्वारा हर एक को प्रभावित कर लेते थे और सरल एवं सुबोध भाषा में आध्यात्मिकता के गम्भीर विषयों को सहज ही समझा दिया करते थे। आपने समता के उद्देश्य का जगह-जगह पर प्रचार किया और यह सिद्ध कर दिया कि समता सिद्धान्त को अपनाकर ही मानव संकुचित विचारधारा साम्प्रदायिकता तथा जाति-पांति के बंधनों से ऊपर उठ सकता है।

आपने साँसारिक प्राणियों को सदशांति की प्राप्ति के निमित्त समता के पांच मुख्य साधनों (१) सादगी, (२) सत्य, (३) सेवा, (४) सत्संग और (५) सत् सिमरण को अपने निजी जीवन में ढालने का उपदेश दिया। सत् पर आधारित होने के नाते आपके सभी उपदेश विश्व कल्याण की भावना को अपने से संजोये हुए हैं। आपने भारत के भित्र-भित्र क्षेत्रों का भ्रमण करके जहां रूढ़िवादियों एवं अन्य विश्वासों का खण्डन किया, यहाँ सत् के जिज्ञासुओं को समता का पावन सन्देश देकर उन्हें परमार्थ पथ पर आरूढ़ किया। आपकी वाणी का संग्रह ग्रन्थ "श्री समता प्रकाश" और वचनों का संग्रह ग्रन्थ 'श्री समता विलास" के रूप में प्रकाशित हो चुका है।

आप 4 फरवरी 1954 को 50 वर्ष की आयु में अपने नश्वर शरीर का त्याग करके परम सत्ता में विलीन हो गये।

"ईश्वर महिमा"

तू कर्ता करतार है, सब जग सरजनहार।
पल पल कीजू बंदना, तू साक्षी पुरुष, अपार॥
बार बार करूँ बंदना, तू दीनानाथ दयाल।
नेह मानिया का मान, तू सरबकाल रछपाल॥
अपनी कला को धार के, रच्यो जगत पसार।
अनेक भांत उस्तत करूँ, तू दीन बन्धु दातार॥
सरब जगत का रक्षक, नित ही करे प्रतिपाल।
निमख निमख सिमरण करूँ,गोविन्द सरब कृपाल॥
चार वेद जस गांवदे, गुणी मुनि जन अनेक।
सब जग तुमरा खेल हैं, नित राखूं तुमरी टेक॥
अनमत मूढ़ा आया प्रभ, तोरे दर भीखार।
दीजो भगती दान प्रभ, नित मन करूं पुकार॥
आठ पहर तुम प्रेम में, मनुआं रहे लवलीन।
दीन दयाल दया करो, हरयो बुद्ध मलीन॥
शेश संहस मुख गांवदा, पल पल नाम आपार।
महमा तेरी क्या कहूँ, तू आपे सरब आधार॥
पाप कूप भसमत करो, दीजो सत् विचार।
नित सिमरूँ तेरे नाम को, नित चरणी सुख धार॥
कलयुग घारे आ वरतेआ, सत धरम भयो नाश।
कूड़ कपट की सम्पदा, सब घट कीयो परगास॥
राखनहार आपार तू, नित ही तेरी आस।
'मंगत' नित सरनागती, हरयो भरम की प्यास॥

विषय सूची

क्र.	प्रेमी जिन्होंने संस्मरण दिए	पृष्ठ संख्या
1.	श्री सद्गुरुदेव जी महाराज	4
2.	भक्त बनारसी दास जी	11
3.	महन्त रतनदास जी	34
4.	बाबू अमोलक राम जी	60
5.	श्री नन्द लाल जी	69
6.	हकीम भीम सैन जी	74
7.	श्री नरसिंह दास जी लौ	77
8.	श्री ओम कपूर जी	82
9.	श्री राम लाल जी नारंग	85
10.	श्री हेमराज जी गेरा	89
11.	डॉ. मदन मोहन जी	91
12.	श्री नरेन्द्र कुमार जिन्दल	95
13.	हकीम राजा राम दत्त	98
14.	बख्शी अमोलक राम जी	101
15.	श्री सन्त राम गौसांई	108
16.	श्री सालिगराम जी	116
17.	श्री रामजी फोतेदार	120
18.	श्रीरामलाल जी	122
19.	श्री रत्तन चन्द महाजन	125
20.	श्री ओंकार नाथ जी	130
21.	श्री करम चन्द जी टण्डन	135
22.	श्री परस राम जी हरियाल	145
23.	श्री कृष्ण लाल जी शर्मा	149
24.	मास्टर जगननाथ जी	153
25.	श्री रत्तन चन्द अग्रवाल जी	154
26.	श्री किशोरी लाल जी मेंहगी	156
27.	श्री हरबन्स लाल जी चावला	156
28.	श्री वज़ीर चन्द लूथरा जी	160
29.	श्री बिशम्बर दास जी लूथरा	161
30.	श्री हरि कृष्ण कपूर जी	165

प्रस्तावना

इस दृश्यमान संसार में असंख्य जीव मानुष जाने को धार कर आते हैं और समय पाकर इस संसार से चले जाते हैं। ऐसी प्रणाली आदिकाल से चली आ रही है। आजतक कोई भी ऐसा मनुष्य संसार में नहीं आया जो हमेशा टिका हो।

किसी कवि ने कहा है :

"पंज भूत काया मानव की,

नहीं किसी की कभी रही है,

नहीं किसी की कभी रहेगी।"

साधारण संसारियों की याद तो इनके सम्बन्धियों तक ही सीमित रहती है और वह भी कुछ समय तक अन्त में वह भी समाप्त हो जाती है। मगर एक ऐसी याद है जो युगा युगान्तर तक बनी रहती है। वह भुलाने से भी नहीं भूलती। यह याद किसकी है, साधारण संसारियों की नहीं परन्तु उन पावन सत्पुरुषों की जो समय की माँग के अनुसार प्रभु प्रेरणा से पंचभौतिक शरीर को धारण करके जाये। उन्होंने आकर मानव मात्र के कल्याण हेतु अपना आदर्श जीवन पेश किया और अमृत वचन जन कल्याण के लिए फरमाये। शरीर छोड़ने के पश्चात् ब्रह्मतत्व में लीन हो गये। जीवन काल में तो संसारियों ने उन्हें नहीं पहचाना परन्तु उनके शरीर छोड़ने के पश्चात् उनकी जीवन की घटनाओं को याद करके अपने जीवन का सुधार करते हैं। ज्यों-ज्यों हम उनके जीवन की आदर्श घटनाओं को याद करते हैं और उनके अनमोल वचनों का स्वाध्याय करते है त्यों-त्यों मन में प्रेम, त्याग, वैराग्य आदि शुभ गुण प्रगट होने लगते हैं। यही जीवन उन्नति का मार्ग है।

अपने जीवन काल में सद्गुरुदेव पूज्य महात्मा मंगतराम जी ने कुछ वचन उच्चारण फरमाये थे कि "प्रेमियो! हमारी ड्यूटी खत्म हो

चुकी है। सब प्रेमी मिल जुलकर प्रेमपूर्वक सत्संग व सत्विचार और संगत सेवा में समय देकर जीवन सुफल करें। जिस वक्त भी कोई भरम निवारण करना हो और मानसिक शान्ति के वास्ते कोई उपाय तलाश करना हो तो इस अनुभवी वाणी को खोलकर पढ़ें फकीरों के पास जो कुछ था, पब्लिक की सेवा में रख दिया है, अब आप जाने और आप का काम।"

इस छोटी सी पुस्तक में सत्पुरुष पूज्य महात्मा मंगतराम जी महाराज के आदर्श जीवन की घटनाओं और वार्तालाप का वर्णन किया गया है विशेषकर उन प्रेमी सज्जनों द्वारा जो उनके सम्पर्क में आए वार्तालाप की या शिष्यत्व ग्रहण किया अथवा उनका काफी समय संग प्राप्त किया। संगत समतावाद ने इन घटनाओं को प्रथम भाग में छपवाकर जनता के कल्याण हेतु पेश किया।

संगत समतावाद (रजिस्टर्ड)

महामन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार

अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक

कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं

॥ मंगलाचरण ॥

नारायन पद बंदिये, ताप तपन होये दूर।
नमो नमो नित चरण को, जो सरब आधार हज़ूर॥
हिरदे सिमरो नाम को, नित चरणी करो डण्डौत।
सत् शरधा से पूजिये, रख सत्गुरु की ओट॥
दुविधा मिटे मंगल होये, जो चरण कंवल चित धार।
रिद्ध सिद्ध आवे घर माहीं, पावें जय जय कार॥
साचा ठाकुर सरब समराथा, अपरम शक्त अपार।
'मंगत' कीजे बन्दना, नित चरणी बलिहार॥
सत मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल।
गवन मिटी संसार की, सतगुरु मिले दयाल॥
बार बार करूँ बन्दना, सतगुरु चरनी माईं।
'मंगत' सतगुरु भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं॥

संस्मरण (श्री गुरुदेव के मुखारबिन्द से)

कल्लर में एक रात हुई घटना आपने एक प्रेमी को सुनाई थी। घटना इस प्रकार थी :-

सावन का शुरू था। एक रात आप घर से निकल पड़े। काली अमावस्या की रात थी। बादलों के कारण अन्धकार की परत और भी गहरी हो गई थी। समय का ठीक पता न चला। "कल्लर से चलते चलते काफी दूर निकल गये। जो रास्ता चोहाँ भगताँ की तरफ जाता था उस तरफ तेज-तेज कदम उठाये काली अंधेरी रात की वजह से पाँव फिसल गया। गहरी खाई में गिरने का पता लग रहा था-सीधे खड़े-खड़े नीचे जा रहे थे। बस इतना ही मालूम हुआ कि किसी लम्बे-लम्बे कोमल हाथ वाले ने गोद में ले लिया है। फिर होश रही।"

जब सूरज निकला और दिन चढ़ आया तो आपने अपने को एक नदी के किनारे पाया। कुछ देर के बाद पाँव फिसलने, गिरने और गोद में लेने की सारी बात याद आ गई नजर उठा कर ऊपर देखा तो बड़ी ऊंची चोटी दिखाई दी। "वाह मेरे मालिक, तू बड़ा ही बेपरवाह है, किस तरह हाथों से पकड़ कर यहाँ रख दिया है"

ये शब्द आपके मुख से निकले। बड़ी देर तक नदी के किनारे बैठे रहे। दोपहर के बाद यहाँ से एक आदमी गुजरा। उससे "चोहाँ भगताँ " की ओर जाने वाला रास्ता पूछा। उसने कहा "इस ओर ऊपर जाओ। यहाँ से सीधा रास्ता निकल जाता है।" फिर उठकर कपड़े उतारे, स्नान किया। शरीर पर कोई चोट न लगी थी। कहीं रगड़ तक का निशान न था। स्नान करके फिर वहाँ ही एक ओट में बैठ गए। चोहाँ भगताँ जाने का विचार छोड़ दिया। शाम को यहाँ से उठे और कल्लर लौट आये घर पहुँचने पर आपके बहनोई साहिब कुछ नाराज हुये पूछा, "किधर गये थे? कह कर तो जाना था।" गुरुदेव चुप होकर सब कुछ सुनते रहे। कोई उत्तर न दिया।

यह घटना सुना कर कहने लगे. इसी प्रकार समय गुजरता रहता था। काफिले वाले चलते रहते है। संसारी लोग आवाजें करते रहते हैं। प्रेमी, संसारियों का अपना ही रास्ता है। फकीर अपने स्वभाव से चलते हैं। संसारियों से मेल जोल रखना कठिन हो जाता है। "

संस्मरण (श्री गुरु चरणों का मिलाप)

(भक्त बनारसीदास जी परम शिष्य श्री महाराज मंगत राम जी)

सन् 1938 ज्येष्ठ मास की सक्रांत का दिन था प्रातः के समय में और ठाकुर दीवान सिंह मंदिर में बैठे थे। कथा हो रही थी। कथा समाप्त होने पर एक प्रेमी सज्जन ने उठकर सूचना दी कि जलमादा गाँव में एक महात्मा ने तप समाप्त किया है और 4 ज्येष्ठ को वहाँ एक भारी यज्ञ किया जायेगा सब माई-भाई से प्रार्थना है कि इस शुभ मौके पर दर्शन देकर लाभ प्राप्त करेंगे। यह सूचना सुनते ही मन में प्रसन्नता की लहरें ठाठें मारने लगी। एक दम ठाकुर दीवान जी से कहा, चलो भाई दर्शन कर आयें ठाकुर जी ने कहा, सांयकाल चार बजे चलेंगे। यह फैसला करके अपने अपने घर को चले गये। सारा दिन मन में खटपट लगी रही कि कब चार बजे हम महात्मा जी के दर्शनों के लिए चलें महापुरुषों का कहना है कि जिस बात की मन में सच्ची कामना हो, उसका समय भी कभी आ ही जाया करता है। ज्यों-त्यों करते दोपहर ढल गई और बेचैनी बढ़ने लगी ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कोई भी अपनी तरफ खेंच रही है। इस धुन में दुकान में बैठा ही था कि दूर से आते हुए ठाकुर जी ने आवाज दी, चलो प्रेमी जी अब चार बज गये है। यकायक दुकान बन्द की और दोनों चल दिये। तकरीबन डेढ़ मील की चढ़ाई का रास्ता तय करने के पश्चात् हम उस कुटिया के पास पहुँचे जहाँ श्री महाराज जी ठहरे हुए थे। कुटिया के बाहर एक कटे हुए वृक्ष के तने की ओट में श्री महाराज जी को सफेद कपड़ों में समाधि अवस्था में विराजमान पाया। महाराज जी का शरीर छोटे बच्चों की तरह बड़ा ही कोमल था। उनको प्रणाम करके पास बैठ गये। थोड़ी देर पश्चात् श्री महाराज जी ने आँखें खोलीं और आहिस्ता-आहिस्ता धीमी आवाज़ में फरमाया "प्रेमी जी किधर से आये हैं? ठाकुर जी चुप रहे, दास ने हाथ

जोड़कर प्रार्थना की, "महात्मा जी! कोई पता नहीं कहाँ से आये। यह सुनते ही महाराज जी थोड़ा मुस्कराये और फिर आँखें बन्द कर ली। हम समझे घोर तप के कारण कमजोरी से ज्यादा बोल नहीं सकते जो हमें पता चल चुका था। श्री महाराज जी 35 दिन लगातार तप में रहे और इस दौरान केवल आध सेर गाय का दूध केवल एक समय ही लेते रहे। पहली बार अन्न का त्याग कर दिया था। किसी को महाराज जी के पास तप के दौरान जाने की आज्ञा नहीं थी केवल दूध की सेवा करने वाले प्रेमी का समय निश्चित था।

श्री महाराज जी के दर्शन करने पर उनके चेहरे से ऐसा दिखाई पड़ा जैसा कि उन्होंने कई दिनों से कोई चीज ग्रहण न की हो। शरीर इतना कमजोर था कि तमाम नाड़ियाँ और हड्डियाँ स्पष्ट नजर आ रही थी। महाराज जी के अन्दर ऐसा खिचाव था कि यहाँ से उठने को जी नहीं चाहता था। अन्तःकरण से यह आवाज आ रही थी कि, ऐ बनारसी यही तेरा मुकाम है। यहाँ से ही तेरा असली मार्ग आरम्भ होता है। मन यहाँ शान्ति अनुभव कर रहा था जब महाराज जी ने समाधि से आँखें खोली तो ऐसा प्रतीत हुआ कि यह अपनी और आकृष्ट कर रहे हैं। फरमाने लगे प्रेमियों जाओ वक्त ज्यादा हो गया है। इतना कहकर आप फिर समाधि में लीन हो गये थोड़ा-थोड़ा अंधेरा होना आरम्भ हो गया था। श्री महाराज जी ने दोबारा जाने के लिए कहा हमने नमस्कार कर दिया और चल दिये। श्री महाराज जी ने हमे बही प्रेमभरी दृष्टि से देखा। इस प्रकार हमारा यहाँ आना जाना आरम्भ हो गया। 4 ज्येष्ठ को यहाँ यज्ञ हुआ। यही भारी संख्या में हिन्दु मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई हर पन्थ व मजहब के लोग वहाँ पधारे हुए थे। अखण्ड पाठ हो रहे थे। हवन व कीर्तन भी हो रहे थे सब अपना-अपना राग अलाप रहे थे किसी के मन में तनिक भी द्वेष भाव दिखाई नहीं देता था। यह सब उस सत्पुरुष की लीला थी। दोपहर 3 बजे के करीब तमाम पधारी हुई जनता को अपने अनमोल वचनों द्वारा

कृतार्थ किया। इतनी कमजोरी के बावजूद आपकी आवाज बड़ी ऊँची थी। सब प्रेमी यहाँ इस बात से चकित थे। प्रवचन के पश्चात् लंगर का प्रसाद बाँटा गया श्री महाराज जी प्रेमियों का अटूट प्रेम देखकर अति प्रसन्न हुए। बाकी प्रेमी तो अपने-अपने घर को चले गये परन्तु हम और कुछ प्रेमियों सहित रात श्री चरणों में ही ठहर गये। श्री महाराज जी अन्य सन्तों कबीर, नानक, दादू आदि संतो की वाणी सुना सुनाकर प्रेमियों को निहाल कर रहे थे। रात्रि 12.00 बजे तक यह प्रवाह चलता रहा। प्रेमी तो निद्रा की गोद में चले गये। श्री महाराज जी परणा, गडवी उठाकर बाहर चले गये। काफी दूर जाकर आसन लगाकर समाधि स्थित हो गये। इसके पश्चात् दास भी सो गया। सुबह जब श्री महाराज जी वापिस आये, हम नमस्कार करके अपने घर कोहाला चले गये। इस प्रकार यहाँ हमारा रोजाना जाने का कार्यक्रम चलता रहा। बड़ा एकान्त समय हमें मिलता। हमने अपनी शंकाओं का भलीभांति समाधान किया। श्री महाराज जी बड़े प्रेम से समझाते और हमारे प्रश्नों के उत्तर जो वह देते थे। पुर दलील होते थे।

एक दिन दास ने अर्ज की, "महाराज जी हमको कुछ अभ्यास के बारे में समझाएँ।" श्री महाराज जी ने फरमाया, प्रेमी ! अभी तुम्हारी उमर नहीं है। अभी बच्चे हो, समय आएगा। कोई न कोई समझायेगा, हम गुरु नहीं है। इसी प्रकार टाल मटोल में पन्द्रह दिन निकल गये। ज्यों-ज्यों दिन बीतते जाते बेचैनी बढ़ती जाती थी। एक दिन फिर प्रार्थना की, "महाराज जी दास पर कृपा करें।" फरमाने लगे "अभी अंधेरा पक्ष है अर्थात कृष्णपक्ष है, जब चांदना पक्ष आयेगा अर्थात् शुक्ल पक्ष आयेगा तो फिर समय दिया जायेगा। इन्हीं हालात में दस दिन और व्यतीत हो गये श्री महाराज जी ने एक दिन दास को कहा, तुम्हारी ज़मानत कौन देगा।" इसका कोई उत्तर न बन पड़ा। इस

प्रकार चार दिन और व्यतीत हो गये। अन्त में दास ने श्री महाराज जी से कहा, "महाराज जी! हमारी जमानत तो आप ही है। बिगाड़ो तो आप, संवारों तो आप। हम दोनों ने जोरदार प्रार्थना की। अन्त में श्री महाराज जी ने हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। फरमाने लगे "प्रेमियो ! सुबह बताया जायेगा।" यह सुनकर हम दोनों गद-गद हो गये। अधिक प्रसन्नता के कारण रात भर नींद नहीं आई। इसी विचार में कि कब प्रातः हो कि हम श्री महाराज जी के चरणों में उपस्थित हों। प्रातः जब श्री महाराज जी बाहर से आये तो फरमाया, "प्रेमियो पूर्णमाशी वाले दिन आप सुबह स्नान करके, सिर पर पगड़ी रखकर सतश्रद्धा और विश्वास लेकर आना।" यह सुनकर अति प्रसन्नता हुई और पूर्णमाशी के दिन की बड़ी उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे।

पूर्णमाशी का दिन था। प्रभात के समय हम नहा धोकर सामग्री सहित श्री चरणों में पधारे। हमारे अपेक्षा और चार प्रेमी भी सतमारग के साथी बनने वाले थे। श्री गुरुदेव जी ने बड़े प्रेम से समझा-समझा कर हर एक बात भली प्रकार दृढ़ करवाई अभ्यास का तरीका बताया गया। यह भी बताया कि किस प्रकार सिमरण से भजन, ध्यान और समाधि को जीव प्राप्त होकर परम आनन्द को पा सकता है। फिर उनके चरणों का अमृत पान किया। श्री महाराज जी ने अपने हाथ से प्रसाद देकर आशीर्वाद दी। सतशिक्षा पाकर मन बड़ा प्रसन्न हुआ। दिल ने कहा कि अगर तुम जिन्दगी की वास्तविक मौज लेना चाहो तो श्री गुरु चरणों की सेवा में रहकर जीवन यात्रा को सुफल बनाओ।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

(एक ब्रह्मचारी को उपदेश) स्थान श्रीनगर काश्मीर

एक दिन अहमदाबाद से आए मास्टर मनीराम जी (अहमदाबाद निवासी) एक बाल ब्रह्मचारी को साथ ले आए जो कि उन दिनों गोपी

तीर्थ में एकान्तवास में समय गुजार रहे थे। आते ही प्रणाम करके बैठे! तो गुरुदेव ने फरमाया:-

गुरुदेव: क्यों प्रेमी किसके आधार पर खड़े हो या खाली शौक पूरा कर रहे हो।

ब्रहाचारी: महाराज जी! आधार तो एक नारायण का है। बचपन से ऐसा शौक रहता था। वनों में जाकर तप करूँ सन्तों का संग करना व सत्संग सुनना एक महात्मा मिल गये थे। उन्होंने बतलाया कि यह साधन करके पहले सूर्य भगवान को प्रसन्न कर लो फिर आगे के लोकों का तुम्हें पता लग जायेगा। इस तरह एक समय खिचड़ी बनाकर सेवन कर लेता हूँ। जहाँ आप किसी समय निवास कर चुके है यहाँ ही ठहरा हुआ हूँ। लक्षमण जी ने दूध चावलों का प्रबन्ध कर दिया हुआ है। आप भी कृपा करें कोई शिक्षा दें।

गुरुदेव :- प्रेमी ठीक है जो कुछ प्रेम से कह रहे हो सत विश्वास से लगे रहो। रोज रोज नई सिखया नहीं लेनी चाहिए। कभी समय मिला तो इतवार के समय सत्संग में आ जाया करो। अच्छा है जैसे भी लगे हुए हो मगर मान और माया से बचना मुश्किल है।

“गृहस्थी हो तो भगत कर ना तो कर बैराग

बैरागी होए बंधन पड़े ताको बड़ो अभाग

तब लग जोगी जगत गुरू जब लग रहे निरास

जब जोगी आशा करे तो जग गुरू जोगी दास

मुए को प्रभु देत है लकड़ी कपड़ा आग

जीवत जो चिन्ता करे तिस का बड़ा अभाग"

प्रेमी यह उमर अभी बाल अवस्था है, बगैर सोधे समझे ही घर जो निकल पड़े हो। अब डटकर साधन करो जिज्ञासु को पहले गुरु भक्ति सेवा में लगना चाहिए। फिर जिस योग क्रिया में लगवा दें उसी

में प्रभु परायण होकर जब प्रयत्न करेगा तब जाकर किसी समय अन्तर विखे रोशनी होगी। तुम्हारी बातें समझदारी वाली नहीं। किसी कामिल गुरु की पहले तलाश करो। सूरज, चन्द्रमा, राहू, केतू, ब्रम्हा, विष्णु सब तेरे अन्दर है। शौक जरूर है मगर तुम अभी बच्चे हो प्रेम से लगे रहो लग्न पूरी लगी रही तो आप ही नारायण किसी भेष में समझाने आ जायेगा। तप करते करते नया खून जल जायगा फिर असली सूरज के दर्शन होंगे।

मास्टर जी - महाराज जी इस पर कृपा कर दो पूरा जिज्ञासु है।

गुरुदेव - प्रेमी अभी तो यह गुरु खुद बन रहा है। जिज्ञासु इस प्रकार की बातें नहीं किया करते जब तक यह खुद न अपनी कमी को समझे और जो कर रहा है गल्त न जाने तब तक दूसरा रास्ता पकड़ना फजूल है। हठ से कुछ हासिल नहीं होता काश्मीरी ब्राह्मण बातों में बड़े चतुर होते हैं किसी समय शायद इसे होश आये जो कर रहा हूँ यह ठीक नहीं, फिर कोशिश करके पूछे, तब कुछ असर होगा। जिसने कुछ सीखना होता है वह और ही जीव होते हैं। अच्छा है जो कर रहा है। जब तक पहले शरीर गाले नहीं तब तक कुछ हासिल नहीं होता। मास्टर जी यह बच्चों का खेल नहीं है। ऐसे लोगो के वास्ते बड़ा सख्त इम्तहान है। हर किसी को प्रेरणा न किया करो। पता देना तुम्हारा फर्ज है आगे खुद अपने आप विचार करें। जो जिज्ञासु होगा खुदबखुद खिचा चला आयेगा इसके दिमाग में केवल सूरज की पूजा बैठी हुई है।

अच्छा प्रेमी आओ सूरज के तेज को प्रगट करे। पहले यह शरीर की लाली खत्म होगी तब वह दूसरा भान प्रगट होगा। ब्रहाचारी के जाने के बाद गुरुदेव ने कहा जैसा किसी ने दिमाग में बिठा दिया उसी तरह चल दिया, यही बचपन होता है इस मार्ग के वास्ते बड़े

खोज की जरूरत है। आसान थोड़ा ही है। बड़े भाग हो तो गुरु मिलें।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

श्री महाराज जी थटटा (जो इलाका अब पाकिस्तान में है) नामक स्थान में विराजमान थे। एक दिन रात को निष्काम कर्म साधना का प्रसंग उच्चारण फरमाया। दूसरे दिन दास ने प्रातः श्री महाराज जी से पूछा, महाराज जी! निष्काम कर्म और सकाम कर्म में क्या भेद है?

गुरुदेव : प्रेमी एक कर्म कर के जीव बंधन में पड़ता है और एक कर्म करके छुटकारा पाता है। एक पलक भी कर्म क्रीड़ा से छूट नहीं सकता। मन में फल की आशा रखकर जो कर्म किया जाता है उसको सकाम कर्म कहते हैं। सकाम कर्म ही इसको आवागवन के चक्कर में ले जाते हैं। भाग्य से सत्पुरुषों की संगत द्वारा सोझी पाकर निष्काम कर्म के भेद को जानकर सतमार्ग में दृढ होता है सिर्फ ऐधरों पुटना उधर लगाना है। यानी वृत्ति को संसार की तरफ से हटाकर कर्तार की तरफ लगाना है, यानी जो भी कर्म इससे बन आये, सबको ईश्वर आज्ञा में समझते हुए, फल की आज्ञा न रखकर करता जाये। तब बुद्धि निर्मल होते होते असली तत्त (तत्व) को जानने लगेगी। असली निष्कामता उस समय अन्दर आती है जब नाद स्वरूप परमेश्वर को अपने घट के अन्दर परगट देखता है। सकाम कर्म की भावना उस समय नष्ट हो जाती है। आकारमयी बुद्धि निर्विकार में तबदील हो जाती है। सब कुछ प्रभु आज्ञा में विचारने लगता है। प्रेमी तू बता किस धारणा को मन में रखकर सेवा कर रहा है।

मैंने महाराज जी से कहा! में नहीं समझा कि आपने क्या फरमाया।"

गुरुदेव - प्रेमी किस धन, दौलत, बड़ाई और संसारी पदार्थों की ख्वाहिश (इच्छा) रखकर सेवा कर रहा है?"

मैने महाराज जी से कहा "दास तो किसी दुनियावी पदार्थ की ख्वाहिश (इच्छा) रखकर शरण में नहीं आया है बल्कि उस शान्ति की तलाश में आया है। जिस शान्ति को पाकर राम, कृष्ण, बुद्ध, कबीर आदि अवतार कहलाए। इसके सिवाय और कोई विचार नहीं। इसके लिए जो जरूरी आज्ञा है करें।

गुरुदेव : "प्रेमी ! विचार तो तुमने बहुत ऊँचा धारण कर रखा है। हाँ कोई गोल (निशाना) जबतक सामने न रखा जाए तब तक मन उधर नहीं जाता। ऐसी ख्वाहिश के वास्ते बड़ी कुर्बानी (त्याग) की जरूरत है। बाकी इधर से जो कृपा करनी थी कर दी गई है। अब तुम्हारी अपनी मेहनत है। यह सेवा वगैरह भी इस सत मार्ग में सहायक होती है। पहुँचाने वाली अपनी अभ्यास की कमाई होती है। इस तरह से चलते रहो। खुद (स्वयं) ही मालिक सब सबब (कारण) बना देता है।

"जे साहिब कुछ करनी लोड़े ।

सौ सबब इक पल विच जोड़े।।"

तु कर्ता सत तेरी आज्ञा, इस पवित्र निश्चय को दृढ करो। इसी से शुरू (आरम्भ) होना है, इसी में खत्म होना है। ऐसा सत भाव चिर काल के बाद समझ आता है और फिर दृढ होता है। पूछने से बेहतर है कि मन में विचार बिठाओ।"

संस्मरण (भक्त बनारसी दास जी)

बुत परस्ती का निर्णय

अगस्त, 1950 में एक दिन प्रातःकाल जब आप बाहर से वापिस स्थान पर आ रहे थे तो शालीमार बाग के बीच से होकर आते हुए

रास्ते में पश्चिम की ओर इशारा (संकेत) करके दास - से फरमाया

उस पार जल के किनारे हज़रत बल की जगह है, बहुत सुन्दर स्थान है। इस जगह हज़रत मुहम्मद साहिब के दो चार बाल रखे हुए है।

दास:- महाराज जी इन मुसलमानों में तो बुत परस्ती करना मना है। बालों को रख कर क्या करते हैं?

गुरुदेव:- प्रेमी, जो बीमारियाँ तोहमात प्रस्ती वगैरा हिन्दुओं में है, दूसरा रूप इन्होंने अख्तयार कर लिया है। जो ब्राह्मण हिन्दू मुसलमान हो गए हैं उन्होंने वहाँ भी जाकर दूसरे रूप में धन्धा शुरू कर दिया है। हिन्दू समाधियों पर प्रदक्षणा करते हैं। यह कबरों पर जाकर दुआएं करते हैं, दीये जलाते हैं हिन्दू मढ़ी मसानों को पूजते है। फर्क क्या है। नायक जी ने कहा है -

"हिन्दू अन्ना तुरकु काणा।"

सार बात को कोई आरफ (सिद्ध पुरुष) ही जानते हैं। मुहम्मद की तालीम ख़ुदा परस्ती केवल एक ईश्वर की याद और खलकत की खिदमत यानि सेवा बतलाती है। आप पूरा ही आरिफ हुआ है। मशरक से मगरब तक जिधर चले जाओ एक ही असूल उठने बैठने का पाओगे। बाद में कई तरह के तरीके स्वार्थी मनमाने लोगों ने रायज (प्रचलित) कर लिये है। तालीम हमेशा सिदक दिल लोगों से फैलती है। विश्वास, यकीन वाले लोगों के नक्शे कदम पर चलने से दूसरे लोग सबक हासिल करते हैं। समय-समय पर कोई न कोई महापुरुष धरती पर आते रहते हैं। नये रूप में कुदरती तालीम का आरम्भ कर जाते हैं। खलकत (जनता) फकीरों को नहीं बनाती फकीर ही जनता को सुधार का रास्ता बताते आए है समता तो अभी नई तालीम के रूप में है। जब सोटा चलेगा। कतलो गारत के बाद जब दुनिया ठंडी

हो जाती है, तब फकीरों को ढूँढते हैं। ग्रन्थों को फरोलते है, महात्मा लोग क्या लिख गए है। उस समय सन्तों के वचन चित्त को ठण्डा करते हैं, अब गाते हैं।

“धन्न बाबा नानक, जिस जग तारया"

जब मैजूद थे तब कुराइया करके पुकारते थे। खास कर कश्मीर की धरती ऐसी मोहनी रूप है। हजारों दफा कुश्ती सून (रक्तपात) करवा चुकी है जब तक दुनियां है, दुनियां वाले अपने रंग पर चलते रहे। फकीर (महात्मा) अपना-अपना काम करके चले जाते है। हमेशा उनके नाम-लेवा उनका सिमरण करते हैं। डंडे मार राजाओं को कौन याद करता है। जिस जगह जाओ यहाँ देख भाल कर, कुछ सबक पिछली तारीख से भी लेना चाहिए।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

"सत्पुरूष का टैक्सला में म्यूजियम देखना व उस पर विचार”

9 भादों को जलमादा से चलकर कोहाला, नथीया गली, हतगतोड, नवां शहर (जिला एबटाबाद पाकिस्तान) से होते हुए टेक्सला पहुंचे। टेक्सला में जब आपने प्राचीन सामान व चीजें देखी तो फरमाने लगे :

"किधर गये यह साज व सामान बनाने वाले किसी समय यह चीजें बड़ी मेहनत से बनाई गयीं। न बनाने वाले रहे न उनके इस्तेमाल करने वाले रहे। न ही यह किसी समय रहेंगी। वाह! आश्चर्यजनक प्रभु की लीला है।"

जब आप म्यूज़ियम से बाहर निकले तो एक चपरासी खड़ा था। आपने उससे पूछा, "कितनी तनख्वाह (वेतन) लेते हो?"

चपरासी- "खुदा के फजल से 22 रुपये मिलते है।"

श्री महाराज जी- "गुजारा किस तरह करते हो?"

चपरासी (ऊपर हाथ उठाकर) "अल्लाह राजक है।"

श्री महाराज जी ने प्रसन्न होकर दास से दो रुपये उसको दिलवाये। टेक्सला स्टेशन पर पहुंच कर देखा कि मेरा चेहरा लाल हो रहा है और पूछा:

श्री महाराज जी- बनारसी मुंह क्यों लाल हो गया है?

दास – "बिस्तरा उठाने की वजह से लाल हो गया है"

श्री महाराज जी- (थोड़ी देर खामोश रहने के बाद) "बच्चू प्रभु, तुझे सुमति देवें। भगवान के दरबार में तेरा नाम लिखा गया है। अब चाहे चूं कर चाहे चां कर जाना पड़ेगा। फकीरों की सेवा खाली नहीं जाती। दिल में तंगी महसूस न किया कर खुले दिल हर समय हर हालत में गुजारने की कोशिश करो।

रंग लागत लागत लागत है।

भ्रम भागत भागत भागत है।"

श्री महाराज जी के वचन सुनकर दास ने प्रार्थना की कि दास सेवा के सही स्वरूप को नहीं जानता और न ही समझ सका कि किस प्रकार और किस जगह नाम लिखा गया है।

आपने मौज में आकर बंद शब्द उच्चारण फरमाये जिनको सुनकर मेरे आंसू निकल आये।

फिर आपने दास की पीठ पर हाथ फेरा और फरमाने लगे, रोने से काम नहीं बनता। विचार की आखे खोलो संसार क्या है? किधर से आये है? तुम्हारे माता पिता किधर गये, जिन्होंने तुझे पैदा किया?"

जब पंजा साहब जाने वाली गाड़ी में सवार हुए तो "यही हिसाब है सत् मार्ग का भी। नाम रूपी टिकट संभाल कर रखने में सहूलियत रहती है, निर्भयता से सफर तय हो जाता है। ठिकाने पर कभी न कभी पहुंच जाता है"

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

योग विद्या का वर्णन गुरु वशिष्ठ द्वारा

एक दिन प्रातः चरणों में बैठकर आपके सेवक भगत बनारसी दास जी योग विशिष्ठ पढ़ रहे थे। आपको जब पता लगा तो फरमाया :

गुरुदेव:- प्रेमी ! क्या पढ़ रहे हो?

दास:- महाराज जी! प्राण-अपान, समाध वर्णन का प्रसंग पढ़ रहा हूँ। बहुत सुन्दर चीज लिखी हुई है।

गुरूदेव :- जरा ऊँचा पढ़कर सुनाओ?

दास ने रामायण का छटा प्रकरण सुरग इकीसवां प्राण, अपान, समाध योग जब वशिष्ठ जी काग भुसुन्ड के पास गए। यह प्रसंग पढ़ा। सुनने के बाद भगत जी से फरमाया:-

गुरूदेव:- सुना प्रेमी ! तुमने यह क्या पढ़ा है?

दास:- महाराज जी! समान भाव में जो शुभ गुण प्रगट होते हैं वह तो मोटे-मोटे समझ आ गए है। मगर सन्तों की बोली में जो गुह्य (गहरा) भेद वर्णन हुआ है। यह तो बिना अन्तर विखे स्थिति के कैसे स्थान किया जा सकता है?

गुरूदेव:- प्रेमी बनारसी दास! इस गुह्य भेद को समझते-समझते। फकीरों के खून खुश्क हो जाते हैं। केवल हड्डियों का ढांचा रह जाता

है। तब जाकर बोध हो सकता है वशिष्ठ ने वोह ऊँची स्थिति बयान की है, जिसको राम, कृष्ण, बुद्ध, नानक, कबीर ही जानते या जानने वाले हुए हैं। प्रेमी, मामूली बात नहीं अभी तक किसी पंडित, ज्ञानी, शास्त्री ने इसका अर्थ उल्टा सुल्टा नहीं किया। ज्यों का त्यों ही श्लोकों का अर्थ कर रखा है। यह पढ़े-लिखे आचार्य लोग भी ऐसे भाव बयान नहीं कर सकते यह वाक्य ही वशिष्ठ का राम को दिया हुआ असली उपदेश है ये पंडित लोग क्यों नहीं इसको खोल कर मन्दिरों में लोगों को समझाते असली तालीम (उपदेश) राम का यह है कोई भेद छुपा के नहीं रखा। बिलकुल खोल के वर्णन कर दिया है। सिर्फ सामने बैठकर समझने वाली बात फिर भी छुपा कर रख ली है। ये ऐसे प्रसंग चित्त के अन्दर उत्साह विचार पैदा करने वाले होते है। योग विद्या की कोई थाह नहीं। जिस तरह सागर यानि समुन्दर की तह का पता नहीं लगता, इसी तरह यह आत्म बोध की स्थिति है। कौन जाने किस स्थिति के ऋषि मालिक थे हजारों बरस तक ध्यान मग्न होकर घास की झोपडियों में गुजार देते थे। यह ही प्राण विद्या लाखों वर्ष पहले की चली आती है। आइन्दा भी इस भेद को जानने वाले ही मोक्ष पायेंगे। नेहकर्म अवस्था बगैर इस साधन के कभी प्राप्त नहीं हो सकती। राम, कृष्ण के इतिहास तो सुना देते हैं। मगर इस कथा को कभी किसी ने नहीं सुनाया। वैसे इस योग विशिष्ठ के योग को पढ़कर बहुत से जबानी ब्रह्मवादी बन रहे हैं। इस मरने वाले भेद को कोई नहीं पढ़ता साधन भी पास हो और ऐसे ग्रन्थों का स्वाध्याय भी हो, यह यत्न- प्रयत्न में बहुत सहायक हुआ करता है। जब समय मिले ऐसे ग्रन्थ पढ़ते रहा करो वाकई काग भुसुण्ड की लम्बी आयु करने वाला यह ही योग था योग मार्ग में कई साधन, शारीरिक देह कायमी के वास्ते भी थे। भोगों के वास्ते शारीरिक आयु नहीं बढ़ाया करते थे। केवल चिरकाल तक आत्म आनन्द में लीन होने के वास्ते देर तक शरीर रखने का इरादा हुआ करता था। भाग्य से

आत्म अनुभवी अवस्था हो भी जाए, स्थिति और फिर लीनताई के वास्ते तो बहुत ही यत्न करना पड़ता है। लीनताई के बाद जब मर्जी हुई योगी शरीर छोड़ दे या छूट जाए। वोह तद्रूप हो चुके होते हैं। राम, कृष्ण कोई मामूली हस्तियाँ न थीं जिन्होंने दोनो तरफ समय दिया। उनकी रीस (नकल) करके बहुत लोग अपने आप को गर्क कर लेते हैं। योग और भोग दोनों चलते रहें। ऐसा कई संसारी चाहते हैं। तीव्र त्याग के धारण करने से ही योग में कामयाबी हुआ करती है। इन संसारी प्रेमियों की तरफ देखकर किसी समय हंसी आती है। कब चलेंगे और कब अन्दर की मंज़िल पूरी होगी। इधर जो आकर हाथ जोड़ता है, उसे कुछ समझाना पड़ता है। किसी से इन्होंने भेद-भाव नहीं रखा हुआ किस कदर मेहनत करके ऐसी अवस्था आई, तुम क्या जानों। पकी पकाई पर आ बैठे हो। जब मेहनत करोगे तब ही कुछ समझ सकोगे। देखो, वशिष्ठ जी ने राम को बार-बार कई तरह से समझाने की कोशिश की है। उनका वनों की तरफ जाने का और क्या मतलब था तीर्थ यात्रा के बाद झट ही गुरु ने उपदेश समझा दिया। फिर जल्द ही ऐसा कारण बन गया। बहाना मिलते ही राज गृह को छोड़कर चल दिये। चित्रकूट के जंगलों में काफी देर तक रह कर ध्यान को पक्का (एकाग्र) करते रहे हैं। उनके कठिन तप, त्याग को किसने देखा है अवतार कोई आसानी से नहीं कहलाए। फिर मिट्टी के साथ मिट्टी होना पड़ता है। जाओ! कुछ पका कर अब खाओ। अभी शायद महंगी डाक्टर को लेकर आ जाएगा। देख, वक्त क्या हो गया है।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

वास्तविक सेवा भाव -

23 सितम्बर 1949 को रात के समय गुरूदेव और दास विचार

कर रहे थे। पडोस में एक अंग्रेज फकीर रहता था। उसको पता लगा कि महात्मा जी की सेहत ठीक नहीं। वोह गुरुदेव को देखने आया। दरवाजा खटखटाया।

दास ने जब दरवाजा खोला तो उसने पूछा बनारसी दास, अभी तक तुम जाग रहे हो। महात्मा जी की तबियत ठीक है बोलो, हम कोई खिदमत कर सकता है।

गुरुदेव :- साहिब, सब ठीक है, फिकर वाली बात नहीं गुरुदेव की बात सुनकर वोह वापिस लौट गया। बाद में गुरूदेव ने दास से फरमाया।

प्रेमी! इसको इस समय क्या सूझा। बड़ा ही साबर और सन्तोषी प्रेमी है असली खुदा दोस्त है। किस तरह का निर्भय जीवन बना रखा है। कुदरत आप ही रास्ता हर जीव को दिखाती है। जो भी उसकी राह पर चलने वाले है, अपनी निजात (मुक्ति) का शौक रखते हैं। उसकी हर समय मदद होती रहती है किसी के मोहताज़ नहीं होते। अब इसे किस ने फकीरी जीवन का सबक सिखलाया है। मगर आन्तरिक जीव आत्मा हर एक की उस लाजवाल (हमेशा) रहने वाली खुशी की चाहत है। चाहे किसी देश का मालिक क्यों न हो। उसके सामने अपने पैगम्बर ईसा की जिन्दगी मौजूद है। जो-जो भी गुरमुख जीव अपने सामने बुजुर्गो का जीवन प्रेम से विचार करता है, कुछ न कुछ असर जरूर जीवन पर पड़ता है। ईसा की जिन्दगी भी इबादते इलाही (ईश्वर चिन्तन) त्याग और खिदमत (सेवा) का आला से आला (महान्) सबक दे रही है। महापुरुषों का जीवन जुगा-जुग तक असर अंदाज़ रहता है। हों, कुछ जीव इधर देवे तो तन-मन-धन से सेवा करने का जजबा इनके अन्दर भी कमाल दर्जे का है। वैसे हर एक महापुरुष का पर उपकारी जीवन हुआ करता है। चाहे मशरक (पूरब) हो चाहे मगरब (पश्चिम) में इससे तुमको अभी क्या सबक

मिला है।

दास महाराज जी पड़ोसी क्या कोई भी दुखी हो, उसकी हर समय खबर लेनी फर्जे-अवलीन है। न वोह इस समय आकर कुछ दे गया है, न और तरह की सेवा की केवल इसका पूछना ही प्रेम से मन के अन्दर प्रसन्नता ला रहा है। जी चाहता है, जा कर उसके पाँव दबाए जायें।

गुरुदेव हाँ प्रेमी ऐसा भाव चित्त में हर समय बनाए रखने में असली खुशी (प्रसन्नता) मिलती है। अच्छा अब आराम करो। सुबह इसकी सेवा कुछ कर देना।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

निखेत्र पर्वत से वापसी पर मुसलमान गूजर से भेंटवार्ता

19 सावन के करीब आप निखेत्र पहाड़ से उतर कर निखेत्र गांव में पधारे रास्ते में आपको वह मुसलमान प्रेमी मिला जो आपके तप के दौरान रोजाना दूध पहुंचाया करता था। उसने झुक कर सलाम किया।

श्री महाराज जी- क्या चाहते हो?"

मुसलमान प्रेमी- "पीर जी, दुआ करें ख़ुदा ईमान बख्शे।" महाराज जी " (जवाब सुनकर प्रसन्न हुए और फरमाया) दुनियां की दौलत और बाल-बच्चे क्यो नहीं मांगते?"

मुसलमान प्रेमी- "ख़ुदा के तफैल (कृपा) वक्त गुज़र रहा है। दुनिया की चीजें फकीरों से नहीं मांगनी चाहिए। ईमान मिला तो सब कुछ मिल जायेगा।"

महाराज जी- (मुस्करा) कर ख़ुदा यकीन पाक (ईश्वर

विश्वास) देवे।" फिर दास को इशारा करते हुए कहा, "बनारसी, इसको दो रूपये दे दो बच्चों के वास्ते।"

मुसलमान प्रेमी - (रुपये लेकर) "मैं हर चीज़ से मालामाल हो गया हूं।"

इस वार्तालाप से कितनी महान् शिक्षा मिलती है। अगर संतों के दरबार से मांगना हो तो मांगें प्रभु भक्ति।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

(लाहौर-मार्च, 1944)

भगत जी का गुरु आज्ञा पालन

लाहौर में गुरुदेव मार्तण्ड भवन चौबुर्जी में ठहरे थे। एक दिन रात तीन बजे जब बाहर तशरीफ ले गए तो दास भी साथ था। रास्ते में एक जगह मुझे बिठाकर और आगे काफी दूर आप चले गए। थोड़ी देर के पश्चात् ही बड़े जोर से बारिश आ गई आगे पीछे कोई बचाव का अनुकूल स्थान न होने करके दास उसी जगह बैठा बारिश में भीगता रहा। बन्द होने पर जब गुरुदेव वापिस आए और दास को भीगे हुए देख कर फरमाया-प्रेमी घर चले जाना था, क्यों खामखाह भीगते रहे।

भगत जी:- महाराज जी, आपको भी तो बारिश ने भिगो दिया होगा।

गुरूदेव :- प्रेमी, इनका तो रोजाना यही हाल है। नमक थोड़ा ही है जो गल जाएगा। तप इसी को कहते हैं। जहां बैठे वहां बैठ गए। सर्दी, गर्मी, बारिश, आंधी के वेगों को सहन करना यही तपस्या है। दिल को मजबूत रखा करो। ये चीजें कुछ नहीं बिगाड़ती। मुसीबत

बर्दाश्त करने की इसी तरह शक्ति आती है। हर एक चीज से विचार लेना चाहिए। साथ ही गुरु आज्ञा पालन करने का तूने सबूत दिया है। जिस जगह कहा वहां ही बैठा रहा। इसी तरह हर आज्ञा का पालन करना ही श्रद्धा और विश्वास को बढ़ाता है।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

एकता का आदेश

एक दिन एक मुसलमान प्रेमी चरणों में हाजिर हुआ। बड़े प्रेम से काफी समय तक यह परम भक्तिनी "राबया" के जीवन के हालत सुनाता रहा। गुरुदेव बड़े ध्यान से सब हालात को सुन रहे थे। जब यह पूरा प्रसंग सुना चुका तो आज्ञा लेकर सजदा करके वापिस चला गया। उसके जाने के बाद गुरूदेव ने दास को यह आदेश दिया।

देश प्रेमी किस कदर सत्-विश्वास यानि यकीने पाक वाले लोग है। बुजुर्गों के इतिहास को किस तरह प्रेम से वर्णन करता रहा है। जिस "राबया" का प्रसंग उसने सुनाया है वो उस शून्य अवस्था में स्थित थी, जिस अवस्था को पाकर फिर और कुछ पाना बाकी नहीं रहता। सबसे बडी बन्दगी प्रभु भाने में यानि ख़ुदा की रजा में रहना ही है। आज उस प्रसंग को भी तू लिख रहा है। जिसमें अल्लाह वाले तू लोग मोजज़न (तल्लीन) रहते हैं। खुद ख़ुदा यानि ब्रह्ममयी वो हो जाते है। वहां यह कहना ही नहीं रहता कि मैं ख़ुदा हूँ, ब्रह्म हूँ। सम अवस्था, इसी का नाम है। उठ चलो नगर की तरफ आज तुम को नींद की भी कसर लगी है। इस तरह के प्रसंग कभी-कभी सुनने में आया करते हैं। ऐसे प्रसंग चित्त में बैठाने की कोशिश किया करो ये विचार कभी मन में न लाना कि यह हिन्दू है, यह मुसलमान है, यह पारसी है। सबको अपनी आत्मा जानो। मशरक, मगरब में जो भी प्रभु परायण होने वाले जीव हुए हैं, सब ही नमस्कार योग्य है।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

हिरनों के डार से शिक्षा (आपसी प्रेम की)

एक दिन गुरुदेव जब बाहर एकान्त में गए हुए थे तो एक हिरनों के डार को खेतों के दरम्यान एक बगीचे में देखा। वापिस लौटने पर मुझसे फरमाया-

गुरुदेव :- प्रेमी, तुमने कभी हिरनों के डार देखे है।

दास :- नहीं महाराज जी, मुझे ऐसा इतफाक कभी नहीं हुआ।

गुरूदेव:- प्रेमी, सुबह बाहर बैठे हुए थे पास ही एक हिरनों का डार चुपके से आकर खड़ा हो गया। सरसराहट की आवाज आई। आँख खुली तो देखा, बहुत से हिरण छोटे-बड़े खड़े हैं उनके पास आगे एक बड़ा हिरन खड़ा है। कितनी देर बड़े प्रेम से खड़े देखते रहे बड़े हिरन ने एकदम कोई आवाज़ की, जिसके सुनते ही सब दौड़ पड़े जहाँ यह खड़ा होता, सब खड़े हो जाते। हर जानदार, हैवान, इन्सान में सरदार भी दरमयाने भी और छोटे भी बच्चे बूढ़े सब होते हैं, नर मादा अपनी-अपनी जोड़ी अलग-अलग बनाकर चलते है। प्रभु की विचित्र माया में सब गिरफ्तार है। अति मोह इस हैवानात में होता है। यह ही तमो गुण का रूप है।

मोह और अज्ञान ही जीवों को नीच से नीच गति की तरफ ले जाता है, कितनी भटकना, चंचलता तेजी इनके अन्दर पायी जाती है। दौड़ते-दौड़ते मीलो निकल जाते है। सुराब के अन्दर इनकी बड़ी दुर्गति होती है। पानी के वास्ते तड़पते है ऐसे सूरज की चमक से रेत के ज़राअत (कण) चमकते दिखाई देते हैं। ऐसे नजर आता है। जैसे पानी होगा। ज्यों-ज्यों दौड़ते जाते हैं, पानी नहीं पाते। इसी तृखा

में कई मर जाते है। इसकी मिसाल (दृष्टान्त) ज्यादातर सन्यासी लोग देते हैं।

मृग तृष्णा, तृष्णा कभी शान्त नहीं होती। लाखों किस्म के संसारी सुख मिल कर भी फिर वैसी की वैसी भोगों की चाहना बनी रहती है। जन्म जन्मान्तर बीत जाते है। मनुष्य इस बीमारी को नहीं समझता देख भी रहा है नाना जंगम अस्थावर जीव दुःखी हालत में विचर रहे है। ये क्यों ऐसी हालत में पड़े हैं ऐसी सजाएँ क्यों मिलती है। जिन शरीरों में ज्ञान विचार पैदा ही नहीं हो सकता। ऐसा न हो, इन हालात में विचरना पड़े प्रेमी दुनिया की जिस चीज की तरफ देखो, उसी से सत् विचार मिल जाता है। देखो, इस हिरन की नाभि में कस्तूरी का नाफा रहता है। जिसकी खुशबू सूंघ कर ये समझता है। किसी और जगह से आ रही है। इसी तरह ये जीव भी नहीं समझता कि परमात्मा सत्ता मेरे अन्दर विखे है यह बाहर जंगलो, पहाड़ो, मन्दिरों, मस्जिदों में ढूंढता है इसी को अज्ञान कहते है जब तक कोई समझता नहीं तब तक इसे सत सोझी नहीं हो पाती। हिरन की आंखें बड़ी मस्ती वाली होती है गाना सुनने का बड़ा शौकीन होता है। प्रभु की माया ने सब धराधर जीवों को मोहित कर रखा है। बहुत डरपोक पशु है कभी इधर-उधर निकल जाना देखना कैसे मिल कर चलता है।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

44. शाहपुर कंडी में आगमन व छूआछूत का सुधार

शाहपुर पहुंचने पर रोजाना शाम को सत्संग का प्रोग्राम प्रेमियों ने निश्चित कर दिया और शाहपुर कंडी निवासी प्रेमी ने सतपुरुष के विचार लेने के लिए निम्नलिखित अर्ज की छूआछूत पर सत्पुरुष के विचार लेने के लिए निम्नलिखित अर्ज की :

प्रेमी- "महाराज जी हरिजनों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिये? हम उनसे दान वगैरह ले लेते हैं लेकिन ब्याह शादियों के समय उनके साथ बर्तने से परहेज करते हैं।

श्री महाराज जी- इस बात ने तो हिन्दुस्तान का बेड़ा ही डुबो दिया। इसलिए जो भी बाहर के देश आते हैं वह इस जगह के मालिक बनते जा रहे है। वह हरिजनों को अपने में मिलाते जा रहे है हम धिक्कारते जा रहे हैं। बेटी रोटी का परहेज रखो लेकिन और जो भी कार्य उनका हो वह करो उनके घर की रोटी न खाओ लेकिन मंत्र पढ़ने में तुम्हारा क्या लगता है।"

इस पर एक प्रेमी बोल उठा, "महाराज जी, आज एक शादी हो रही है। हरिजनों ने हमको बुलाया है कि आकर ब्याह पढ़ जाओ। हमारे बुजुर्ग जाने नहीं देते। आप हमें आज्ञा दें क्या करें? यह कहते है तुम नहीं आओगे तो हम मुल्ला काजी को बुलाकर ब्याह कर देंगे आप फरमायें क्या करना चाहिये?"

श्री महाराज जी प्रेमी, एक मिनट भी देरी न करो। अगर इस काम को कर सकते हो तो फौरन जाओ। किसी की न सुनो काम करके उनसे कुछ न लो। निष्काम भाव से सेवा करो। आपस में प्रेम बनाये रखो आज काजी से ब्याह पढ़वा कर कल यह तुम्हारा साथ थोड़ा देंगे मुसलमान बन जायेंगे भक्ष-अभक्ष करने वाले हो जायेंगे। जो बिल्कुल शुद्ध भावना वाले हैं, राम कृष्ण का नाम लेने वाले है तुमने उनको बिल्कुल अलग कर रखा है। यह कहां की नीति है?"

आपके सत् और अनोखे वचन सुनकर किसी को तर्क वितर्क की जरूरत न पड़ी बल्कि सेवा कार्य के लिए दोनों जवान फौरन चल दिये। यहां पहुंचने पर पता चला कि शादी का कार्य वह किसी और जगह से पंडित बुलवाकर कर चुके है। इस पर उन नौजवानों ने

हरिजनों के चंद खास आदमियों को पास बुलाकर अपने आने का सारा हाल सुनाया। इसका उन लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उनका तमाम गुस्सा ठंडा हो गया। यही नहीं बल्कि दूसरे दिन हरिजन काफी संख्या में श्री महाराज जी के दर्शनों के लिए पधारे। एक हरिजन ने हौसला करके बात छेड़ी, "महाराज, हमारा क्या कसूर है जो हमको आप अपने पास बिठाने से परहेज करते हैं? क्या हम राम, कृष्ण के नाम लेवा नहीं? आज तक जितनी रक्षा हिन्दू कोम की हरिजनों ने की है बड़ी-बड़ी जात बिरादरी वालों ने नहीं की। जब गुरु गोबिंद सिंह ने पांच प्यारे बनाये तो उनमें कितने बड़ी जातों वाले थे?" उस वक्त गांव के बड़े-बड़े पंडित भी आपके चरणों में बैठे थे।

प्रेमी के सब विचार सुनने के बाद पंडितों की तरफ दृष्टि करके आपने फरमाया, प्रेमियों सुन रहे हो जवाब दो।" सबको खामोश देखकर फरमाने लगे, "प्रेमियों, अब जमाना रोशनी का है। कुछ अंग्रेजों ने कृपा की बहुत सारा झमेला साफ ही कर दिया। कुछ गांधी बाबा भी आपके वास्ते मरणव्रत रखकर आपस में मिला रहे हैं। यह पाकिस्तान वाला झगड़ा तो जिन्ना ने खड़ा कर रखा है कुछ अक्ल ठिकाने लायेगा।" फिर गांव के प्रसिद्ध पंडित दीनानाथ जी की ओर देखते हुए आपने फरमाया-

"इनको तसल्ली दो ताकि आईंदा यह आराम से समय काट सकें।"

पंडित जी ने आज्ञा पालन करते हुए सबसे अर्ज की कि आईंदा किसी को शिकायत का मौका नहीं दिया जायेगा यह सुनकर हरिजन प्रेमियों को इतनी प्रसन्नता हुई कि वे खुशी-खुशी चरणों में प्रणाम करके लौट गये।

हरिजनों के चले जाने के बाद पंडितों की ओर देखते हुए

फरमाया, "देखो, कितना भयानक समय आ रहा है। जो कड़े बंधन तुमने डाल रखे हैं कहां तक आपस में प्रेम संबंध बनने देंगे। यह लोग असल में सेवादार हैं। तुम गुरु बनकर हलवे मांडे खा रहे हो तो इनके सिरों पर। तुम्हें गुरू इसलिए बनाया गया था कि सत् असत् का निर्णय करके क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों को समझाओ ताकि यह भी सही कर्म करें। तुम्हें तो तप में समय गुज़ारना चाहिए ताकि कोई रोटी पहुंचा जाये, कोई लक्कड़ पानी की सेवा कर जाये। दरिन्दों और दुश्मनों से रक्षा करने वाले क्षत्री थे। धन की सेवा करने वाले महाजन लोग थे, तुम्हारे आगे पीछे छोटा मोटा कार्य करने वाले यही हरिजन हैं। यह पांव जो हर वक्त गंदी या अच्छी जगह चलने वाले हैं शूद्र के समान हैं। इनको क्या अलग कर सकते हो? तुम महाजनों से भी नफरत करते हो। अजीब तुम्हारे हिसाब बने हुए हैं। पंडित जी अब यह जमाना नहीं है। आंखें खोलो। सबको मिलाने वाला सबक पढ़ाओ।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

गुरदासपुर में निवास के समय श्री महाराज जी का फूल की भेंट न स्वीकार करने पर विचार और सही सनातन धर्म क्यों?

26 दिसम्बर को सत्संग में जब महामन्त्र व मंगलाचरण के बाद वाणी का पाठ हो चुका और श्री महाराज जी सत् उपदेश अमृत वर्षा करने लगे थे कि एक प्रेमी ने फूल लाकर भेंट किया और नमस्कार करके मुड़ने को था कि आपने झट ही दोहा उच्चारण फरमाया।

मूल ब्रह्मा डाल विष्णु फूल शंकर देव रे

तीनों देव तो प्रत्यक्ष तोड़े करें किसकी सेव रे

"प्रेमी, जिस जगह यह लगा हुआ था उस जगह अच्छा लगता था। क्यों तुमने तोड़कर इसे रख दिया है। आईंदा ऐसा न करना। यह एक कायदा बना हुआ चला आ रहा है कि संतों के पास जावें तो कुछ सेवा में भेंट जरूर लेकर जाये मगर यहां अपने पापों की भेंट करें और अच्छे विचार ले जायें।" इसके बाद सत् उपदेश वर्षा फरमाई।

सत् उपदेश :-

उसके बाद आपने फरमाया, "प्रेमी, कोई विचार करो।" एक प्रेमी ने झट अर्ज़ की, "महाराज जी आपने फूल की भेंट को स्वीकार क्यों नहीं किया हालांकि सब महात्मा जन अच्छी तरह गले में हार डलवाते हैं?"

श्री महाराज जी ने बड़े प्रेम से फरमाया, "लाल जी, तुम हिन्दू लोग फूल पत्र संतों के आगे रखकर जल में स्नान से और गऊ माता को आटे का पेड़ा देने से ही छुटकारा चाहते हो, और चाहते हो कि और कुछ न करना धरना पड़े। प्रेमी, छुटकारा शरीर भेंट से भी नहीं होता। इनमें कोई कल्याण नहीं, न कोई असलियत है मडियां, कबरें, पूज ली, दरख्तों के आग्र मत्थे रगड़ लिए, साल के बाद या कभी-कभी गंगा स्नान कर लिया और इसी में कल्याण समझ लिया या गाय बच्छी वैतरणी पार करने के लिए दान कर दी, यह सब वहम, तोहमत कहां तक तुम्हारी बुद्धि को निर्मल कर सकते हैं। आंखें खोलो, अब वह जमाना नहीं रहा। बाल की खाल निकालने वाली आईदा आने वाली नस्लें आ रही है। सनातन धर्म यह नहीं है। पुराना सनातन धर्म क्या था, इसका विचार करें। ऋषियों, मुनियों का धर्म था। उपकार, निष्काम कर्म, दुखियों की सेवा, हर जीव मात्र में अपनी आत्मा का विचार करना किसी को मन, वचन, कर्म करके दुख न देना। सदा एक प्रभु की आराधना करनी। जो कुछ धन, सम्पत्ति,

परिवार प्राप्त है, बल्कि अपना शरीर भी, सब प्रभु की दात समझनी । भिन्न भेद से रहित होना, हर पदार्थ जीव मात्र में उस समस्वरूप परमात्मा को देखना आज क्या हालत है, चूल्हे दी तेरी तवे दी मेरी, या दगा तेरा आसरा। क्या आहार पवित्र है? व्यवहार में कितनी सफाई, पवित्रता रखी हुई है? प्रेमी यह फकीर खाली मत्था टिकाने वालों में से नहीं है। यह तुम लोगों को समझाने आए है। समां मिले दो घडी के लिए आया करो। जाओ अब कुछ दुनिया का कारज करो।"

अच्छे-अच्छे अमीर पढ़े लिखे प्रेमी बैठे थे।

एक प्रेमी ने कहा, "महाराज जी सारी पोथी खोल दी है। ऐसा ही हमारा जीवन है। बड़े-बड़े संत आते हैं, कथा श्रवण करने के बाद सब प्रणाम, भेंट कर देते हैं कौन इस तरह खोल कर समझाता है। वाकई असली संतों की महिमा अपार है।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

संत मिले कुछ, कहिये सुनिये असंत मिले मुश्ट हो रहिये ।।

काहनूवान में निवास के समय एक सरदार साहिब से भेंटवार्ता

श्री महाराज जी ने फरमाया, प्रेमी, कोई विचार करो। "सरदार साहिब ने अर्ज की, "महाराज जी, क्या बतायें और अर्ज करें गुरुओं, अवतारों ने कई तरह के विचार देकर समझाया हुआ है, मगर मन की चंचलता खत्म नहीं होती किस तरह संसार में चलना चाहिए?"

श्री महाराज ने वचन उच्चारण करने शुरू कर दिये।

कीजे नेक नामी जो देवे खुदाये, जो होसी ज़मीन पर सो वही फनाये।

दाम दौलत कैसे बेशुमार, न रहेंगे करोड़ी न रहेंगे हजार।

दमड़ा तिस का जो खर्चे और खाये, देवे दिलाये रजाये खुदाये।
होता न राखे अकेला न खाए, देवे दिलाये न पावे सजाए।
कीजे तवाज़ह न कीजे गुमान, न रहसी एह दुनिया न रहसी दीवान।
हाथी घोड़े और लशकर हज़ार, होयेंगे गर्क कुछ लागे न वार।
दुनिया का दीवाना कहे मुल्क मेरा, आई मौत सिर पर ना तेरा ना मेरा।
केती गए देख बाजे बजा, वही एक रहसी जो सच्चा खुदा।
आया अकेला - अकेला चलाया, चलते वक्त कोई काम न आया।
लेखा मंगीजे क्या दीजे जवाब, तोबा पुकारे तो पावे अज़ाब।
दुनिया पर कर ज़ोर दमड़ा कमाया, खाया हंडाया अजायें गंवाया।
आखिर पछोता करे हाये-हाये, दरगाह गयाते तूं पावे सजाये
लानत है तैंको व तैंडी कमाई, दगे बाज़ी करके दुनिया लूट खाई।
पीये पियाये और खाये कबाब, देखो रे लोको जो होये खराब।
जिसका दुनिया के तू बंदा तिस को विसरयां।
दुनिया के लालच में, साहिब विसरयां।

"प्रेमी, यह क्या कहा हुआ है। पता है किन के वचन है?

सरदार साहब कहने लगे, "महाराज जी यह नसीहत नामा गुरु नानक जी का फरमाया हुआ है। यह तो और भी बहुत सारा है।"

श्री महाराज जी फरमाने लगे, "प्रेमी, दुनियां वाले तो शिकार पर चढ़े रहते हैं। कौन उनके बचनों को सुनता है और मानता है। मन की चंचलता सत् विचार से खत्म हुआ करती है। मन ऐसा जानवर नहीं जो बांध लोगे। धीरे-धीरे अभ्यास और वैराग्य द्वारा ठीक होता रहता है। जब नसीहत पर अमल करोगे, आप ही मन ठहरना शुरू हो जावेगा। किसने नानक की बात मान रखी है? वह मांस, शराब खाने बन्द कर रहे हैं, इधर सरदार लोगों ने झड़ी लगा रखी है। कोई गुरु का लाल न सेवन करता हो। जब खुराक, लिवास ही ठीक नहीं, एक तुम सादे हुए तो क्या हो जायेगा। आम नफरी ही बिगड़ी हुई है।

सत्मार्ग वाले चला करते हैं, और की छोड़, तूं अपनी राह संवार बहुत बातें करनी छोड़ दे, अमल कर यह भी एक बीमारी है, विचार बहुत करना, अमल से वे बहरा रहना। सरदार न बनो, सेवादार बनो। आज तक पूछते चले आये हो, किस बात पर यकीन बैठा है प्रेमी ! सुनो थोड़ा अमल करो ज्यादा, जब गुरूओं ने इतनी मेहनत करके पद पाया है तुम खाली बातों से किस तरह पार चढ़ जाओगे? पागलों वाली बातें न किया करो। बहुत जल्दी सत्लोक में जाना चाहते हो तो तुम बाबा सावन सिंह के पास चले जाओ।

सरदार जी कहने लगे कि वहां तो में दो तीन दफा हो आया हूं। बाते, वचन उनके बहुत मीठे हैं, मगर वह जो गुरु की महिमा बताते हैं, मेरे मगज में नहीं बैठ रही। गुरू किस तरह आखिरी समय में शिष्य की रक्षा करेगा।

श्री महाराज जी ने फरमाया, "प्रेमी, किसी के होकर चलोगे तब ठिकाने लग सकोगे। प्रेमी, दर्शन देते रहा करो।" प्रेमी प्रणाम करके चला गया। फरमाने लगे, "इस प्रेमी का दिमाग भी अश्वर्ज बना हुआ है, थकता नहीं।"

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

"ताजेवाला हैड में एकान्त निवास तथा प्रेमियों से वार्ता"

चांदनी रात का समय था श्री महाराज जी तम्बू में विराजमान थे प्रेमियों से तीन तापों के विषय में चर्चा चल रही थी :-

एक प्रेमी ने अर्ज की, "महाराज जी इसका निर्णय करके समझाने की कृपा करें।"

श्री महाराज जी शोक, मोह, लोभ इत्यादि द्वारा उत्पन्न दुख

आध्यात्मिक यानि आधि दुख कहलाते हैं। शारीरिक बीमारियों से पैदा हुए दुख को व्याधि दुख कहते हैं। तूफान, आंधी, बारिश, बिजली, सर्दी, गर्मी द्वारा जो दुख प्राप्त होता है उनको उपाधि विकार करके कहा गया है। इस तरह सुख भी तीन तरह के हैं। अपनी प्रिय वस्तुओं की याद, शारीरिक बल, शारीरिक सुन्दरता, अपनी अक्लमंदी, बुद्धिमता के अभिमान का सुख, कर्तव्य यानि गुणों का अभिमान, घमंड द्वारा जो सुख महसूस होता है यह आध्यात्मिक सुख कहलाता है। स्त्री, पुत्र, पति, भाई, बंधु, मित्र दोस्तों के संजोग और अनेक वस्तुओं के मिलने से जो सुख मिलता है आधिभौतिक सुख कहलाता है। इस तरह ठंडी-ठंडी शीतल वायु के स्पर्श, बरसात के फौहारे और नदी, नालों, पहाड़ों, बागों और कई तरह के सुन्दर दृश्यों से जो सुख महसूस होता है, यह आधिदैविक सुख कहलाता है। इस समय को ही देखो किस कदर यमुना का वेग ठाठें मार रहा है। चांदनी रात कितना मन प्रसन्न कर रही है। एकान्त में और भी अधिक आनन्द आ रहा है। देख कर मन प्रसन्न हो रहा है। यह अधिदैविक सुख है।

प्रेमी जी, जिसका मन इन इन्द्रियों के सुख-दुख की प्राप्ति व अप्राप्ति में चलायमान नहीं होता और जो अंतर से रोग, भय, कामना, क्रोध से रहित है, यह ही अक्ल सलीम (श्रेष्ठतम बुद्धि) वाला स्थिरचित्त का पता तुमको पूरी तरह नहीं लग सकेगा जब तक तुम खुद ऐसी स्थिति को प्राप्त न कर लो जरा-जरा सी बात में मन संशययुक्त हो जाता है। हर एक के मन की ऐसी ही हालत है। कृष्ण सदा ही जती और दुर्वासा सब कुछ खा-पीकर कह रहा है, "जाओ देवियो जमुना माई से कहना दुरबासा निर-आहारी है तो रास्ता दे दे।"

प्रेमी - महाराज जी, यह कथा किस तरह है?

श्री महाराज जी - प्रेमी, सत् पुरुषों के जीवन को समझना बड़ा

मुश्किल है। यह अपनी ज्ञान अवस्था में कंवल की तरह निर्लेप रहते है। चाहे यह बातें कर रहे हों, चाहे लेटे हुए हों, चाहे दुनिया का ब्यौहार कर रहे हों, यह कर्म के बंधन में नहीं पड़ते। दुनिया की निगाह में वह कर्म कर रहे होते हैं। ज्ञान दीपक उनके हृदय में हर समय प्रकाश करता रहता है जिस करके उनको कर्तापन सताता ही नहीं।

एक समय किसी गोपी ने जाकर कृष्ण के आगे प्रार्थना की कि महाराज जी कृपा करें पुत्र का सुख प्राप्त कर सकूं। इस पर कृष्ण ने फरमाया जाकर दुर्वासा से यह प्रार्थना करो। गोपी ने अर्ज की महाराज जी दुर्वासा जमना पार रहते हैं कैसे पार जा सकती हूं।" कृष्ण ने फरमाया, "जाकर जमुना माई से प्रार्थना करो, अगर कृष्ण सदा जती है तो रास्ता दे दो।" गोपी मन ही मन में इस विचार को सुनकर हैरान हुई कि महाराज ने यह क्या बात कही है। किस तरह एतबार किया जावे। मगर उसकी आज्ञा पाकर मीठे भोग पदार्थ लेकर सहेलियों के साथ चल पड़ी। जमुना के किनारे जाकर उसी तरह प्रार्थना की। जमुना ने रास्ता दे दिया। जब गोपियां पार दुर्वासा ऋषि के पास पहुंची पदार्थ रखकर प्रणाम करके अपनी कामना ऋषि से बयान की। दुर्वासा ऋषि ने जब पकवान खा लिए और गोपी को आशीर्वाद दी और तथास्तु कहकर फरमाया, "जाओ।"

गोपी ने अर्ज की, "महाराज जी अब इधर से जमुना कैसे पार की जाये?" तो दुर्वासा ऋषि ने कहा कि जमुना जी से जाकर इस तरह कहो कि अगर दुर्वासा ऋषि निरआहारी है तो रास्ता दे दो। यह विचार सुनकर गोपी को और भी हैरानी हुई क्योंकि ऋषि ने उनके सामने सब कुछ खा लिया था। गोपियों ने जमुना के किनारे जाकर कहा कि माई, अगर दुर्वासा ऋषि निर आहारी हैं तो रास्ता दे दो। जमुना ने रास्ता दे दिया और सब पार हो गई।

फिर भगवान् कृष्ण के पास जाकर दंडवत प्रणाम करके पूछा कि महाराज जी, हमें इन बातों का भेद बताने की कृपा करें कि आप पूछा कैसे जती हैं और ऋषि दुर्वासा कैसे निराहारी हैं।

कृष्ण जी ने उत्तर दिया कि वह इन्द्रियों के विषय भोग मन की ख्वाहिश से नहीं करते और इसी तरह दुर्वासा ऋषि ने आहार मन की ख्वाहिश को पूरा करने की खातिर नहीं किया है। महापुरुषों के करने और ना करने की तरफ ध्यान न दिया करो। फकीर सिर्फ चाय पीते है अगर तुम भी नकल करोगे तो नष्ट हो जाओगे। पहले ऐसी स्थिति पैदा करो। फकीरों के सामने कई किस्म के पदार्थ फल वगैरा आते हैं क्या यह उन्हें ग्रहण नहीं कर सकते। दरअसल इनके अंदर चेष्टा ही नहीं होती।

जैसे जल में कंवल नरालम गुरगाबी निशानिये।

सुरत शब्द भव सागर तरिए नानक नाम बखानिए ।।

यह सब नाम की महिमा है । तेरे सामने रहनी वाले संत मौजूद है जब तक ऐसी तेरी भी रहनी, सहनी नहीं बनती तब तक मंजिले मकसूद तक पहुंचना मुहाल (कठिन) है। ऐसा करने के लिए जीते जी मरना है। जब ऐसी मौत को कबूल करोगे जिन्दगी मिलेगी। कबीर ने कहा:

जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द ।

मरने से ही पाइये पूरण परमानन्द"

संस्मरण (महंत रतन दास)

"सत्पुरुष महात्मा मंगतराम जी महाराज की संत रतनदास जी से रावलपिंडी में प्रथम भेंटवार्ता"

संवत् 1986 भादों का महीना था। आप रावलपिंडी पधारे हुए थे। उन दिनों दास किसी पूर्ण हस्ती की तलाश में देश के कोने-कोने

में फिरते-फिरते और मशहूर तीर्थों, ऋषिकेश, उत्तराखण्ड, बद्रीनारायण और दीगर कई तीर्थों में भ्रमण करके रावलपिंडी पहुंचे। निराश हो रहे थे कि उन्हें कोई पूर्ण सन्त नहीं मिला। दास सुबह इसी निराशा की हालत में नदी लई के किनारे चश्मों पर, जो शहर रावलपिंडी से शुमाल की तरफ थे, बैठे हुए विचार कर रहे थे कि अब यह वशिष्ठ, यज्ञवल्क, गौतम, कणाद, व्यास जी जैसे ऋषियों को पैदा करने वाली पवित्र भूमि सतपुरुषों से खाली हो चुकी है और कोई ऐसी हस्ती नजर नहीं आती जो अज्ञानता के अन्धेरे को ज्ञान के प्रकाश से दूर कर सके। इतने में श्री महाराज जी स्वयं उसी समय उस जगह पहुंच गये और दास की कल्पना निवृति की खातिर प्रश्न करने लगे कि प्रेमी, क्या ऋषियों, महर्षियों को पैदा करने वाली यह पवित्र भूमि सत्पुरुषों से खाली हो चुकी है और अज्ञानता के अन्धकार को ज्ञान के प्रकाश से दूर करने वाला कोई नहीं रहा। अपने अन्दरूनी संशयों को प्रगट पाकर दास ने निगाह ऊपर उठाई तो दुबले पतले सफेद खद्दर के कपड़ों में एक हस्ती को सामने खड़ा पाया। अपने मन के प्रश्नों को हल करने के लिए पूछा कि महाराज जी, अज्ञानता का अन्धकार कैसे दूर हो सकता है। आपने इस पर उत्तर दिया कि प्रेमी, सत् स्वरूप परमात्मा को इस देह में प्रकाशवान कर लेने से अज्ञानता का अन्धकार दूर हो जाता है। यानी जब आत्म अनुभवता हो जाती है। अविद्या, अज्ञानता स्वयं ही दूर हो जाती है। इस उत्तर को सुनकर दास कृत-कृत हो गया और विश्वास हो गया कि भारत भूमि में अब भी अनमोल रत्न मौजूद है और जिस अमूल्य चीज की उन्हें तलाश थी वह इस जौहरी से मिल सकती है। जीवन के उस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने आपसे प्रार्थना की उनके यहां ठहरें। मगर सत्पुरुषने उत्तर दिया कि वह किसी के यहां नहीं ठहरते। इस पर महंत जी ने प्रार्थना की कि उन्हें साथ ले चलिये। इस पर आपने उत्तर दिया कि वह किसी को साथ भी नहीं ले

जाते। दास ने फिर आपका पता पूछा और आपने शुभ स्थान गंगोठियां का पता दे दिया और वहां से चल दिये। श्री महाराज जी के चले जाने के बाद मुझ को चैन कहाँ। अब यह तड़प उठ रही थी कि कौन सा समय हो जब चरणों में हाजिर होकर सत्पुरुष से सत् मार्ग का अनमोल रत्न प्राप्त किया जाये। गर्मी का मौसम था। धूप खूब तेज थी। सफर काफल लम्बा था। लेकिन सब तकलीफों को सहन करते हुए सत् शांति प्राप्ति की इच्छा को लिए हुए आप शुभ स्थान की तरफ रवाना हुए और मंजिल पर पहुंच गये। काफी यात्रा आपको पैदल भी तय करनी पड़ी। सत्पुरुष उस समय जंगल में गये हुए थे। दास ने पहुंच कर आपके बारे में पता किया ऐसा पता लगने पर मैं गांव से बाहर ही एक जगह इंतजार में बैठ गया। गर्मी का मौसम था सफर पैदल तय किया था। प्यास लगी हुई थी। मगर पानी तक भी किसी से नहीं मांगा जब सत्पुरुष जंगल से वापिस तशरीफ लाये तो आपने महंत जी को धूप में बैठे इंतजार करते पाया दास की श्रद्धा और तड़प को देखकर आप बहुत प्रसन्न हुए और प्रेम से उन्हें साथ घर पर ले गये। आपने उन्हें जलपान कराया और भोजन तैयार होने पर भोजन खिलाया। इसके बाद खुद भोजन पाकर और फारग होकर महंत जी के सब संशय दूर किये और अध्यात्मवाद के गूढ़तम ज्ञान को भी दास के सामने खोलकर रख दिया। दास ने चंद दिन शुभ स्थान पर ठहर कर सतपुरुष के सत् उपदेशों की अमृत वर्षा से तृप्ति हासिल की और सत् मार्ग के अनमोल रत्न को भी प्राप्त किया और आज्ञा पाकर अहमदाबाद वापिस आ गया। सत्पुरुष की कृपा की चर्चा दास ने इस प्रकार की है:-

"आखिर मेरे पूर्ण भाग्य से मुझ पर ईश्वर दया हो गई तो इन महापुरुष के दर्शन सहज स्वभाव ही उस वक्त हुए जबकि मैं फिकरमंद और घबराया हुआ था। एक दो घड़ी के सत्संग से मेरे सब संशय दूर हो गये।"

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

जनवरी 1950 दिल्ली में भेष बनाने पर चेतावनी

गुरुदेव किसी किस्म का भेष नहीं चाहते थे। न स्वयं उन्होंने कोई सन्तों वाला भेष बनाया हुआ था। साधारण वस्त्र ही पहना करते थे न वह चाहते थे कि कोई प्रेमी भेष बनाए। एक दिन सत्संग शुरू होने के वक्त दास ने सिर पर बजाए पगड़ी बांधने के एक कपड़ा रख लिया और ग्रन्थ पढ़ना शुरू कर दिया। गुरुदेव ने इस बात को पसन्द न किया। जब सत्संग समाप्त हो गया काफी संगत चली गई तो दास को पास बुलाकर फरमाया:-

गुरुदेव:- प्रेमी आज तू ने यह क्या सांग बनाया हुआ है। टाकी (टुकड़ा) सिर पर बाँध रक्खी है। खबरदार आईन्दा कोई नमूना बनने की कोशिश की तो पगड़ी किसी को दे दी है। जिस बात को अच्छा नहीं समझते वह ही शुरू कर देता है जो लिवास धारण कर रक्खा है उसी में रहो बेईमान नई-नई खुजतें निकालता है । उस समय तुमको कुछ नहीं कह सके ऐसा तरीका इख्त्यार करना चाहिये, जो हमेशा चलता रहे और लोगों की नजरों में रोगरूप न दिखाई दे जब भेष बनाने का समय आएगा, देखी जावेगी। सुना, क्या समझा है।

भगत जी:- महाराज जी, आइंदा ऐसी बात नहीं करूंगा।

गुरूदेव:- बनारसी क्या समझा है जिस पाखण्ड को खंडन करते हैं, उसी को तुम धारण कर लो। जब इस भेष की जरूरत समझेंगे, देखी जावेगी। मुहम्मद साहिब के चार यार (दोस्त) थे। अभी इधर और कुछ साथी बना लोगे, फिर सोचना। साधारण जिस तरह चल रहे हो, उसी में रहना ठीक है आखिर में ज़ाहरी भेष ही धर्म का

स्वरूप बन जाता है। असल में मन के स्वभाव को तबदील करना है। अच्छा यह बताओ जो बूढ़ा साधु आता है, इसका क्या रंग है। तेरे साथ बड़ी बातें करता है।

भगत जी:- महाराज जी, इसकी यह प्रार्थना है कि मेरे पर महाराज जी कृपा दृष्टि करें।

गुरूदेव:- (मुस्कराकर) पहले इस से यह पूछ, यह जो भेष बनाया हुआ है, लाल कपड़े उतारेगा। ये लोग यह चाहते है कि इनसे कुछ सीख लिया जाये। दूसरों के अच्छी तरह गुरु बन सके। ये लोग अपना सुधार नहीं चाहते जब इनका यह भेष व्यवहार बन चुका है। किसी ठीक रास्ते को नहीं पकड़ सकते। इन साधुओं, पंडितों और ज्ञानियों से बच कर ही रहना चाहिए। ये लोग ज़बानी जमा खर्च करने वाले होते है। मेहदूद अकल वाले बन जाते हैं। अपनी बेहतरी नहीं सोचते। सिर्फ पैसा बटोरना काम हो जाता है। सेवा करने की बजाए कराने वाले बन जाते है। इस वास्ते सेवा करनी इनके वास्ते मुश्किल हो जाती है। जिस रास्ते को पकड़ रखा है ठीक है। इधर सेवा करने वालों की जरूरत है, करवाने वालों की जरूरत नहीं। अब तो उधर ही जाएं, जिधर से सिर मुंडवा रक्खा है। कुछ आप भी समझा करो। अच्छा जाओ, आए हुए प्रेमियों की सेवा करो।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

श्री नगर में साधु शेर सर्प की नींद के विषय में

एक दिन दोपहर को जब दास सो कर उठा तो देखा कि गुरुदेव समाधि में थे। कुछ पत्र लिखने के बाद जब गुरु चरणों में आकर बैठे तो गुरूदेव ने किसी काम के बारे में पूछा वोह कर दिया है।

दास:- महाराज जी आप सोये हुए थे। दास ने जगाना मुनासिब नहीं समझा। ख्याल आया जब उठेंगे तक पूछकर कर लूंगा।

गुरूदेव:- बच्चू, साधु, सर्प, शेर और कुत्ता कभी नहीं सोते। अन्तर से हर समय जागते रहते हैं असली साधु को तो तीन काल निन्द्रा नहीं आती योग निन्द्रा में लवलीन रहते हैं। इनको सोया यानि लेटा हुआ कभी न समझो उठते, बैठते, लेटे, चलते, हर समय अपनी मस्ती में मग्न रहते है और जीवों की नजर में बेशक चलते, बैठते, लेटे दिखाई देंगे। हर बात उनकी मशीन को तेल देने के तुल होती है :

"ना सोचती ना कांखती"

इच्छा करके कोई कर्म नहीं करते, न सोचते हैं। सर्प, शेर, कुत्ते के अन्दर भी अपनी-अपनी मस्ती होती है। खेचरी मुद्रा इन से खुद बखुद बन जाती है। कर्म दण्ड भोगने की वजह से कुछ कह सुन नहीं सकते। बाकी कुछ खुराक की खुमारी में जिस जगह पड़े है, वहां पड़े रहते हैं। जरा सी आहट लगने पर झट होशियार हो जाते हैं।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

(सरूपाजंगल से वापसी की घटना)

संसारी लोग जिस स्थान पर कुछ दिन ठहर जाते हैं, कुदरती उस स्थान से मोह बना लेते हैं और यही मोह आगे चलकर बंधन का कारण बन जाया करता है और इसी कारण वह दुःखी और अशांत रहता है। साधु संसार में सदा निर्लेप रहते हैं, इसलिए ये बरसों तक एक स्थान पर बैठे भी रहें तो भी उनको उस स्थान से लगाव नहीं होता और वह हर समय समभाव में विचरते रहते हैं।

रियासत कश्मीर के ऊँचे पहाड़ पर जिसका नाम सरूपा जंगल था और जो समुद्र से लगभग 8,000 फुट ऊंचाई पर था। श्री सत गुरुदेव मंगतराम जी महाराज जून 1945 में एकान्तवास और तप के वास्ते ठहरे हुए थे। इस एकान्तवास से वापसी पर जब आप कुछ शिष्यों और दास के साथ वापिस नीचे मैदानों की तरफ आ रहे थे तो दास मुड़मुड़ कर जंगलों और पहाड़ों के दृश्य देख रहा था, मानों डेढ़ माह इस जगह पर गुज़ारने के बाद उनका लगाव पहाड़ के सुन्दर दृश्यों में अटक कर रह गया हो। ऐसा प्रतीत होता था कि वो इस जगह को छोड़ते हुए दुःख मन में प्रतीत कर रहे हैं। गुरूदेव अपने सेवक की मोहग्रस्त अवस्था को भांप गये और आपने फरमाया।

गुरुदेव :- प्रेमी, पीछे मुड़मुड़ कर क्या देखते हो?

दास :- महाराज जी यह पहाड़ी दृश्य इतने सुन्दर और रमणीक है कि मन चाहता है कि बार-बार इनको देखता रहूं छोड़ने को मन नहीं चाहता।

गुरुदेव :- आवत हर्ष न होई, जावत सोग न मनाईये जी

ऐसी रहनी जब होवे, तब समता भाव लखाईये जी

मोह बंधन का कारण है। संसार की किसी वस्तु से मोह न लगाओ। मोह करके जो आसक्ति के भाव में मन सहज हो जाता है। इन्हीं करके न जाने कब और किसी वस्तु में इधर जाना पड़ जाए। इसलिए चित्त में किसी वस्तु की प्रीति न रखो। प्रीति ही जन्म मरण का कारण है। प्राप्त हो गया वाह वाह बिछड़ गया वाह वाह।

12 अगस्त 1944 को सुबह ही डोमेल से चलकर कोहाला होते हुए शाम को जलमादा पधारे और गांव से बाहर कुछ दूरी पर बने

स्थान पर डेरा लगाकर सत उपदेशों द्वारा उस इलाके की जनता को कृतार्थ करते रहे।

एक दिन दोपहर के समय जब दास आपकी सेवा में उपस्थित था। आप ने मौज में आकर फरमाया :

"शेरों के स्थान पर शेर ही जाकर ठहरा करते हैं। कभी ये जेहलम इस स्थान के पास ही बहता था। ऋषि लोग आपस में यहां तत्वज्ञान की बातें किया करते थे। जगह जगह तप के स्थान बने हुए थे। जगह जगह पानी के झरने थे। इसी वजह से इस का नाम जलमादा है। अब फिर वही सदियों के बाद देखने का मौका आया है।

यह विचार सुनकर दास ने प्रश्न किया।

प्रश्न: महाराज जी हम भी इसी तरह जन्म जन्मान्तर से शरीरों को धारण करते चले आ रहे हैं?

उत्तर:- प्रेमी यह लेखा अथाह है। कई जन्म मिले। फिर बिछड़े। बिछड़-बिछड़ कर लेखा पूरा करो ताकि छुटकारा मिले कमी रह जाती है तब ही संसार में बारबार आना जाना पड़ता है। जब जान लिया अपना आप सब फिर वेद, पुराण क्या जिस रास्ते पर चल रहे हो, चलते चलो अपने आप समझ आ जाएगी। यह कोई घोलकर पिलाने वाली चीज नहीं प्रभु आज्ञा से सेवा का मौका मिला है। सेवा और सिमरण रूपी पदारथ मिल जाए तो संसार में इस से दुर्लभ वस्तु और क्या है हर वक्त निगाह सतपुरुषों के जीवन पर रक्खो कि जिस तरीके वह गये है हमने भी वहीं जाना है। जिस आनन्द को हासिल करके यह सेहतयाब हुए है वह ही सेहत हमने पानी है। ऐसे सतभाव ही ऊपर उठाने वाले होते हैं।

"इतना फरमाने के बाद आपने मुझ से फरमाया, प्रेमी! दो घूंट पानी लाओ"

पानी मिलने पर आपने इस में से सिर्फ दो घूंट ही पिये और बाकी पानी दास के हवाले करते हुए फरमाया:-

"पी जाओ बुद्धि निर्मल हो मोह माया का चक्कर अथाह है। इससे बचना ही शूरवीरों का काम है। प्रेमी जतन करके ही जीव इस फन्दे से निकल सकता है।

27 अगस्त 1944 को इस कुटिया में एक विशाल सत्संग सम्मेलन हुआ। जिसमें हिन्दु, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई सब शामिल थे। उस समय आपने निम्नलिखित सत उपदेश देकर हाजर संगत को निहाल किया:-

जहालत, तासुब्ब, अज्ञानता, बादमुबाद तथा खुदगर्जी सब सत्संग में आकर ही खत्म हो सकते हैं जो खुशी और सुख एक्ता में है यह अलग-अलग होकर अपना राग अलापने में नहीं जितने भी महापुरुष, पीर, पैगम्बर, अवतार और गुरू इस संसार में आये और आते रहेंगे, सबका शरीर इन पाँच तत्वों का ही था। चाहे कोई मशरिक में हुए चाहे मगरिब में सबका सन्देश एक ही ढंग का था। सबने ख़ुदा की खलकत की खिदमत पर जोर दिया और एक ख़ुदा पर यकीन वासक रखना समझाया। मुलकों के अलग अलग स्वभाव और लिबास होने करके एक्ता यानी समता खत्म नहीं हो सकती। एक्ता को खत्म करने वाली खुदगर्जी है। जिस जगह खुदगर्जी ने जोर मारा यहां ही फसाद लड़ाई झगड़े शुरू हो गये। फानी दुनिया में जाकर हर एक इंसान ने अपनी आकबत का विचार करना है। किसी ने मसजिद में बैठ कर लिया तो किसी ने मन्दिर या गुरुद्वारे में। यह स्थान ख़ुदा की बन्दगी इबादत और नेक विचारों को विचारने के वास्ते बनाए गए हैं नाकि लड़ाई, फसाद की बातें सोचने के वास्ते। बार-बार इंसानी चोला नहीं मिला करता इसे वास्ते जहाँ तक हो सके, सादगी जो देवताओं का असूल है इसे धारण करना चाहिए।

सत्य, सच्चाई, खिदमत यानी सेवा और सत्संग यानी आपस में बैठकर ख़ुदा की बातें सोचना फिर जितना समय मिल सके यानी ख़ुदा की इबादत में गुजारना, यही भाव एकता पैदा करने वाले हैं। बाकी दुनिया की हवा इस समय खराब चल रही है। शायद फिर इस तरफ यह फकीर फिर न आ सके। इसलिए फकीरों के इन वचनों को याद रखना। आपस की मोहब्बत ही तुम सबको शांति प्रदान कर सकेगी। ईश्वर सबको अक्लेसलीम बख्शें।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

10 फरवरी 1946 तरनतारण

10 फरवरी 1946 को गुरुदेव तरनतारण शहर के बाहर एक बगीचे में विराजमान थे। एक दिन प्रातः जब स्नान करके आये तो निकट के एक पेड़ के नीचे धूप में बैठने के लिए गए। दास साथ थे। क्या देखा कि उस दिन कोई उस जगह मल त्याग कर गया था। दास ने इस बात का ध्यान न किया, जब आसन बिछाने लगे, तो गुरुदेव ने देख लिया और फरमाया! पहले इसे उठाकर फेंक आओ" मन में घृणा आई और विचार किया कि कोई टीन या कोई चीज लाकर इसे उठाकर फेंक आऊँगा। इतना सोचकर दास बेलचा लेने चला गया। गुरुदेव यह सब देख रहे थे मेरे जाने के बाद गुरूदेव न स्वयं उस मल को हाथों से उठाया और दूर जाकर फेंक दिया। जब मैं वापिस आया तो क्या देखा कि गुरुदेव हाथ धो रहे हैं, और मल वहां नहीं है। यह आश्चर्ज घटना देखकर मुझे शर्मिंदगी आई। खैर आसन लगाया गया। गुरुदेव उस पर विराजमान हुए और मझे फरमाया :

"प्रेमी! इस जगह कड़ाह प्रशाद या और कोई चीज रख जाता तो उसे उठाने के वास्ते बड़ी जल्दी इन हाथों से सेवा करता।

बेईमान, इस मल के उठाने में दस बातें सांची तू ने गुरु के वचन पर ध्यान न दिया। शायद यह ही कुछ और बन जाता जिस समय जिस बात के वास्ते आशा हो, फौरन पालन करो तुम्हारी बुद्धि का हर घड़ी इम्तहान लेते रहते हैं सेवा करते ये कभी ख्याल न करो, ये यह खराब है, यह अच्छी है। ये गरीब है। हर जीव की तन, मन, वचन, कर्म से सेवा करने के वास्ते हर घड़ी तैयार रहो। यह खोटी बुद्धि नहीं होनी चाहिए। अगर निर्मानता लाना चाहते हो तो अगर कोई कहे बर्तन साफ करो यहां लाओ, टट्टी (मल) फेंक आओ और भी इससे तुच्छ सेवा का समय आ जाए तो खुले चित से करो। मन में ग्लानि आ जाये तो समझो बेईमान है जबरदस्ती इस तरफ लगाओ मन को सेवा की कुछ सार का पता नहीं लगता। मन की मलिन को दूर करने के वास्ते केवल एक सेवा का मार्ग ही है। मन के रोगों से खुलासी पाने का वाहिद इलाज एक सेवा ही है। और अन्तर नाम सिमरण से अन्तःकरण शुद्ध होता है। इनके साथ रहना है तो सीधे होकर रहो।

घर फूंका जिन आपना, लिया चौहाता हाथ।

अब फूंकेंगे तिसका, जो चले हमारे साथ ।।

तुम और प्रेमियों की तरफ न देखा करो। यहां तो सेवा करके फिर हाथ जोड़ो और कहो कि बड़ी कृपा की, दया की जो इस दास को सेवा का मौका बख्शा है। उन सज्जनो द्वारा और चित्त प्रसन्न करो। इस तरह मन के अन्दर शील-सन्तोष, प्रेम, वैराग्य और राग पैदा होते हैं। सब शरीरों को अपना शरीर समझो जिस तरह अपने शरीर की गन्दगी साफ करते वक्त मन में ग्लानि नहीं आती, इसी तरह ऐसा मौका मिलने पर मन को कभी मत मोड़ो। अमली जीवन हर तरह से होना चाजिए। गुरू दरबार में जब भी सेवा सामने आए करते समय गुरु की सेवा समझो ये मत ख्याल करो कि दूसरे

आदमी की सेवा कर रहा हूँ। सबको अपने से उच्च और गुरु का रूप जानों। तब जाकर मन द्वारा हर एक की सेवा बन सकती है। अच्छा अब सुना, आगे तू किस तरह करेगा।

दास:- महाराज जी उठाने से इन्कारी तो न थी सिर्फ विचार यह आया कि किसी और चीज से उठाकर फेंक दिया जाये ताकि हाथ खराब न हो। जरा खराब चीज है।

गुरुदेव:- क्या हाथ गल जाने थे। कोई आग थी। अभी तो प्रेमी, ये तुम प्रेमियों का कोई इम्तहान ही नहीं ले रहे। ऐसा समय आ जाए तो तुम सब ही भाग जाओ।

दास:- (जरा हंस कर) महाराज जी, आप जब इम्तहान लेंगे बुद्धि भी ऐसी बख्शना ताकि रह न जाएँ। यहां तो अक्ल ऐसी ही है। पल-पल में भरम जाती है। बड़ी कृपा है जो चरणों में मूढ़मति को जगह बख्शी हुई है। जिस तरह भी बेअक्ली से जो कुछ बन पड़ता है, स्वीकार करें। इसी तरह आहिस्ता-आहिस्ता सूझ आती है।

गुरूदेव:- प्रेमी, इनके मुंह से निकले ही न। तुम खुद ही बात करने लग जाओ या करते जाओ। यह गुरमुखपना है। फिर कह कर सेवा करवानी माध्यम भाव है। जबरदस्ती सेवा करवानी इससे कम तमोगुणी है। वैसे सेवादार के अन्दर खुद बखुद ही प्रेरणा होती रहती है। अब ये इस तरह ऐसे करना चाहिए। किसी समय ही हुक्म द्वारा कारज करने पड़ने है। जिस समय किसी बात की समझ न आए तो पूछ लो हर समय इधर से तुम्हारे वासते दरबार खुला है। अच्छा, जाओ नहा कर चाय ले आओ।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

72- कुठाला जिला गुजरात में आगमन व सत्पुरूष का आदर्श जीवन

एक हफ्ता लाहौर ठहरकर और लाहौर निवासियों को सत् उपदेश अमृत से निहाल करके आप 7 मार्च 1944 को कुटाला तशरीफ ले आए। आप अभी लाहौर से रवाना नहीं हुए थे कि एक पार्सल प्रेमी हरबंस लाल कोहाला निवासी ने भेजा। उसे खोलने पर उसमें एक चादर निकली। जब कुठाला आप पहुंचे तो प्रेमी को आपने निम्नलिखित शब्दों द्वारा पत्र लिखवाया।

ऐसी चादर दात करो, मैं ओढ़ूं नग्न शरीर ।

जन्म-जन्म का मिटे संदेसा, काल चक्कर तकसीर ।।

जत का ताना सत् का पेटा, मत धीर जोलाहा बनावे ।

प्रेम की नाली से बुनत करीजे, मन पवन की खींच लगावे ।।

बुने अति अत गाढ़ा कपड़ा, वैराग की ठोक लगाई।

नाम ब्योपारी कपड़ा लेवे, नित विरहा का माप कराई।।

कहन कथन विच आये नाही, जो कपड़ा चमक दिखाई।

तीन लोक में ढूंढत फिरी, कोई बिरला मूल चुकाई ।।

हर जन साजन कपड़ा लेवे, त्रिवेनी घाट में धोवे।

तीन ताप की मैल को हरे, नित सत् यत्न परोवे।।

सतगुरू दरजी सीवे चादर, सुरत निरत दोऊ पाट मिलाई।

विवेक की सुई ध्यान का धागा, तप योग धारे कठिनाई ।।

निर्वान शब्द की अखंड चादर, कोई गुरुमुख साजन ओढ़ें।

"मंगत" तिस के चरण कंवल में, नित-नित प्रीति जोड़े ।।

यह पत्र लिखवाने के बाद आपने वह चादर दास को दे दी और आशा की कि प्रेमी हरबंस लाल को लिख दो कि आईंदा इस तरह

पार्सल न किया करे भेंट हाजिर होकर ही करनी चाहिये।

कुठाला आपने राय बहादुर लाला किदारनाथ जी के बाग में ही कोठी के ऊपर वाली छत पर निवास किया। इसी तरह एक बार आप शुभ स्थान से कोई बारह चौदह मील के फासले पर किसी गांव में तशरीफ ले गए हुए थे कि पीछे दो प्रेमी बाहर से दर्शनों के लिए आ गए। पहुंचने पर जब उन्हें पता लगा कि श्री सतगुरु देव जी स्थान पर नहीं है तो उन्होंने श्री महाराज जी को बुलाने के लिए गांव से आदमी भेज दिया और खुद उस गांव तक जाने की तकलीफ गवारा न की। जब पैगाम लेकर सतपुरुष के चरणों में शुभ स्थान वासी पहुंचा तो शाम हो चुकी थी। संदेशा मिलते ही आपने चलने की तैयारी कर ली। इन विचारों की सूचना मिलने पर आपने फरमाया-

“राम नाम को मिलने वाला कोई प्रेमी आए सही उसके वास्ते तो सिर के बल भी चलकर जाना बड़ी बात नहीं। यह आने वाले की नासमझी है। चाहिये तो यह था कि वह चलकर आते और यहां पहुंचते। खैर कलजुग ने सबकी बुद्धि कमजोर कर रखी है।"

आप रात के दो बजे वहां से पैदल रवाना हो लिए और सुबह आठ बजे शुभ स्थान पर पहुंच गए। जब आए हुए प्रेमियों को पता लगा कि श्री महाराज जी पैदल चलकर आए है तो उन्होंने बहुत दुख महसूस किया और हाथ जोड़कर माफी मांगी।

आपने फरमाया, "प्रेमी, जिस तरह तुम दुख महसूस कर रहे हो अब सेवा सिमरन करके प्रसन्न करो। बस माफी हो जावेगी। क्या अभी तुम बच्चे हो यह समझ नहीं आई कि खुद ही पैदल चलकर जाना चाहिये। चलो अच्छा हो गया अब पश्चाताप न करो आईंदा ख्याल रखो, किसी का भला हो जाये और अंधमति जीव राहे रास्ते पर आ जाए।"

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

सुखो मण्डी

दिसम्बर 1946 का वृतान्त है। श्री सदगुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज सुखो की मंडी में विराजमान थे वैसे तो सतपुरुष सिवाय दूध के वह भी चौबीस घण्टे में एक बार लिया जाता था। कभी कभी कोई प्रेमी सब्जी ले आता था तो अपनी मौज में एक नाम मात्र टुकड़ा ग्रहण कर लिया करते थे। एक दिन की बात है प्रेमी साईं दास मूलियां ले आए और आपके सामने रख दी। गुरुदेव सेवक के मन का भाव भाँप गये और फरमाया:-

गुरुदेव :- प्रेमी कल तुम पूछ कर लाये थे। ले ली गई थी। परन्तु आज तू सवेरे सवेरे किस की उखाड़ कर लाया है।

प्रेमी ने कहा : महाराज जी! जमींदार तो वहां नहीं था। वैसे ले आया हूँ पैसे बाद में दे दिए जायेंगे।

परन्तु गुरूदेव ने फरमाया- जाओ जाकर कीमत देके लाओ। अपने गुरु को भी इस तरह का माल खिलाते हो। तुम्हारा पुराना स्वभाव जाता ही नहीं।

प्रेमी इतना सुनकर मूलियाँ वापिस ले गया और जमींदार को पैसे देकर आया। जब फिर श्री गुरुदेव के चरणों में बैठा तो बड़े प्यार से गुरुदेव ने प्रेमी को कहा:-

प्रेमी इस प्रकार बगैर पूछे और बीना दाम दिए लाने में क्या फायदा। अगर जमींदार कुछ कह बैठता तो क्या इज्जत रहती। अगर वहाँ वह मौजूद न था तो इन्तजार कर लेते। बेशक तुम्हारा वाकिफ होगा। इधर से सहज भाव में ही मुँह से निकल गया कि सवेरे-सवेरे किस की उखाड़ कर लाया है।"

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

कितना सुन्दर उदाहरण यह हक शनाशी का है।

30-12-46 को सुखो मण्डी से चलकर तरनतारन पहुँचे। आमों के बाग में एक तम्बू में विराजमान हुए सर्दी उन दिनों जोरों पर थी। दिन तो धूप में गुज़रा। रात जब आराम करने लगे तो आपको ख्याल आया अपने सेवक का शायद उसको सर्दी लगेगी तो आपने भगत जी से फरमाया:-

गुरुदेव :- प्रेमी लोई में सर्दी तो नहीं लगेगी। साथ ही अपने आसन के नीचे से लोई निकाल कर दास की तरफ फेंक दी।

दास :- महाराज जी! और चादर वगैरह साथ जोड़ लूँगा।

गुरूदेव :- प्रेमी! फकीरों की दी हुई चीज को वापिस नहीं करना चाहिए। प्रेमी गुजरात में एक फकीर के पास एक समय औरंगजेब और उसके भाई दाराशिकोह को ज्यारत करने का मौका मिला। फकीर ने एक चिटाई अपने नीचे वाली को निकाल कर आगे फेंक दिया। इशारा किया बैठ जाओ दारा ने उसपर बैठना गुनाह समझा। औरंगजेब ने झट ही चटाई उठाकर अपने नीचे बिछा ली । फकीर! हँसने लगा। हंसी के बारे में पूछा गया। फरमाया- इसके लिए तख्तशाही फेंका गया था मगर तुम स्याने निकले। मुतबर्रक (पवित्र) जानकर और दात समझकर बैठ गए हो। खुदा के घर में बादशाही मंजूर हो गई है।

प्रेमी इंकार कभी न किया करो। इधर नीचे एक लोई है। दो ऊपर है। एक सिरहाना है और तुम क्या चाहते हो । आधी घड़ी के बाद फिर उठ बैठना ही है। तुम आराम करो।

यह घटना कालागुजराँ (जिला जेहलम) की है। एक दिन आप

बैठे हुए नाखून उतार रहे थे कि अचानक चाकू लग गया और खून बहने लगा। फौरन दास को आवाज दी फरमाया :-

प्रेमी कोई कपड़ा लाकर इसे बाँध दे मैं इधर उधर कपड़ा तलाश करने लगा और सोचने लगा कि किस कपड़े से टाकी फाड़ी जाय। इसी दौरान पास बैठे एक दूसरे प्रेमी ने अपनी पगड़ी उतार कर फाड़ कर टाकी दे दी। जब वह कटी हुई जगह को बाँध चुका तो आप ने फरमाया- वाह तेरी बुद्धि पता नहीं कहाँ चली गई थी। ऐसे मौकों पर क्या सोचने का समाँ होता है। अब इस एक एक तन्द का हिसाब देना पड़ेगा।

दास:- महाराज जी, कैसे?

गुरुदेव :- जिस तरह एक बार सती द्रोपदी ने भगवान कृष्ण की उंगली कट जाने पर एक दम अपनी कीमती साड़ी फाडकर पेश कर दी थी। उसकी सेवा को देखकर कृष्ण ने खुश होकर फरमाया था। यह कर्जा किसी समय अदा कर दिया जायेगा। समय आने पर एक एक तन्द के बदले में कितने थान गुप्तरूप में प्रगट कर दिए। जब दुशासन साड़ी उतारते थक गया था। अन्त में सती के तपोबल से घबरा गया और शरमिन्दा हुआ। प्रेमी ऐसे समय में फकीरों की सेवा मे तन मन लगा देना ही अकल मन्दी होती है। तेरा क्या था जो सोच में पड़ गया था।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

श्रीनगर में निवास के समय श्री महाराज जी का तत्र कपड़ों के सम्बन्ध में विचार :-

इन दिनों में श्री महाराज जी बाहर तो तशरीफ नहीं ले जा सकते थे, बरामदे में ही टहल लिया करते थे। सर्दी बहुत हो जाने की

वजह से दास ने श्री महाराज जी से कुर्ते के नीचे स्वेटर पहनने की प्रार्थना की । बड़ी मिन्नतें करने के बाद आपने पहन तो लिया, मगर रात को तीन बजे मुझे आवाज दी, "बनारसी - बनारसी उठो।" और फरमाया, "पहले इसे उतारो जिस तरह डाला है। निकम्मी ज़हमत है। इतने तंग कपड़े किस तरह पहनते हो कितना वक्त जाया किया है जो कुछ किसी ने कहा गले में डाल लिया। बेचारे कश्मीरियों ने कब स्वेटर पहन रखे है। खुला कुर्ता ऊपर लोई आराम दे लिबास है। तंग कपड़े कभी भी प्रयोग नहीं करने चाहिए। एक तो फटते जल्दी है, दूसरे उठते-बैठते लेटते और साँस लेने में तकलीफ होती है। ऐसा कपड़ा पहनो जो कुदरती हवा जिस्म से गुजरती रहे। इसे ले जाओ तुम्हारी खुशी पूरी हो गई।"

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

होडल मण्डी - दिसम्बर 1951 भगत जी से वार्ता

एक दिन एक मुसलमान प्रेमी ने मुहम्मद साहिब के बारे में कुछ विचार विनिमय किया। उसके जाने के बाद एक प्रेमी ने मुहम्मद साहिब की शादियों के बारे में एतराज उठाया, उसका निर्णय तो गुरुदेव ने कर दिया। मगर रात को जब दास चरण सेवा कर रहे थे तो फरमाया-

गुरुदेव :- प्रेमी, मलिक को किसी समय क्या हो जाता है। वोह नया प्रेमी नये विचार लेकर आया था। उकसा चित्त प्रसन्न करने के लिए हालात ब्यान कर रहे थे। वोह भी समझे कि मुसलमानी धर्म की और पैगम्बरों के जीवन से वाकिफ है मुहम्मद साहिब जैसा परहेजगार कोई नहीं हो सकता। उसकी सच्चाई, सफाई के पाक-यकीन को देखकर लाखों लोग उस के मुरीद जीवन में ही हो गए थे। मामूली इन्सान न था । वाकयी पैगम्बर कहलाने का हकदार था। इतने उजाड़

इलाके में एक ख़ुदा की हस्ती को मनवाना कोई छोटा काम न था।

प्रेमी इब्राहीम का तरज़े गुफ्तगू का तरीका देखा किस कदर अदब से ये लोग अपने बड़ों का नाम लेते है और पीर मुर्शीद की इज्जत करते है। जब तक बैठा रहा दो रानों होकर पीछे बैठा रहा। बैठने का बोलने का आज़जी भरा तरीका है। ये लोग जब किसी भी फकीर, पीर के सामने जाते हैं, मोम हो जाते हैं। हिन्दू धर्म बहुत पुरानी सभ्यता है। क्या इसके अन्दर चोर, डाकू, बुरे काम करने वाले नहीं। सब मजहबों में अच्छे बुरे विचारों के लोग हो जाते हैं। सब का मालिक प्रभु आप ही है। इतने दिन मुकन्दलाल को इस जगह रहते हुए हो गए है- चार आदमियों को हम ख्याल नहीं बना सके। इब्राहिम को पता नहीं किस तरह रंग लग गया है। इस जगह प्रभु का प्यारा कोई न कोई मिल जाता है।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

“काहनूवान में एकान्तवास तथा डा० रोशन लाल से भेंट वार्ता"

इस जगह निवास के दौरान एक दिन डाक्टर रोशन लाल जी ने अर्ज की, "महाराज जी, जब हम पाकिस्तान से आए थे और कादियां में रिहायश इखतियार की थी, एक रात मुझे श्री गुरु नानक जी के साक्षात दर्शन शरीरक रूप में हुए उस समय दिव्य प्रकाश को नमस्कार किया और प्रार्थना की, "आपकी बड़ी कृपा है जो दर्शन दिए है।" वह बोले, "ज़लज़ला आने वाला है" अर्ज की, मेहर करो उस घड़ी स्वप्न में क्या देखता हूँ: बहुत जोर की आंधी आई। उन्होंने उंगली से इशारा किया, देखो ज़लज़ला आने वाला है। उसी इशारा के साथ ही एक शरारा (शोला) निकला। वह प्रकाश शरारा आकर उस जगह गिरा जहां आपके चरणों की भेंट हुई है। इस हालत के डेढ़ माह बाद आप आए है और इसी कोठी में आप आकर विराजमान हुए

है। आप उनका ही अवतार है। हम पर कृपा करने के वास्ते ही आए है। दास को आपने पहले ही चेतावनी द्वारा सूचित कर दिया। महाराज जी इसके बारे में आप बतायें कि इसमें क्या भेद है?

श्री महाराज जी - प्रेमी, यह तुम्हारा अपना ही सत् विश्वास है। संत जिज्ञासुओं को ढूंढते रहते है। जिस तरह कबीर ने धर्मदास आदि, नानक ने लहना को इसी तरह यह भी खोज कर रहे है। मगर अभी तक-

ऐसा कोई न मिला जिस लगा कलेजे बान

प्रेमी सब चाहते है महाराज कृपा कर देवें। हाथ पांव न हिलाना पड़े। इन्होंने तो सही खोज में लगा दिया है।

जत्न में ही रत्न है जो खोजे सो पावै।

लागी चोट शब्द की वन में गृह नहीं चैन, चैन नहीं बन में।।

जब जीव के अंदर किसी पदार्थ की प्राप्ति की ख्वाहिश उठती है चाहे वह हिमालय की चोटी पर हो वहां से मरते-मरते उतार लावेगा। जिनके अंदर संसार असली मायनों में असार नजर आने लगता है और सच्ची खुशी के वास्ते चाह पैदा होती है उनको न घर में आराम न जंगल में चैन, जब बुद्ध की तरह निर्वाण अवस्था को प्राप्त नहीं कर लेते।

प्रेमी डाक्टर रोशन लाल - महाराज जी, कैसे विचार सत्संग का किया जाये?

श्री महाराज जी प्रेम में आकर -

ऐसा ज्ञान विचारे कोई, सो नर जीवन मुक्ता होई।

बोलन हार कहां से हुआ, कैसे उपजा कैसे मुआ।

पवन की गांठ सहज बन आई, ताँ सों मंगला बनया भाई।

खुल गई गांठ खोज नहीं पाया, पवन का पुतला पवन समाया।

जैसे बादल होत आकारा, तैसे दरसें यह संसारा।

मिट गऐ बादल रहा अकाशा, ऐसे आत्म को नहीं विनासा।

इस बहुरंगी का पार नहीं पाया, कहे कबीर गुरू भेद सिखाया।

प्रेमी, गुरू गोसाई मिलें तब ही सत् का भेद लखायें। बिना गुठ के तरीके का विचार नहीं मिलता। बिना विचार के ज्ञान नहीं होता। जिस तरह संसार की भक्ति यानि प्राप्ति कठिन है। उसी तरह सत् की धारा पर चलना भी कठिन है।

चलो चलो सब कोई कहे, बिरला पहुंचे कोए।

जां को सत्गुरू साथ मिलें, तां घट सोझी होए।।

तरीका पाकर भी बड़ी भारी मेहनत की जरूरत है। तुमको अभी उस तरफ की क्या पड़ी है। तुमने अभी संसार को देखना है। प्रेमी, यह आशिकों का मार्ग ही अलग है और संसारियों का अलग|

गृही हो तो भक्ति कर, ना तो कर बैराग।

बैरागी बंधन पडे, तां को बड़ा अभाग।

तब लग जोगी जगत गुरू, जब लग है निरास।

जब जोगी आशा करे, तो जग गुरू जोगी दास।

बाहोश होकर बुद्धि खोलकर सुनाकर। भाई का कड़ाह नहीं जल्दी मुंह में डाल लोगे। सत्संग में आया करो। इस तरह शौक बंधा करता है।

साध बड़े परमाथी, धन जीवों के आए।

तपन बुझायें और की, अन्यो पारस लाए।

नदिया बहती जात है, उठ धोइयो शताबी हाथ।

न जाने किस पलक में, नाथ से होवें अनाथ।

प्रेमी किसी के होके चलोगे तब कुछ न कुछ पा लोगे। मनमति जीव लोक परलोक दोनों के सुखों से महरूम (वंचित) रहता है।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

अभ्यास कुर्सी पर नहीं, धरती पर बैठकर करना चाहिए (जून 1950)

एक दिन रात को देर से सोने के कारण दास बाहर से आते ही कुर्सी पर बैठकर रसोई में अभ्यास करने लगे। अभ्यास क्या था, मुझे नींद आ गई। उधर गुरूदेव ने देखा कि में सो कर नहीं उठा तो वोह स्वयं रसोई में आ गए। आगे दास को कुर्सी पर बैठे पाया, तो आवाज दी बनारसी दास की नींद खुली गुरुदेव ने फरमाया-

प्रेमी, कुर्सी पर बैठकर कभी अभ्यास होता है। ये अक्ल तुझे कहां से आई है। खबरदार, आइंदा कुर्सी पर बैठकर या चारपाई पर या बहुत नरम गद्दे पर सिरहाने वगैरा लगाकर मत अभ्यास करें। आलस और निन्द्रा एक दम ऐसे आसन पैदा कर देते हैं। अव्वल तो धरती एक कुद्रती आसन है। उस पर कोई आसन बिछा कर बिना टेक के बैठना चाहिए। या तख्तपोश हो तो और बात है। बाबे वाली कुर्सी पर बैठकर अभ्यास करना अब सीखा है। रसोई में कुर्सी का क्या काम।

दास :- महाराज जी, यह रसोई ही ऐसी है मेज पर बैठकर रोटी बनानी पड़ती है। चूल्हा बहुत ऊंचा होने के कारण मेज रख दिया है। साथ कुर्सी भी लाजमी है।

गुरूदेव :- प्रेमी, नये से नया सांग संसारी बनाते रहते हैं। चल जा दूध पहले ले आ। फिर स्नान करेंगे आज जल्दी फारिग हो, क्योंकि इतवार है। प्रेमी जल्दी आना शुरू कर देंगे।

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

"जंगल फैलों से वापसी व मुसलमान भाईयों से भेंट"

24 असाढ़ 2001 आप तीन बजे बाद दोपहर जंगल से संगत के साथ पैदल ही नीचे की तरफ चल पड़े। प्रस्थान करने से पहले आसपास के रहने वाले मुसलमान भाई भी ज़्यारत के लिए हाज़िर हुए और उनमें से एक ने अर्ज की पीर जी, हम पर मेहर कर जाओं। हमारी गाय, भैंस, माल डंगर कभी-कभी दूध देना बंद कर देते है, रोड़ा यानि पांव उगल जाते हैं, मुंह से राले छोड़ते हैं। यह बीमारी तंग करती है। इस वास्ते दुआ कर जायें।"

वैसे तो आप रिद्धि सिद्धि के हक में न थे, लेकिन लोगों की तमन्ना और प्रेम को देखकर और दूध वगैरह की जो सेवा उन्होंने की हुई थी इसको ध्यान में रखते हुए आपने थोड़ी देर खामोश रहकर उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और फरमाया :-

"एक बड़े पत्थर पर जल गिरवाकर संगत से महामंत्र उच्चारण करवाया और उन्हें कहा कि इस पर दूध डालकर मालिक से खैर मांगा करो। खुदा शफा (दया) बख्शने वाला है।" इसके बाद प्रेमियों से फरमाया:

"देखा लोग स्वार्थ की भक्ति के कितने चाहक हैं। वैसे इनका अपना यकीन ही इनको फायदा देगा। स्वभाव से हर एक जीव स्वार्थ की पूर्ति के लिए यत्न, प्रयत्न कर रहा है। कोई ही विरला दिल की अबदी राहत(स्थायी शांति) के वास्ते कोशिश करता है। सिर्फ आशिक ही इसको पाने की कोशिश करते हैं।"

संस्मरण (भक्त बनारसीदास जी द्वारा)

सत्पुरुष महात्मा मंगतराम जी की महाराजा काश्मीर से देश के विभाजन के समय भेंटवार्ता व सत्पुरूष की सादगी का अदभुत आदर्श

टांगा शाम के छः बजे के करीब जम्मू पहुंचा और श्री महाराज जी सीधे प्रेमी कश्मीर चंद के मकान पर गए और वहां आसन लगाया। जब आराम से बैठे तो पूछा गया, "महाराज जी यह क्या बनने लगा है?"

श्री महाराज ने उत्तर दिया, "अब फिकर वाली बात नहीं रही। वक्त पर महाराजा हिन्दुस्तान से मिल गया है। पता नहीं किसने महाराजा को अक्ल दी है। अब हिन्दुस्तान जाने, उसका काम जाने। उसने बहुत देर लगा दी है। घबराने से वक्त नहीं निकलता। मालिक पर विश्वास रखो।"

जम्मू पधारे एक हफ्ता ही हुआ था कि महाराजा हरी सिंह को भी श्री महाराज जी के जम्मू में निवास की खबर पहुंच गई। महाराजा के संबंधी ठाकुर नचिंत चंद और ज़फर सिंह जी सत्संग में हाज़िर होने लगे। एक दिन दोनों ने अर्ज की कि महाराज जी आप इस समय महाराजा हरीसिंह पर दया करें। यह बहुत घबराया हुआ है। इसे हौसला बंधायें, ऋषि मुनि हमेशा ऐसे मौकों पर ही राजाओं महाराजों को नसीहत करते आये है।

श्री महाराज जी ने फरमाया, "प्रेमियों वक्त बहुत बीत जाने पर आये हो। अब क्या नसीहत करनी है। पहले तो वह किसी की सुनता न था। श्रीनगर में वज़ीर वज़ारात तेज राम ने भी कोशिश की थी महाराजा तक उनका पैगाम पहुंचाने की मगर उसने सुनी ही नहीं, इसलिए अब क्या हो सकता है।"

उसी रात को फिर ठाकुर ज़फर सिंह और ठाकुर नचिंत राम जी ने आकर प्रार्थना की, "महाराज जी महारानी साहिबा ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की है कि आप जरूर दर्शन देने की कृपा करें।"

श्री महाराज जी ने थोड़ी देर खामोश रहने के बाद फरमाया, "अच्छा, कल रात उधर आने का प्रोग्राम रखो मगर शर्त यह है कि राज्य गृह का एक तो कुछ ग्रहण नहीं किया जावेगा, इसलिए उस समय मजबूरी न की जाये। दूसरे सिवाये सफेद चादर के जमीन पर कोई दरी कालीन वगैरा न बिछाया जाये नीचे जमीन पर ही सबको बैठना होगा। वहां पहुंचने पर या रवानगी पर किसी वक्त कोई भेंट वगैरा रखने की कोशिश न की जाये।"

प्रोग्राम निश्चित हो गया सब शर्तें मान ली गई। आपने उस समय भी सादगी का उपदेश देकर एक आदर्श कायम किया। आप वस्त्र 21 दिन के बाद बदला करते थे। जब दूसरे दिन रवाना होने लगे तो दास ने वस्त्र तबदील करने की अर्ज की। मगर श्री महाराज जी ने फरमाया, "बेईमान, वस्त्र की तबदीली से क्या होगा?"

दास ने अर्ज की कि महाराज जी आप महाराजा साहब के पास जा रहे हैं यह कहेंगे आपका वस्त्र भी साफ करने वाला कोई नहीं।

श्री महाराज जी ने मुस्कराते हुए कहा, "फकीर तो गुदडियों में जाया करते हैं। यह वस्त्र तो अभी बड़े साफ है। सफेद कपड़े तो उसे हौसला नहीं देंगे। फकीरों के वचन ही ढाढ़स देने वाले हुआ करते है।"

शाम निश्चित प्रोग्राम अनुसार आप महाराजा के महल में तशरीफ ले गए। लगभग एक घंटा वहां रहे। जब कार में बैठकर वापिस आ रहे थे तो दूसरी तरफ महारानी साहिबा ने कार रोक कर नमस्कार करते हुए हाथ जोड़कर अर्ज की, "महाराज जी, आपने

बड़ी दयालुता की है कि इस कदर पवित्र वचनों द्वारा हौसला बंधाया है।"

श्री महाराज जी ने फरमाया, "अब आपको कोई फिक्र नहीं करनी चाहिए। हिन्दुस्तान की इज्जत रियासत के बचाव में है। वहां के लीडर बड़े समझदार है सब कुछ इस कश्मीर के वास्ते कुरबान कर देंगे। इस समय आप सिर्फ उनकी हां में हां मिलाते रहे। इस पर महाराजा साहब ने रियासत छोड़ने का ख्याल तर्क (छोड़) कर दिया है। फिक्र न करो ईश्वर को याद करो प्रभु आप सबको धीरज देवें।"

जब वापस आकर आसन पर पधारे तो प्रेमी कश्मीर चंद ने पूछा कि महाराज जी महाराजा साहब से क्या बातचीत हुई। इस पर हज़ूर ने जबाव में फरमाया, "वाकई महाराजा बहुत घबराया हुआ था। राजों का यह हाल है। रियासत छोड़ने को कह रहा था। बहुत तरह समझाया गया कि अब इस तरह छोड़कर चले जाने से बहुत बेईज्जती होगी । अब गांधी, नेहरू, पटेल वगैरा के कहने के मुताबिक चलो। शेख अब्दुल्ला के साथ अच्छी तरह बरतो । फिर जब जरा अमन-अमान हो जाये फिर जैसा मुनासिब समझो कदम उठाओ।"

"दरअसल वज़ीर व अफसरान वगैरा उसे गलत हालात पहुंचाते रहे थे। वह विचार क्या करता अब लाचार हो रहा है। हिन्दुस्तान से पहले मिल जाता तो बहुत इज्जत आराम से रहता और मान भी बना रहता। शुक्र है अब्दुल्ला इस वक्त दिल व जान से कांग्रेस का साथ दे रहा है वरना दो दिन में श्रीनगर में हालात खराब हो जाते। बेसहारों का मालिक कोई न कोई सहारा बना ही देता है। जब राज सत्त बिगड़ जाती है तब सबको अपना-अपना दाव लगाने का मौका मिल जाता है।"

संस्मरण (बाबू अमोलकराम द्वारा)

"सराय सालहा में सत्पुरूष का तप व

पीर सैयद रिंदशाह दरवेश से भेंट"

सराये सालहा शहर से कुछ फासले पर नाला दौड़ के करीब नहर के किनारे एक छोटा सा मंदिर था। इससे ऊपर पेड़ों का एक जंगल सा था, उसमें दो तीन कुटियां बनवा दी गई थीं। यह चटाइयों की ही बनी हुई थी। यहां श्री महाराज जी को ठहराया गया था।

इस जगह एक मुसलमान पीर सैयद रिंदशाह दरवेश थे। वह कई दफा दर्शनों के लिए आये जब भी आते कई किस्म के सवाल करके अपने दिल को तसल्ली देते और जब भी आते सजदा (नमस्कार) करते। सत्पुरूष ने पीर साहब को सजदा करने से मना किया, मगर वह न माने, बल्कि आपकी तारीफ के साथ-साथ अपनी भूतपूर्व हिस्ट्री भी खोलकर बयान कर दी और अर्ज की:

"मेरे पास ऐसे शब्द नहीं जिनके जरिये आपकी तारीफ कर सकूं। आप चौदह तबक के मालिक है। आपकी एक निगाह ही हमें बड़ी तसल्ली दे रही है। बेवकूफ लोग तास्सुब की वजह से आपकी पहचान नहीं कर सकते। आप जैसे ला मज़हब ही पैगम्बर होते हैं। हमारे मज़हब में यह शब्द कहना जाईज़ नहीं लेकिन यह कहे बगैर मै रुक नहीं सकता। यह आपका गुलाम अंग्रेज सरकार का खास बंदा है, जो काफी अर्से तक खुफिया महकमें में काम करता रहा है। हर मज़हब के अच्छे-अच्छे आदमियों से वास्ता रहा है। लड़ाईयां आपस में कारवाईं। फूट डलवानी हमारा काम रहा है। नेक बंदा दरअसल कहीं देखने में नहीं आया। काबुल, कंधार, कश्मीर, गिलगित जिला हज़ारा यह सब इलाका मेरे ही हल्के में था। कोई ऐसा काम नहीं, अच्छा या बुरा, जो हमने नहीं किया। तबियत को चैन अब आपको देखकर

आया है। वली अल्लाह लोगों से दुनिया खाली नहीं है, अब यकीन हुआ है। मेरे लिए जो हुक्म हो करने को तैयार हूं। अगर हुक्म हो तो हिन्दू बन जाऊं।"

पीर साहब के विचार सुनकर आपने फरमाया, "हिन्दू, मुसलमान मत बनों सही इंसान बनो। मज़हब की तबदीली में हकीकी खुशी नहीं है। दिल को राहत हर एक रूह को सुख देने से मिलती है। आराम चाहते हो तो दूसरों को आराम दो। तास्सुब छोड़ दो। जिस तरह वली अल्लाह हस्तियों ने दिल की तसकीन हासिल की है। वह ही तरीका इख्तियार करो। आहिस्ता-आहिस्ता रंग लग जावेगा। खुदा आपको अक्ले सलीम बख्शे।

संस्मरण (बाबू अमोलकराम द्वारा)

बाबू अमोलकराम की यह आँखों देखी घटना है। जब वह शुभ स्थान गंगोठिया में पधारे हुए थे।

उन दिनों में गुरूदेव मामूली सा अन्न खाते थे। आप जब पीर ख्वाजा जंगल से वापस आये और भोजन तैयार हो गया तो आपकी भाभी भाग ने, जो उन दिनों में आपका भोजन पकाया करती थी, थाली में इसे परोस कर उस कमरे में रख दिया जहां बैठकर आप इसे ग्रहण किया करते थे और कहा कि उठकर भोजन खा लो। आपने जवाब में कहा कि ठहर जाओ। कुछ समय गुजर गया तो फिर उसने कहा कि रोटी ठंडी हो रही है उठकर खालो। आपने फिर ठहरने को कहा। इसके थोड़ी देर बाद एक साहब आ गये और प्रणाम करके बैठ गये। इस पर आपने उसे कहा कि रोटी पड़ी है खा लो। उसने जवाब दिया कि वह मन्दिर से खाना खाकर चला है। इस पर आपने उसे कहा कि वह आठ नौ मील चलकर आया है भूख लग गई होगी भोजन पा लेवें। मगर उसने जवाब दिया कि नहीं महाराज भूख

नहीं लगी है। तब आप उठे और कहा कि हम खा लेते है और जाकर भोजन खा लिया। जब खाना खा कर वापस आकर बैठे तो उस साहब, ने अर्ज की कि यह दवाई लेने आया है। इस पर आपने फरमाया कि अन्दर जाकर सन्दूकी से दवाई निकाल लेवे। वह दवाई ले आया और आपको दिखलाई। आपने फरमाया कि इसे ले जाओ। थोड़ी देर बाद यह दवाई लेकर वापस चला गया।

जब वह बोतल दवाई वाली लेकर चला गया तो दास ने आपसे पूछा कि महाराज जी, इसे क्या बीमारी है जिसकी दवाई वह लेने आया था? तो आपने फरमाया कि अर्सा हुआ यह रावलपिंडी गये थे और अपने बड़े भाई के घर पर ठहरे थे। पड़ोस में यह व्यक्ति सख्त बीमार पड़ा था। इनके वहां पहुंचने की सूचना मिलने पर उसके रिश्तेदारों ने उन्हें बुलाया। जाकर उसे देखा। उसके सारे जिस्म में पाक पड़ी हुई थी। दवाई बनाकर इस्तेमाल करवाई गई और उसे आराम आ गया। मगर उसने पूरी सावधानी नहीं की। इसलिए कभी-कभी फिर उस बीमारी का असर हो जाता है। फिर अर्ज की गई कि महाराज आपने सारी दवाई उसे दे दी है तो आपने फरमाया, उसे इसलिए सारी बोतल ले जाने के लिए कहा कि ताकि वह फिर न आवे।"

फिर अर्ज की कि महाराज जी, उसे नुस्खा बताने की कृपा कर देते ताकि अगर फिर जरूरत होती तो वह उसे खुद बना लेता। इस पर आपने फ़रमाया कि अगर वह नुस्खा बनायेगा तो अन्धा हो जायेगा इसलिए उसे नुस्खा नहीं बतलाया गया। इस वार्तालाप से दो बातें पता लगीं। एक तो सत्पुरुष सर्वज्ञाता होते हैं। उन्हें पता होता है कि कहां क्या हो रहा है। सतपुरुष जान गये थे कि वह व्यक्ति आ रहा है इसलिए खाने खाने में देरी की और उसका इन्तज़ार किया। दूसरे समर्थ होते हैं, जैसे कि इस किस्म की दवाईयां भी बना सकते हैं जिन्हें अगर कोई दूसरा व्यक्ति बनाये तो अन्धा हो जावे।

संस्मरण (बाबू अमोलक राम जी द्वारा)

"शुभ स्थान गंगोठिया में कप्तान यूसफ खाँ से भेंट वार्ता

भखड़ाल के कप्तान यूसुफ खां एक दिन श्री महाराज जी की सेवा में हाज़िर हुए। आप उस समय सत्संग हाल के बरामदा में बाबू जी के साथ बैठे हुए थे। कप्तान साहब मिलिट्री से थोड़ा अर्सा पहले ही पेंशन पर आए थे। उन्होंने निम्नलिखित प्रश्न आपसे पूछे :

कप्तान साहब - बुतपरस्ती के बारे में आपका क्या ख्याल है?

श्री महाराज जी - कप्तान साहब, दिन रात ही जिस्म के बनाव श्रंगार में लगे रहते हो या नहीं। क्या यह बुत परस्ती नहीं। अलबत्ता जिस हस्ती का बुत (मूर्ति) है अगर तू उसकी तालीम पर अमल करता जाता तो वहदत परस्ती (ईश्वर परायणता) वरना सब बुत परस्ती है।

कप्तान साहब - हज़रत, तकबीर के बारे में आपका क्या ख्याल है?

श्री महाराज जी - कप्तान साहब, कुरान शरीफ में यह दिया हुआ है कि नहीं कि ख्वाहिश और ग़ज़ब (क्रोध) से मुबर्रा (मुक्त) होकर तकबीर पढ़?

कप्तान साहब - जीहां, दिया हुआ है।

श्री महाराज जी - तो यह बताओं कि यह लोग जो गायों और बकरियों के गले पर छुरी चलाते हैं क्या यह ख्वाहिश और ग़ज़ब से मुबर्रा हैं?

कप्तान साहब - नहीं।

श्री महाराज जी तो बताओ यह क्या तकबीर हुई। तकबीर तो हज़रत अब्राहिम ने पढ़ी थी जिसने अपने लड़के के गले पर छुरी चलाई थी। वह ख्वाहिश और गज़ब से मुबर्रा थे।

कप्तान साहब - तनासख (पुनर्जन्म) के मुतालिक आपका क्या फरमान है।

श्री महाराज जी - कप्तान साहब, कुरान शरीफ में दिया हुआ है कि नहीं कि आकबत (प्रलय) के दिन रूहें उठेंगी और उनको उनके अहमाल (कर्म के मुताबिक दोज़ख (नर्क) या बहिश्त (स्वर्ग) मिलेगा?

कप्तान साहब - जी हां, दिया हुआ है।

श्री महाराज - एक शख्स (व्यक्ति) है जिसके अहमाल बहुत अच्छे हैं मगर जिस्म उसका खराब है। लूला लंगड़ा है, काना है और कई नुक्स हैं। उसे बहिश्त मिलेगा या नहीं?

कप्तान साहब - जी हां, मिलेगा।

श्री महाराज जी - अब बताओं किस जिस्म (शरीर) में मिलेगा। अगर वही जिस्म मिलता है तो उसे क्या बहिश्त मिला और अगर नया जिस्म मिलता है तो यही तनासख है।

संस्मरण (बाबू अमोलक राम जी द्वारा)

27 अगस्त 1946 को मिलखानवाला से चलकर आप कालागुजराँ पधारे। दिन के समय गाँव से बाहर एक सुन्दरस्थान बनी बाद्याँ जाकर दरखतों के नीचे विराजमान रहते। साँयकाल के समय वापिस गाँव में आते। एक दिन जब आप बनी बाद्याँ पर बेठे थे तो एक गाँव का चौधरी नम्बरदार आपके पास आया और फरमाया -

चौधरी - पीर जी यह खादिम आप के रोज़ाना दीदार करता है। जिस ज़मीन पर रात को आप बैठते हैं इसी गुलाम की ज़मीन है। आप हुक्म फरमायें। इसमें से बीघा दो बीघा में बैठने के लिए तकिया बना देवें और वहाँ ही क्याम फरमावें।

गुरूदेव : प्रेमी तेरी बड़ी मेहरबानी है जो तूने ऐसी पेशकश की है। खुदा तुम्हें यकीने पाक बख्शें जो कि इस कदर नेक ख्याल फकीरों के लिए बनाया है। फकीर तकियों के हक में नहीं। सारी दुनिया ही इनका तकिया है। फकीर एक जगह बनाकर बैठा नहीं करते। न किसी जगह की पाबन्दी में आने वाले हैं। हिन्दू मुसलमान सब ही इनके लिए एक जैसे हैं। किसी को किसी फरक की निगाह से नहीं देखते। ज़ाते आला सब में यकसाँ है। गो जिस्म के खाकी हैं। सब को दिल की राहत की जरूरत है। वह कलबी स्कून फकीरों के पास बैठने से मिलता है। उनकी अमली जिन्दगी सबकों खुशी देने वाली होती है। फकीरों की निगाह में हिन्दु मुसलमान को कोई फर्क नहीं। सब ही एक खुदा के बन्दे हैं। यह अलहदगी खुदगर्ज लोगों यानी भाई-मुल्लाँ डालते आये हैं। कमज़ोर अकल वाले उनके पीछे चलकर खुदा की हस्ती को भूल जाते हैं। न कोई बुरा है न अच्छा। फकीरों के लिऐ बादशाह, गदागर, गरीब, अमीर सब एक जैसे हैं। खुदा जाने यह तास्सुब बढ़ता हुआ क्या रंग लाता है।

नम्बरदार: पीर जी! आपकी खरी-खरी बातें दिल पर बड़ा गहरा असल कर रही हैं। फकीर किसी का लिहाज नहीं करते। आपकी दुआ ही आने वाली आफत से बचाये तो बचाये वरना हालात बहुत नाजुक होते जा रहे हैं।

गुरूदेव : प्रेमी तुम अपने दिल को साफ करो। सारी दुनिया ठीक नहीं हुआ करती ।

संस्मरण

"जंगल फैलाँ में एकान्त निवास के दौरान स्वामी प्रेम दयानंद जी तथा मुसलमान मौलवी से भेंट :

एक दिन एक विचारवान महात्मा स्वामी प्रेम दयानंद जी आपके

दर्शनों के लिए जंगल में पधारे। खाना वगैरह खाने के बाद स्वामी जी ने आपसे अर्ज की, "महाराज जी, इधर ठहरने में आपको एतराज़ तो नहीं होगा"

महाराज जी- नहीं, खुशी से ठहरो। हां, आपकी सेवा शायद इस जगह ठीक तरह न बन सके। बाकी नशे वगैरह तो आप करते ही न होंगे। अगर नहीं, तो ठहर सकते हैं।

स्वामी जी- रोटी दो तीन फुलके का देन लगा हुआ है। फरमायें तो पत्ते पर भी गुजारा चल सकता है। जंगल में इस वास्ते आये हैं एक तो आपके चरणों में ठहरकर कुछ प्राप्त होगा दूसरे गीता उर्दू शेरों में लिखनी है। बाकी हमारा जीवन अनुभवी नहीं इलमी (किताबी ज्ञान) है। आगे जैसे आपकी आज्ञा।

महाराज जी- (कुछ ठहर के देख लो, इधर कोई एतराज़ नहीं।

एक दिन एक मुसलमान मौलवी भी आपके दर्शन करने आये। शाम को लंगर के समय सबको इकट्ठा लंगर दिया गया। दूसरे प्रेमियों ने इस बात को बुरा मनाया कि एक मुसलमान को हमारे साथ ही खाना इन्हीं वर्तनों में खिलाया गया है। उनमें से एक प्रेमी ने महाराज जी से प्रश्न किया।

प्रश्न - महाराज जी, यह तरीका ठीक नहीं। उन्हीं बर्तनों में यह लोग खायें और हम भी।

महाराज जी - प्रेमी, फकीरों के दरबार में अलेहदगी नहीं हो सकती। इस जगह सब एक ही हैं। यह तुम्हारे अपने मामले हैं। घरों में जैसे मर्जी हो करो। यहां भी अलेहदापन होने लगा तो आपस में प्रेम कैसे बढ़ेगा। एक थाल में न खाओ अलग-अलग खाने में तुमको क्या होता है। क्या तुमने इनको नीच समझा हुआ है। ऐसी तुम्हारी तंग

ख्याली ने कहां तक नौबत पहुंचाई है। अपना ऐसा विशाल विचार बनाओं कि यह तुम्हारे में ही जज्ब (लय) हो जायें। खैर अब तो सूरत ही और बन रही है। ईश्वर ही मालिक है।

आपके सत् उपदेश किसी खास मज़हब या फिरका के लिए नहीं हुआ करते थे और न ही आपके दरबार में किसी किस्म की पाबंदी थी । आपका दरबार बिना मज़हबी भेदभाव के हर एक प्राणी के लिए खुला था। आपने करीबन दो माह इस जंगल में निवास किया।

संस्मरण (श्री नन्दलाल जी द्वारा)

यह घटना उस समय की है जब दोबारा श्री महाराज जी उनके घर पर पधारे थे।

शुभ स्थान गंगोठिया के पश्चात् श्री गुरू महाराज जी रावलपिण्डी पधारे। दास को उनको अपने घर पर ठहराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तकरीबन सारा दिन संगत आती रहती थी। सुबह 10 बजे के करीब फरमान अली सब्जी लेकर मेरे घर पर आया और सब्जी देकर श्री महाराज जी के पास सत्संग में बैठ गया। उस समय वहाँ पर कर्म फिलास्फी के विषय में चर्चा चल रही थी। अनजाने या जाने में जो भी कर्म मनुष्य से हो जाता है उसका नतीजा इस जन्म में या अगले जन्म में अवश्य भोगना पड़ता है। यह प्रकृति का अटल नियम है। खासकर करूर कर्म अन्त समय याद आते है और अन्त में जिस याद में शरीर छोड़ता है वैसी ही इसको योनी प्राप्त होती है।

फरमान अली ने श्री महाराज जी से कहा "साईं जी! अगर अजाज़त हो तो कुछ अरज करूँ।"

श्री महाराज ने कहा! "कहो प्रेमी क्या कहना है।"

फरमान अली ने कहा! "वैसे तो मैं मुसलमान हूँ। पुनर्जन्म को

हम नहीं मानते। मगर सत्संग में साँई जी आपके विचार सुनकर एक सच्चा किस्सा याद आ गया जो सब मैंने अपनी आँखों से देखा है।

“हमारे गाँव में एक हाज़ी साहिब से दो बार हज कर चुके थे। गरीबों यतीमों व अनाथों की मदद किया करते थे। बच्चों को मिठाईयाँ बाँटते रहते थे। हर साल एक छोटा सा भण्डारा करते थे। सारा गाँव उनकी इज्जत करता था। जब कभी हाजी साहिब बाजार में आते तो लोग उठकर उनको सलाम करते थे। काफी उमर के थे। थोड़े बीमार हुए। कई बार बेहोश हो जाते और कहते मुझे बचाओ, मुझे बचाओ मुझे खच्चरें काट रही है। एक दिन यह होश में थे तो मैने (फरमान अली) पूछा। हाजी साहिब अगर आप गुस्ताखी माफ करें तो यह बताने की मेहरबानी करें कि बेहोशी में आप मुझे बचाओ, मुझे बचाओ क्यों कहते हैं। आपको क्या नजर आता है। हाजी साहिब रो पड़े और कहा "तमाम मोहल्ले के लोगों को बुलाओ, मैं अपना गुनाह ब्यान करना चाहता हूँ ताकि मेरे दिल को तसकीन मिले और आराम से मैं जहान से कूच कर सकूं।" जो बात उनके दिल में भी लोगों के आ जाने पर कहनी शुरू की। उन्होंने फरमाया, जवानी में मिलट्री में था। अंग्रेजो का राज्य था मिलट्री मे घोड़े और खच्चरों को राशन देना होता था जो कि मुकर्र था। काफी अरसे बाद मुझे ख्यात आया कि स्टोरकीपर से मिलकर अगर कुछ राशन कम कर दिया जाये तो इन जानवरों को खास फर्क नहीं पड़ेगा। इस प्रकार मैने और स्टोरकीपर ने बेजबानों का पेट काटकर लाखों रुपये कमाये। उन रुपयों से गाँव में काफी जमीन खरीदी। मन में डर तो था ही कि कहीं भेद न खुल जाये। इसी डर से नौकरी से इस्तीफा दे दिया। फिर भी मन में डर बना रहा। दोबारा हज्ज पर गया। बच्चों को मिठाईयां बाँटी । गरीबों यतीमों व अनाथ औरतों की मदद की। लोगों ने इस कारण मेरी इज़्ज़त की। मुझे हाजी समझा। मैंने अपना गुनाह .

दिल में छुपाए रखा। अब मौत मेरे सामने है। जब बेहोश हो जाता हूँ तो यह घोड़े और खच्चर मुझे काटते हैं। और बड़ा दुःखी होता हूँ।

इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया। यह बात बिल्कुल ठीक है। कोई भी आदमी पाप करके लोगों से छुपा सकता है लेकिन खुद अपने से नहीं छुपा सकता। अन्दर मौजूद खुदा सब कुछ जानता है। हर व्यक्ति को अपना किया हुआ अच्छा या बुरा काम का फल जरूरी भोगना पड़ता है।

संस्मरण (श्री नन्दलाल बिन्द्रा, हल्द्वानी)

(स्थान पीर ख्वाजा जंगल गंगोठिया शुभ स्थान)

1944 में मेरी माता जी का देहान्त हो गया किसी प्रेमी ने श्री महाराज जी को गंगोठियां सूचना दे दी। श्री महाराज का अपने कर कमलों से लिखा हुआ पत्र आया कि माता जी के किरयाक्रम से फारिग होकर गंगोठियां पहुंचे पत्र मिलने के दो-चार दिन पश्चात् श्री गुरुचरणों में हाजिर हुआ। दास नमस्कार करके बैठ गया। फिर श्री सदगुरु देव महाराज ने फरमाया! "प्रेमी तुम्हें इसलिए नहीं बुलाया कि तुम्हारी माता का अफसोस किया जाये बल्कि इसलिए तुझे बुलाया है कि अपनी मौत को याद रक्खो अपनी मौत की याद ही ईश्वर की याद कराती है मीत की याद ही पाप कर्म करने से रोकती है और लोक परलोक का सुधार हो जाता है।"

जब शाम के समय हम (मैं और मेरा साथी) पीर ख्वाजा जंगल में गये तो श्री महाराज जी स्वच्छ घास वाली जगह लेटे थे उठ कर बैठ गये। उद्भुत मस्ती की हालत थी। श्री महाराज जी वाणी उच्चारण करते रहे जो शब्द की महिमा थी दास ने श्री महाराज जी से प्रश्न किया कि रोम-रोम में शब्द की धुनकार कैसे समाई हुई है?

श्री महाराज जी । अपनी पीठ से कुर्ता उठाकर मुझे कान लगाने को कहा। जो कुछ उस समय आनन्द अनुभव हुआ उस का वर्णन या लिखना तो असम्भव है। पर उस आनन्द की अभी तक मीठी सी याद मन में बनी हुई है।

दूसरे दिन फिर शाम हम दोनों वहाँ पर पहुँचे तो जंगल में श्री महाराज जी कल वाले स्थान पर नहीं थे। इधर-उधर ढूंढते ढूंढते श्री महाराज जी को एक बबूल के पेड के नीचे बैठे हुए पाया।

वह स्थान ऊँचा नीचा और वहाँ कंकड़ छोटे-छोटे पड़े थे।

श्री महाराज जी ने हमें बैठने के लिए कहा। बड़ी कठिनाई से जगह साफ करके बैठ पाये। उस समय दास ने प्रार्थना की। जहां आप कल शाम विराजमान थे। वह जगह साफ समतल अर्थात बैठने योग्य थी। जिस स्थान पर अब आप बैठे हैं यह बैठने के उपयुक्त नहीं है। आप कल वाले स्थान पर क्यों नहीं बैठे?

श्री महाराज जी ने फरमाया कि शुरू से ही इनका यह प्रोग्राम रहा है कि एक दिन जहाँ किसी ने देख लिया, दूसरे दिन स्थान बदल लिया। दास (श्री नन्दलाल) ने इसका कारण पूछा तो श्री महाराज जी ने कहा! "प्रेमी यह पत्थर पूज कौम है सन्तों के वचनों पर तो नहीं चलते, मगर सन्तों के चले जाने के बाद उस जगह की पूजा अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए आरम्भ कर देते हैं जो कि पाखण्ड है। इस कारण ऐसा करना पड़ता है।

संस्मरण (श्री नन्दलाल बिन्द्रा, हल्द्वानी)

(स्थान गृह श्री नन्दलाल रावलपिन्डी (अब पाकिस्तान में) नम्रता व मर्यादा का उदाहरण

श्री सद्गुरुदेव कुर्री से रावलपिण्डी पैदल चल दिये। संगत के

कुछ प्रेमी भी उनके साथ थे जिसमें एक मैं (नन्दलाल) भी था। श्री महाराज जी की चाल इतनी तेज थी कि हमें उनके साथ दौड़ना पड़ता था। रावलपिण्डी अभी एक मील दूर था। दास (नन्दलाल) के मन में विचार आया कि श्री महाराज जी से प्रार्थना करूं कि मेरे गृह पर ही दयालता फरमावें। मैं पास आकर कुछ कहना चाहता था कि श्री महाराज जी ने कहा यह तुम्हारे यहाँ ही चलेंगे। यह सुनकर मेरे मन में खुशी की लहर दौड़ गई। जल्दी से घर पहुंचा। एक कमरे में श्री महाराज जी के लिए गद्दा और चादर बिछा दी। श्री गुरुदेव ने गद्दा हटवाकर लोई बिछवाई और आसन पर विराजमान हुए। तीन चार दिन वहां ठहरे। अमृत वर्षा होती रही। गर्मी के दिन थे छत पर सत्संग होता था। रात के 11-00 बजे तक प्रेमी बैठे रहते। श्री महाराज जी बार-बार उनको घर लौटने को कहते पता नहीं यहाँ क्या चुम्बक शक्ति थी। जो उनका मन जाने को न करता था। मुश्किल से आधा घण्टा एक करवट लेटने के बाद भक्त जी को साथ लेकर चश्मे की ओर चले जाते। यह कार्यक्रम इनका जीवन भर ऐसा ही रहा। प्रातः निश्चित समय पर अपने आसन पर पहुँच जाते।

उन्हीं दिनों एक दिन पं० ठाकुर दास जी (श्री महाराज जी के बड़े भाई) दर्शनों के लिए जब आए तो श्री सद्गुरूदेव ने एकदम उठकर बरामदे में जाकर पंडित जी के चरण स्पर्श किए। पं० ठाकुरदास जी ने पूज्य गुरुदेव को फरमाया कि आप महापुरुष है। आप ऐसा न किया करें हमे बड़ा संकोच होता है तब श्री महाराज ने कहा "यह हमारा कर्तव्य है और अधिकार है। यह मर्यादा हम नहीं छोड़ सकते। आप हमारे पिता तुल्य भ्राता है।

दूसरे दिल कल्लर से स्कूल के हेडमास्टर साहिब (जहाँ श्री महाराज जी ने आठवीं श्रेणी तक विद्या ग्रहण की थी। आपके दर्शनों के लिए आ गए। जब भी ऐसा ही दृश्य देखने को मिला। श्री महाराज

जी ने झट से उठकर हेडमास्टर साहिब के चरण स्पर्श किए। हैडमास्टर साहिब की आँखों से आँसू बह निकले और कहा! श्री महाराज जी प्रणाम तो हमें करना चाहिए।"

तब भी श्री महाराज जी ने कहा "नम्रता और मर्यादा पालन महापुरुषों के जीवन का लक्षण है।

संस्मरण (श्री नन्द लाल बिन्द्रा जी)

जाखू (शिमला) में एकान्तवास

परमपूज्य श्री सत्गुरूदेव जी महाराज शिमला जाखू में विराजमान थे। दास ने श्री सतगुरू महाराज से कहा? जब भगवान श्रीकृष्ण बंसी बजाते थे तो गायें चरना छोड़ देती थीं और भगवान के पास पहुंच जाती थीं। गोपियां बंसी की आवाज सुनकर फौरन दौड़ आती थी। यहां तक कि अगर हाथ आटे से सने हुए हैं तो बिना हाथ धोये घर बार भूलकर दौड़ आती थीं। क्या उस धुन में वाकई आकर्षण था या बाद में इतिहास लिखने वालों ने महिमा बढ़ाने के, लिए ऐसा लिख दिया है?

श्री सदगुरूदेव जी: प्रेमी! भगवान कृष्ण बंसी द्वारा शब्द स्वरूप ईश्वर की आवाज को बाहर प्रकट कर सकते थे। क्योंकि हर जीव के कालब के अन्दर शब्द स्वरूप परमेश्वर की धुन हो रही है जिसको ब्रह्मनाद भी कहा है। कोई भी जीव उस आवाज को सुनकर आकर्षित हुए बिना नहीं रह सकता। जैसे अगर आप सो रहे हो और कोई भी व्यक्ति आपका नाम लेकर पुकारे तो आप फौरन जाग कर जानना चाहोगे कि किसने और क्यों मुझे बुलाया है??

दूसरी घटना इस प्रकार है। श्री गुरू महाराज जाखू मन्दिर के पास एक पुराने से मकान में जो टूटा फूटा था एकान्तवास के लिए

ठहरे हुए थे। दास (नन्दलाल) बिना आशा लिये यहाँ चला गया। यहाँ पाँच-छः दिन रहकर श्री सद्गुरुदेव जी की आनन्दमयी अवस्था देखने को मिली जो ध्यान से बाहर है। एक दिन पूज्य भक्त जी बाजार गये हुए थे। पूज्य महाराज जी धूप में विराजमान थे श्री गुरू महाराज जी की आज्ञा से दास (नन्दलाल) समता विज्ञान ले आया। श्री महाराज जी ने निम्न वाणी पढ़ने की आशा फरमाई।

“ऐसी चादर दात करो में ओढ़ूं नगन शरीर"

काफी देर पढ़ने के बाद श्री महाराज जी ने पाठ इशारे से बन्द करवा दिया। श्री महाराज जी काफी समय तक समाधिस्थ हो गये। उस समय जो आनन्द वहाँ बरस रहा था यह ब्यान से बाहर है। अचानक श्री महाराज जी ने आँख खोली और टूटी हुई सीढ़ी की तरफ इशारा करके फरमाया वह देखा (दीनदयाल अन्तरयामी जानते थे कि अब क्या होने वाला है) एक बन्दर यहाँ बैठा था। वह सीढ़ी से उतरकर सीढ़ी के साथ लगी बिच्छू बूटी को उसका हाथ लगा (उस बूटी के लगने से खारिश और दर्द होता है) बन्दर फौरन हाथ झटकाता हुआ नीचे आया और दूसरी बूटी पर अपना हाथ रगड़ा और ठीक-ठाक हो गया।

श्री महाराज ने पूछा:- प्रेमी क्या देखा है प्रेमी ने कहा कि बन्दर के हाथ को बिच्छू बूटी लगने से जो तकलीफ हुई थी उसने स्वयं ही उसका इलाज कर लिया है। इस पर श्री महाराज ने फरमाया अगर तुम्हें बिच्छू बूटी लग जाए और इसका इलाज पता न हो तो क्या करोगे। दास ने कहा कि महाराज जी मैं डाक्टर के पास जाऊँगा।

इस पर श्री महाराज जी ने कहा कि बन्दर तुमसे अच्छा हुआ जो खुद अपना डाक्टर है।

दास ने कहा जी हाँ।

इस पर श्री सद्गुरूदेव ने फरमाया कि सिरफ मानुष जूनी ही सर्वश्रेष्ठ है कोई पशु न सिमरण कर सकता है न निष्काम सेवा करके किसी को सुख दे सकता है। सिर्फ मानुष जूनी में जीव दूसरों का भला और अपना कल्याण कर सकता है और फिर मानुष जूनी में सद्गुरू का प्राप्त होना तो खास (विशेष) प्रभु कृपा से हो सकता है।

संस्मरण (श्री हकीम भीम सैन जी, बरेली)

सत्पुरुष महात्मा मंगतराम जी के साक्षात दर्शन करने, नजदीक बैठकर उनके वचनों को श्रवण करने का सौभाग्य दास को प्राप्त हुआ उनके जीवन से दास ने जो कुछ अनुभव किया वह जनता के हित के लिए पेश कर रहा हूँ। उनका आदर्शमय जीवन हम ससारियों के लिए पथ प्रदर्शन का कार्य करता है। उनकी विशेष कृपा भी दास पर हुई जो उन्होंने मुझे अपनी शरण में ले लिया। इस सम्बन्ध में मैं यहाँ वर्णन नहीं करता।

केलाघाट राजपुर नदी के किनारे टेंट में महाराज विराजमान थे दास भी उनके दर्शन को वहाँ गया। मैंने देखा कि श्री महाराज जी रात्रि के 11.00 बजे के लगभग थोड़ा सा आराम करके 12-00 बजे जंगल में जाकर समाधिस्थ हो जाते। दिन भर वह उपस्थित होने वाले प्रेमियों की शंका समाधान करते रहते थे। दास के मन में एक विचार उठा और श्री महाराज जी से प्रश्न किया "महाराज जी आप का टैंट और इस स्थान पर तो पहले ही एकान्त है। रात्रि को इस टैंट में ही भजन कर लिया करे बाहर जाने की क्या आवश्यकता है। इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया, प्रेमियों! इनके लिए तो टैंट के अन्दर और बाहर एक जैसा है लेकिन प्रेमियों के लिए इनको ऐसा करना पड़ता है। तमाम जीवन भर इनका ऐसा ही प्रोग्राम रहा है।

धन्य है ऐसे सत्पुरुष जिनका आदर्श जीवन संसार के हित के

लिए होता है जो अपनी सुख सुविधाओं को भी त्याग देते हैं।

गुरुदेव के जीवन में समय की पाबन्दी बढ़ी जबरदस्त देखी। और यह प्रायः इसका वर्णन प्रायः अपने प्रवचनों में किया करते थे। जैसे "सांसारिक कार्यों और परमार्थिक कार्यों में समय की पाबन्दी परम आवश्यक है जो प्राणी समय का पाबन्द नहीं, वह जीवन में उन्नति नहीं कर सकता।

दास के जीवन में समय की पाबन्दी की कमी थी। इसी संदर्भ में दास ने श्री महाराज जी से प्रश्न किया-

"महाराज जी समय की पाबन्दी में कभी-कभी उलझन पैदा हो जाती है। मैं जब अभ्यास में बैठता हूँ रोगी आ जाता है और दास को आज्ञा होती है कि अधिक तकलीफ में है। इसे देख लीजिए। इस विषय पर आपकी क्या राय है। अभ्यास को छोड़ कर रोगी को देखना चाहिए। यह भी तो सेवा कार्य है?

श्री महाराज जी ने फरमाया "प्रेमी अभ्यास समय से पहले कभी नहीं उठना तुझे भी तो बड़ा भारी रोग लगा है और उसकी निवृत्ति के लिए तू यत्न कर रहा है। जब तूने प्रभु को कर्ता माना है तो तुझे चिन्ता किस बात की है। सब का दुःख दूर करने वाला मालिक है। लेकिन अगर उस मरीज ने कुछ देर के लिए दुःख उठाना है तो वह दुख समय पर ही जायेगा चाहे तू कितनी कोशिश क्यों ने करे प्रेमी याद रख अगर तेरे पर भारी से भारी विपत्ति भी आ जाए तूने साधन से वक्त से पहले नहीं उठना है।

संस्मरण (हकीम भीमसैन जी, बरेली)

जब श्री महाराज जी बरेली पधारे। उनके ठरहने का प्रबन्ध बाग में किया गया (जो समता योग आश्रम, बरेली के पास ही है)

दास ने श्री महाराज जी की दिनचर्या देखी रात्रि भर अभ्यास में बैठने के पश्चात् 6-30 बजे प्रातः के लगभग वह अपने स्थान पर आ जाते थे। आप जल्दी से स्नान करते और पाँच सात मिनट में फारिग होकर अपने आसन पर विराजमान हो जाते थे। समय की कदर करते थे। कभी भी उनको तेल या साबुन का प्रयोग करते नहीं देखा। तकरीबन प्रातः 9 बजे पूज्य भक्त बनारसी दास जी श्री महाराज जी के लिए दूध लाते थे। उसके पान करने में अधिक समय नहीं लगाते थे।

गर्मियों में हम लोगों को कितनी प्यास लगती है लेकिन पूज्य गुरुदेव को एक दिन भी जल पीते नहीं देखा। दास ने प्रार्थना की "महाराज जी आप इतनी गर्मी में भी जलपान नहीं करते। इसपर श्री महाराज जी ने फरमाया प्रेमी दूध में इतना जल है और जल पान करने की आवश्यकता ही नहीं रहती। यहाँ बताना आवश्यक है कि श्री महाराज जी 24 घण्टे में केवल आधा किलो दूध ही ग्रहण करते थे।

श्री महाराज जी का निवास बहुत सादा, खद्दर की पगड़ी, कुर्ता, धोती और एक खद्दर की चादर गर्मियों के दिनों में रखते और सर्दियों में एक काश्मीरी लोई। जब तक यह वस्त्र बिलकुल फट न जाएं, किसी भी प्रेमी की सेवा स्वीकार नहीं की जाती थी। जबतक टाकी और टांकों से काम चल जाता तो भी उन्हीं को प्रयोग में लाया जाता पन्द्रह दिन से पहले वस्त्र तबदील नहीं करते थे। वर्ष भर के लिए दो जोड़े काफी रहते। जूता सादा पहनते थे। जोकि पंजाब में बुजुर्ग लोग पहनते हैं। दास इस सम्बन्ध में एक घटना वर्णन करता है।

श्री महाराज जी के जूते का तलवा टूट गया था। उनके परमशिष्य भक्त बनारसीदास जी ने दास से कहा कि महाराज जी

जूते का तलवा गांधी से ठीक करवा दीजिए बहुत ज्यादा घिस चुका था। दास ने भक्त जी के आगे प्रार्थना की कि अगर आप आज्ञा करें तो श्री महाराज जी के लिए नया जूता ले आऊँ श्री भक्त जी ने फरमाया, अभी तो इसे ठीक करवाने की आज्ञा हुई है। इसलिए इसे ठीक करवा दीजिए और नया जूता भी ले आना। श्री महाराज जी से प्रार्थना करना, अगर स्वीकार करते तो बड़ी सुन्दर बात है। बाज़ार से टूटी जूती ठीक करवा दी और नया जूता लेकर दास भक्त जी (आपके परमशिष्य) के पास पहुँचा। जूता लेने की सिफारिश भक्त जी से करवाई। फिर दास ने श्री महाराज जी से साँयकाल को अर्ज की, श्री महाराज जी! कृप्या दास की तुच्छ भेंट स्वीकार कर लें, आपका पुराना जूता अब ज्यादा देर नहीं चल सकता। इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया! प्रेमी यह अभी छः महीने और चलेगा।" दास ने पुनः प्रार्थना की, महाराज जी! जब यह खत्म हो जाय तब इस नये जूते को प्रयोग में ले आना।" इसपर गुरुदेव ने झट से फरमाया, प्रेमी क्या यहाँ जूता न मिलेगा जहाँ यह मौजूद होंगे। श्री महाराज जी ने जूता स्वीकार न किया।

श्री महाराज जी का आदर्श जीवन हम सांसारी प्राणियों को प्रभावित किये बिना नहीं रह सकता। जो कुछ यह कहते थे वह बातें उनके जीवन पर घटित होती थीं। भूख प्यास और नींद पर उनकी पूर्ण विजय थी। ऐसी महान हस्ती का दर्शन और उनकी विशेष कृपा का पात्र होना यह बड़े सौभाग्य की बात है।

संस्मरण (बख्शी नरसिंह दास जी लौ, देहरादून)

सावन के दिन थे हमने सुना कि महात्मा मंगतराम जी महाराज देहरादून में विराजमान है और उनका टैंट राजपुर रिषीपरना नदी के किनारे केलाघाट पर लगाया गया है। नाम तो सुना था परन्तु दर्शन

नहीं हुए थे। प्रबल इच्छा हुई कि श्री महाराज जी के दर्शन करें। पूछते-पूछते केलाघाट जा पहुँचे। श्री महाराज जी के चरणों में सीस निवाकर टैंट में बैठ गए।

आज व्यास पूजा है हमारा विचार था कि श्री महाराज जी के शिष्य आपकी पूजा आदि करेंगे और कोई विशेष प्रवचन होंगे। परन्तु यहाँ क्या देखा कि वहाँ थोड़े से मनुष्यों के सिवा कोई रौनक नहीं। पूजा का कोई स्थान नहीं पृथ्वी पर बैठे हुए श्री महाराज जी के दर्शन जी भर कर किए। देखने में एक दुबला पतला शरीर जिसमें खून का रंग भी पीला हो चुका था। परन्तु चेहरे पर प्रकाश और आँखों का तेज उनके तपस्वी जीवन का पता दे रहे थे। तपस्वी पुरुष कभी-कभी मुस्करा देते थे। प्रायः उनके मुख पर उदासी, उपरामता, चिन्तन और विचार का चक्कर चलता रहता था। जाने वालों को बड़े प्यार से विचार करने को कहते थे और हर प्रश्नकर्ता को पूर्ण उत्तर मिलता था। आपके हर शब्द में प्यार, उच्च विचार, सृष्टि के साथ एकरूपता आमस्वरूप दृष्टि की झलक मिलती थी। आपके चरणों में आनन्द और शान्ति का राज्य था। भोली-भाली सूरत, सीधी सादी बातें, सादा लिबास, निर्मलता, निश्चलता व सन्तोषी जीवन आदि देखकर प्रथम दर्शन में ही मन उनके चरणों में अर्पित हो गया। अब यही प्रतीक्षा रहने लगी कि कब शनिवार और रविवार आयेगा और हम अपने प्रियतम के पास जायेंगे। पांच दिन इस मीठी याद में कटते और दो दिन अपने साथ प्यारेमल शर्मा जी और योगेश्वर पंडित जी को साथ लेकर हजुर के दरबार में उपस्थित हो जाते। इसी प्रकार मेल मिलाप होते रहे।

सावन समाप्त हो गया। 15 अगस्त 1953 को स्वतंत्रता दिवस की छुट्टी थी। शहर में चहलपहल व परेड वगैरह थी परन्तु यह पतंगे अपने दीपक पर जलने को उपस्थित हो गये।

श्री महाराज जी ने बड़े प्यार से फरमाया "आज सब लोग शहर की ओर जा रहे हैं यहाँ चहल पहल और रंगारंग के तमाशे हैं, आपको कौन सी वस्तु इस तरफ यहाँ खीच कर लाई है।"

दास ने हाथ जोड़कर कहा "हजूर आपकी और ईश्वर की कृपा दृष्टि का ही यह फल है कि आपके इस दास को संसारी तमाशों में कोई रूचि नहीं है, परन्तु आप जैसे महानपुरुषों के चरणों में आनन्द लेने का स्वभाव सा पड़ गया है।"

हजूर साहिब ने फरमाया बड़े भाग है, पूर्व जन्म के अच्छे कर्म हैं जिनके फलस्वरूप ऐसी संगत प्राप्त हुई है। इससे सत्संग का अवसर मिलता है और जीवन सुफल हो जाता है।"

दास ने हाथ जोड़कर श्री महाराज जी से प्रार्थना की कि इस अधम जीव को अपने चरण शरण का अवसर प्रदान करें। थोड़ा विचार के पश्चात एक हफ्ते के बाद उत्तर देने को कहा। ज्यों-त्यों हफ्ता गुजर गया। दास दरबार में उपस्थित हुआ तो यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि प्रार्थना स्वीकार हो गई है।

आदेश मिला कि 24 अगस्त को प्रातः 7.00 बजे उपस्थित हो जाओ 23 अगस्त की रात को हम आपके टैंट में ही रहे। प्रातः काल स्नान करके समय की प्रतीक्षा करने लगे। जब श्री महाराज जी आसन पर विराजमान हुए राम दास को बुलाया। टैंट के अन्दर आपने अपना विशेष उपदेश बहुत खोल दिया। आप 31 अगस्त तक केलाघाट राजपुर में रहे और एक सितम्बर से 15 सितम्बर तक मोहनी रोड, देहरादूर ठहरे। प्रतिदिन हम सत्संग का पूर्ण लाभ उठाते रहे। इन पन्द्रह दिनों में श्री महाराज जी के उपदेशों व वचनों से जो नोट लिए गए थे उनका थोड़ा सा वर्णन किया जाता है जो कि निम्न है।

शिक्षा नं० 1: एकदिन सांयकाल सात बजे बहुत से प्रेमी घरों

को चले गये थे। श्री महाराज जी ने आसन बदला और टाँगे लम्बी कर दी। एक प्रेमी झट से उठकर टाँगों को दबाने लगा। श्री महाराज जी ने फरमाया प्रेमी इन लकड़ियों को दबाने से कोई लाभ नहीं है, यह कोई सेवा नहीं है, जो उपदेश आपको इन्होंने दिया है उसकी सच्चे दिल से कमाई करना, यही इनकी सच्ची सेवा है। यह सुनकर दूसरे प्रेमी ने कहा, महाराज जी, शरीर की सेवा भी सन्तों की सेवा होती है, जिससे प्रसन्न होकर सत्पुरूष आशीर्वाद देते हैं।

श्री महाराज जी ने फरमाया "प्रेमी जरा ध्यान से सुन गुरु या सतपुरुष शरीर नहीं है। शरीर से न्यारा साक्षी द्रष्टा आत्म तत्व है और तुम्हारे सब शरीरों के अन्तर व्याप्त है, तुम्हारे अंग संग है, तुम्हारे और गुरू के बीच एक इंच की दूरी नहीं है। एक शरीर की दूसरे शरीर से दूरी है आत्माएं न दूर है और न नजदीक है, न एक है न दो है।"

शिक्षा नं० **2**: एक दिन आपने अपने प्रवचन में कहा सत्पुरूष की मनोदिशा को समझो जो कानून और नियम अपने ऊपर लागू नहीं करते यह दूसरों पर भी लागू नहीं करते। जिस नियम को अपने जीवन व्यवहार में नहीं लाते, उसका उपदेश जवान से नहीं करते। जब आप पाप कर्म से ऊपर उठ जाते हैं तब दूसरों को भी इन से बचने के लिए कहते हैं। सन्त जन क्यों पूजे गये। इनकी समाधी और कबरों की पूजा क्यों की जाती है, इसलिए कि सत नियमों को अपने जीवन में घटाया। राजा हरिश्चन्द्र व राजा राम चन्द्र की मिसालें लो। सत और मार्यादा को इन्होंने अपने जीवन में उतारा और दूसरों के सामने अपनाकर क्रियात्मक जीवन पेश किया। ऐसे महापुरूषों के जीवन आज तक हमारी हिन्दु जाती का आदर्श है।

शिक्षा नं० **3** श्री महाराज जी ने एक दिन फरमाया कि आज संसार की दशा बहुत बिगड़ी हुई है। बहुत संख्या में ऐसे लोग हैं

जिनकी रुहानी जीवन से इंकारी है। अध्यात्म जीवन को निकम्मापन बतलाते हैं। मायावाद या भौतिकवाद को श्रेष्ठ मानते है। देश और समाज की उन्नति भी भौतिकवादी तरीको से करना चाहते हैं। परन्तु अपने निज स्वार्थ का त्याग नहीं करते। आज का प्राणी बहुत ही स्वार्थी हो गया है, इसलिए समाज और देश की उन्नति होने की बजाए गिरावट के गड्ढे में गिर रहे हैं कहीं भी सुख शान्ति दिखाई नहीं देती। यदि आज जीवन में सुख शान्ति चाहते हो तो स्वार्थ का त्याग करो अध्यात्मवाद को अपनाओ अपने सतस्वरूप का ज्ञान प्राप्त करो सब जीवों में प्रभु दीनदयाल के दर्शन करके सबसे प्रेम करो और सबकी निष्काम सेवा करो।

गीता में गर्ज (स्वार्थ) और फर्ज (कर्तव्य) की शिक्षा दी गई है। श्री कृष्ण का अर्जुन को यही उपदेश है। गर्ज (स्वार्थ) को छोड़ और फर्ज (कर्तव्य) को अपना अर्थात् कर्तव्य परायण हो जा भौतिकवाद में स्वार्थ प्रधान है। भौतिकवादी अपना काम स्वार्थ की दृष्टि से करता है अध्यात्मवाद में फर्ज या कर्तव्य पहले है। कर्तव्य परायण जीवों में स्वार्थ लेशमात्र भी नहीं रहता, वही सच्चे परमार्थी जीव होते हैं।

शिक्षा नं० **4**: एक दिन श्री महाराज जी ने इस प्रकार उपदेश देना आरम्भ कर दिया "यदि कोई संसार में उन्नति करना चाहे तो पहले वह अपना उद्धार करे शरीर के विकार काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि का त्याग करे। यदि अपना उद्धार हो गया तो दुनिया का उद्धार स्वयं हो जायेगा अगर तेरा मन मैला है विकारों से नापाक (दूषित) है तो तेरा अशुद्ध संकल्प सारी दुनिया को अशुद्ध कर देगा। रेडियो के दृष्टान्त से शिक्षा ग्रहण करो, किस प्रकार एक शब्द चलकर सारी पृथ्वी के इर्द गिर्द चक्कर काटता है। आज भौतिक दृष्टि से सारा संसार एकरूप हो रहा है, किसी एक देश के दुष्कर्म का फल सारी दुनिया को भोगना पड़ता है।

इस प्रकार अध्यात्मिक जगत में मनुष्य के मन से निकले हुए अशुद्ध संकल्प सारे संसार के वातावरण को गन्दा करते हैं। तुम्हारे पापमयी संकल्प दूसरों के अशुद्ध संकल्पों के साथ मिलकर तुम्हारा विरोध उत्पन्न करेंगे। सन्तों और महापुरूषों ने जो-जो परहेज बताए हैं। आजकल उनके उल्ट काम हो रहा है। इसीलिए दुनिया दुःखी है।

ऐसे महापुरूषों के चरणों में बारम्बार कोटि कोटि प्रणाम करता हूं और लेखनी को यहां विश्राम देता हूं।

संस्मरण (श्री ओम् कपूर जी, देहरादून)

मई 1953 श्री सद्गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज केलाघाट जिसको तुलतुलिया घाट भी कहते हैं। और जो देहरादून के निकट राजपुर में बरसाती नदी के किनारे स्थित है एकान्तवास कर रहे थे वहां कोई मकान नहीं था। श्री गुरू महाराज टैन्ट में बिराजते थे। उन्हीं दिनों गुरदासपुर (पंजाब) और देहली में भी कुछ प्रेमी दर्शन करने गए हुए थे। कुछ प्रेमी तो जब-जब भी किसी काम से तम्बू के अन्दर आते या बाहर जाते तो साष्टांग प्रणाम गुरूदेव को करते, परन्तु गुरूदेव तो अधिकतर समाधिस्थ ही रहते थे। मैं यहाँ निकट ही बैठा था यह देख देखकर हैरान हो रहा था कि आखिर यह क्या मामला है। इस प्रकार बारम्बार प्रणाम करने का क्या लाभ है। मन ही मन में विचार किया कि शायद गुरुदेव की प्रेमियों के लिए ऐसा ही आशा है, जिसका मुझे पता नहीं।

कुछ समय पश्चात जब गुरुदेव की समाधि खुली तो दास ने गुरुदेव से पूछ ही लिया।

दास "क्या आपकी ऐसी आज्ञा है कि दिन में जितनी बार भी आपके सामने आया जाया जावे, उतनी बार ही आपको झुककर

प्रणाम, नमस्कार किया जाना चाहिए?

गुरुदेव :- प्रेमी जी! इनकी तरफ से कोई पाबन्दी नहीं है और न ही समता में इस तरह का कोई नियम राईज (लागू) है। बुजुर्गों को नमस्कार करना और आशीर्वाद लेना यह प्राचीन भारत में एक संस्कार पड़ा हुआ है। बाकी, यह लोग जो तुमने अभी देखे हैं कायर बुद्धि लोग हैं। जो गुरू को बारम्बार नमस्कार करने में ही कल्याण चाहते हैं। इनका कुछ बनना बनाना नहीं यह रास्ता करनी करने वालों का है। प्रेमी ! इनको तो ऐसे शिष्य चाहिए जो ऐसे बाहोश बुद्धि हो, अगर कभी गल्ती से गुरू गल्त मार्ग पर चलने लगे तो उसे भी ठोक कर ठीक कर दें।"

प्रेमी ! कबीर परमसंत थे, उन्होंने कोई गुरु धारण नहीं किया हुआ था। बनारस के लोगों ने उनको निगुरा कहना शुरू कर दिया था। तो उन्होंने सोचा कि इस वक्त (समय) आत्मदर्शी गुरू धारण कर लिया जाये ऐसा विचार कर उन्होंने उस जमाने के संत रामानन्द जी को, जोकि उस समय के अच्छे संत थे। उनकी शरण में जाने का विचार किया। आगे तुम्हें पता ही है कि किस तरह उपदेश देने से इंकार कर दिया। क्योंकि कबीर जुलाहा था और वह किसी नीच जात वाले को शिष्य नहीं बनाना चाहते थे। फिर बाद में सेवा में लगाकर लंगर में लगालेना, और लंगर में सिर्फ पानी भरने की सेवा दी। कबीर अन्तर से फक्कड़ सन्त थे किसी भी पाखण्ड को अपने सामने टिकने न देते थे। लंगर में पानी बड़े इफरात (खुलकर) से इस्तमाल प्रयोग होता था। कबीर ने पता चलाया माजरा (मामला) क्या है इतना पानी कैसे इस्तमाल होता है। सुबह से शाम तक पानी सिर पर लाते रहने से लंगर का पूरा नहीं पड़ता। सद्गुरू कबीर ने और खोज की तो पता चला कि सात सात बार लगातार लंगर धुलता है लकडियां भी घुल कर अन्दर जाती हैं। बर्तन कई बार मिट्टी से मांजकर धाये

जाते हैं। इन सबके पीछे जो बात पता चली तो वह यह थी कि अपवित्रता को पानी से पवित्र किया जाता है। एक मर्यादा तक लंगर की सफाई और बर्तन साफ करना ठीक है लेकिन यह जो पाखंड कबीर ने देखा तो उससे रहा न गया। उन्होंने उन लोगों को सबक (शिक्षा) देने के लिए एक रोज लंगर खाने में जगह व जगह पेशाब करना शुरू कर दिया और पानी लाना बन्द कर दिया। बाकी शिष्यों ने जाकर गुरु जी से शिकायत की, कि आज कबीर ने इस तरह लंगरखाना भ्रष्ट कर दिया है तब रामानन्द ने बुलाकर पूछा, कबीर! तुमने यह ऐसा क्यों किया इस पर उन्होंने फरमाया:-

"मूत से तुम मूत से हम और मूत से कुल संसार,

कहत कबीर सुनो भाई साधो इस भूत से कौन न्यार।

क्या पानी डाल डालकर पवित्रता हासिल की जा रही है। एक मर्यादा का हर कारज ठीक हुआ करता है। इस पर रामानन्द ने सोचा कि बात तो कबीर की ठीक है सब शिष्यों को समझा समझा कर वापिस किया। आगे के लिए एक मर्यादा बांध दी। कबीर से कहा "आगे तुम लंगर में पानी की सेवा न करना केवल आगे से पितरों के तर्पण के वास्ते प्रातः दूध ले आया करो। दूसरे दिन कबीर दूध लेने के लिए चले गये। तब जाकर बाहर शहर के एक मरे हुए जानवर की हड्डियों के ऊपर लोटा रखकर बैठ गए। उधर वक्त (समय) तर्पण का होता जा रहा था। कबीर के न पहुंचने पर शिष्यों ने गुरु रामानन्द से जाकर प्रार्थना की महाराज! अभी तक दूध लेकर कबीर नहीं आया। फरमाने लगे "जाओ जाकर उसे तलाश करके लाओ हुकम पाकर प्रेमी तलाश (खोज) के लिए चल दिये। ढूंढते ढूंढते शहर से बाहर हड्डियों के ढेर के पास डोला लेकर कबीर को बैठे पाया। लौटकर वापिस आ गये सब बात गुरु रामानन्द को बता दी। श्री रामानन्द जी शिष्यों को लेकर वहां पहुंचे

जहां कबीर जी समाधि लगाये हड्डियों के ढेर के पास बैठे थे।

गुरु जी ने कहा! "कबीर क्या कर रहे हो?"

कबीर जी ने कहा "इनसे दूध मांग रहा हूं, ये दे नहीं रही है।

रामानन्द जी "तेरी बुद्धि खराब हुई हुई है, यह मरे हुए कैसे दूध दे सकते हैं।"

कबीर जी:- महाराज जी! हड्डियां दूध दे नहीं सकती तो ग्रहण कैसे कर सकती है। रोजाना जो तर्पण पितरों के प्रति किया जाता है, कैसे यह पहुंच सकता है। यह केवल पाखण्ड बना रक्खा है।

"तेरे चौदह सौ चौरासी चेला उन मध्य हम नाहीं।

हम तो लेवें सत का सौदा पाखण्ड पूजे नाहीं।।

जो तैं जाना पारब्रह्म वह हम जानी माया।

अलख पुरख को भजे कबीरा भेद किसे नहीं पाया।

इस पर रामानन्द ने सब शिष्यों को कह दिया कि कबीर पर किसी प्रकार की कोई पाबन्दी नहीं है जैसे इस की मरजी (इच्छा) हो विचरे।

प्रेमी इन को ऐसे शिष्य चाहिए जैसे कबीर था।

साधारणतया संसारियों का यह विश्वास है कि सन्तों, महात्माओं के दर्शन करने और उनके चरणों में बार-बार साष्टांग प्रणाम करने से ही जीवन का कल्याण होता है परन्तु सन्त मत ऐसा नहीं बतलाता। महापुरूषों का फरमान है कि जब तक जीव इस जीवन में सत करनी नहीं करता। सतपुरुषों के बताए हुए रास्ते पर नहीं चलता। गुरु उपदेश को अपने जीवन में नहीं ढालता तब तक केवल प्रणाम करने या दर्शन भेंट से उसकी कल्याण नहीं हो सकती। इस बात का स्पष्ट निर्णय उपरोक्त घटना में मिलता है।

संस्मरण (श्री रामलाल नारंग, देहरादून)

परम पावन भागीरथी और कालिन्दी के मध्य स्थल इस दून की साफ धूली सी हरी भरी वादी को उत्तराखंड तापस भूमि का एक श्रेष्ठ भाग ही कह सकते हैं। एक ओर हिमालय के बर्फानी शिखर और दूसरे तरफ शिवालक की हरियाली पहाड़ियां यहां की परम्परा ने चिरकाल से इस पुण्य भूमि को आचार्य द्रोण के आश्रम से सम्बन्धित बताया है।

श्री गुरु नानक देव की परम्परा से सम्बन्धित श्री गुरू रामराय ने भी इसे तपस्या के लिए चुना और यहां गुरु के द्वार की स्थापना की। अब तो इसके दामन में और भी अनेक नामधारी आश्रमों की बाढ़ आ गई है।

इन सब के होते हुए भी देववंश अप्रैल **1953** में देहरादून शहर से **7** मील दूर उत्तर में रिसपना नदी के तट पर पूज्य श्री मंगतराम जी महाराज का तम्बू लगा इन नामधारी आश्रमों को देख न जाने उस अनोखे फकीर को क्या सूझी।

पूज्य श्री महाराज जी ने विचार दिया। कल प्रातः 8 बजे तपोभूमि का स्थान देखने चलेंगे। दूसरी सबेरे **8** बजकर तीन मिनट हुए थे, संयोगवश देहरादून से सज्जनों के आने में देर हो गई। महाराज जी उठ खड़े हुए और चलने को कहा। मैं और अन्य प्रेमी थैला इत्यादि उठा ही रहे थे, कि देखते क्या है उनका शरीर फलांग भर आगे निकल गया, हम सब प्रेमी चकित थे। उस रक्तहीन दुबले पतले शरीर की तेजी पर। राह में वर्षा की वेग भरी रिसपना नदी पार करनी थी। कई बार वृद्ध प्रेमियों को कन्धे पर उठाकर ले जाना पड़ा, युवक लाइन बांध, हाथ से हाथ पकड़ पार उतरते थे, पर हम सब

प्रेमी नदी के किनारे पर ही पहुंचे थे, कि वह फकीर तेज जल के बहाव को चीरता हुआ साफ पार निकल गया।

एकदम उनका पिछले दिन का नक्शा मेरे सामने आ खड़ा हुआ, कि जिसका मन स्वस्थ नहीं और इंद्रियां सबल है, वह जीव किस काम का। यह डेढ़ मील की यात्रा जो नदियों काटते घंटा ले जाती थी, 25 मिनट में समाप्त हो गई।

तपस्या भूमि की वाटिका को देख हम सब प्रेमी स्तम्भित रह गए। मानो प्रकृति मां ने वर्षों पहले यह उपहार बनाना आरम्भ कर दिया था। पचास के करीब ही ऊँचे-ऊँचे आम के वृक्ष खड़े थे। इसमें चार जगह मीठे जल के चश्मे बह रहे थे। मसूरी की चढ़ाई आरम्भ होते ही नदी के दामन में पहाड़ों से घिरी - कितनी गंभीर और शान्त थी वह वाटिका। धरणी के मूक सेवा रूप के साथ गहरा विचार, इस स्थान पर उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था ये महापुरूष सरल भाव से बोले-

"देखो यह पीपल का पेड़ रूण्ड मुण्ड कर दिया है। अजाड़ियों (चरवाहों) ने पत्ते से नंगा कर दिया है, टहनियाँ तोड़ डाली है। जब इसकी रक्षा होगी तो यह इस "रयाजतगाह" (तपस्या भूमि) को और भी ऊँचाकर देगा।"

बड़ी दूर की बात थी, वह। हम मूर्ख समझे थे, महाराज जी अब केलाघाट से हटकर यहीं अपनी रिहायश रक्खेंगे।

यह तै हुआ, कमरा कहां बनेगा और लंगर कहां मुंह उनका पूर्व की ओर रहेगा, उनमें कोई शीशे इत्यादि नहीं लगेंगे।

हमें केलाघाट वापस पहुंचने में उतना समय भी तो अब न लगा। उस साधु शरीर में थकान का तो नाम ही न था, विचार पेश

हुआ एक प्रेमी के द्वारा:

प्रश्न- "महाराज, आश्रम बन जाने के उपरान्त तो हर वर्ष आप अब देहरादून आया ही करोगे?"

उत्तर- प्रेमी! फकीरों को तुम ऐसा फन्दा डालकर बांध नहीं सकते, यह आश्रम तो तुम्हारे लिए है।

"आश्रम हमारे लिए महाराज जी यहां तो आश्रमों की भरमार लगी पड़ी है। ?"

"हाँ! इसलिए यह आश्रम, कि वे आश्रम अब नाम के आश्रम रह गये हैं। वरन् वह "तफरीगाह" और "ऐयाशघर" बन गए हैं। आदर्श आश्रम तो राजतगाह" (तपस्या भूमि) का नाम है।"

"महाराज जी निन्दा का क्या स्वरूप है?"

"सोने को किसी भय से पीतल कहना और 'पीतल' को 'सोना' कहना निन्दा है। सत्य का मण्डन और असत्य का खण्डन को भी निन्दा नहीं कहलाएगा। सब न्यायालयों में, सब सत्संगों में सब सन्तों के पास तुम्हें सत्य, असत्य की सफाई मिलेगी, उसे निन्दा नहीं कहा जा सकता।"

"कटू सत्य भी सो महाराज जी बुरा कहा जाता है। प्रेमी सत्य कटु ही होता है, चाहे कितना ही हेर फेर से कह लो यह कटू ही रहेगा।

हाँ! सबसे बड़ी बात यह है कि झूठ के सामने अपना सच्चा आदर्श पेश करो तपोभूमि के बारे में तुम्हारी संगत से ऐसी ही आशा की जाती है कि तुम इसका आदर्श पेश करो।"

संस्मरण (श्री हेमराज गेरा, देहरादून)

सितम्बर का महीना था। शाम के चार बजे होंगे कि मेरे एक परिचित प्रेमी एकायक मेरे पास आये और कहने लगे, "यदि तुम चीथड़ों में अपने आपको छुपाए एक महान विभूति के दर्शन करना चाहते हो तो मेरे साथ चलो। परन्तु समय हो गया है शीघ्र ही चलना चाहिए।" मैंने इच्छा प्रकट की और हम दोनों 15 मिनट में शहर के बाहर एक बगीचे में जा पहुंचे।

उद्यान के एक खस्ता से टीनपोश अकेले मकान के बरामदे में कई नर नारी जमा थे। उनके सामने कमजोर काया के पगड़ी ओढ़े एक बुजुर्ग, सफेद और नितान्त सादे कपड़ों में चादर बिछि हुई धरती पर नीचे ही बैठे थे। चेहरा ज़र्द परन्तु गम्भीर, आँखों में चमक के अतिरिक्त लाली भी देख पड़ती थी। उनके नजदीक ही एक तरफ हम बैठ गये। हमारे आने और बैठने को उन्होंने बड़ी गौर से देखा फिर तुरन्त ही आँखें बन्द कर गहरी मुद्रा में चले गये प्रतीत हुए, जिसे मेरे लिए उस वक्त समझना मुश्किल रहा।

हाँ - सत्संग हो रहा था और उनके निज सेवक भक्त बनारसी दास एक पुस्तक से वाणी का पाठ कर रहे थे। वाणी पद्य में थी किन्तु सरल थी और गूढ़ विषयों को अपने अन्दर छिपाए हुए थी।

आरती के पश्चात प्रसाद वितरण हुआ और थोडी देर में करीब करीब सभी लोग चले गए केवल हमारे समेत 4-5 व्यक्ति ही शेष रहे होंगे। वह दुबला पतला बुजुर्ग बरामदे में उसी आसन पर ही बैठा रहा।

एक तरफ बैठे चुस्त प्रकृति के नौजवान ने प्रश्न किया, "महाराज जी, क्या पेड़ और पौधों में भी महसूसात की शक्ति है"

"हॉ है। परन्तु मनुष्य के मुकाबले में बहुत ही कम इसके बाद उसने और भी कई प्रश्न पूछे और उत्तर मिलने पर, वह व्यक्ति उनका मिलान कभी कभी पुस्तक से भी करता देखा गया। यह बुजुर्ग प्रश्न का उत्तर केवल दो-चार शब्दों में ही तुरन्त दे देते थे। इसी तरह एक दूसरा व्यक्ति बोला, "महाराज आपका स्वास्थ्य तो ठीक है आप बीमार रहे प्रतीत होते हैं।

हल्की-सी मुस्कान के साथ फरमाया, "काफी अरसे से यह ऐसे ही है। नई जगह लोग इन्हें मरीज ही समझ लेते हैं।"

पूछने वाला व्यक्ति चुप हो गया। कुछ देर बाद एक तीसरे सज्जन ने प्रश्न किया, "महाराज जी अन्तिम समय में राम का भजन कैसे हो सकता है? इसकी कोई युक्ति आप बतलाएँ, क्योंकि शास्त्र का कथन है 'अन्त मता सो गता।"

ये तुरन्त बोले, "प्रेमी सुनो, जब मनुष्य का आखरी समय करीब होता है तो प्रायः सगे सम्बन्धी उसके इर्द गिर्द जमा हो जाते हैं और कई तरह के पाठ पढ़कर सुनाते हैं। बूढ़ा बड़ा हो तो यह भी कहते हैं, कहो राम कहो राम राम कहो राम । मतलब तुम्हारे वाला ही होता है। फिर एक हल्का सा कहकहा लगाया (मानो अन्तिम समय के भय से मुक्त है) फिर बोले जो पागलो! सारी उमर तो इसने तुम्हारा जाप किया, भला अब "राम" कैसे कहे जीवन भर तो इसकी वृत्तियाँ तुम्हारी ओर लगी रही है अब 'राम' का जाप कौन जपे प्रेमी यदि चाहते हो कि तुम्हें सन्तोष मिले और अन्त सुखदाई हो तो अपने जीवनकाल में ही 'राम' का भजन करो। इतना कह वह चुप हो गये और सन्नाटा सा छा गया।

कुछ देर बाद वह उच्च हस्ती अपनी मस्ती में गुनगुनाने लगी, और कई शब्द बोले, उनमें से एक यह भी था-

"तेरा कोई संगी ना साथी नित साजन जायें अकेला।

'मंगत' उठ प्रभु नाम सिमर ले, यह झूठ जगत का मेल।

संस्मरण (डा० मदन मोहन, देहरादून)

माह अप्रैल 1951 की बात है, मेरे मित्र श्री ओमजी कपूर ने सूचना दी कि वह फकीर जिसके बारे में जिक्र था और जिसकी बोली सूचना समझ में नहीं आती, आया हुआ है, और चकरौता रोड पर श्री दीपचन्द जी खजांची के बाग में ठहरा है।

बात कुछ इस तरह से थी कि एक दिन श्री ओमजी कपूर के घर पर बैठे हम दो चार मित्र सत्संग के बाद बातचीत कर रहे थे सभी संतों और मठों के बारे में- जो भारतवर्ष में आधुनिक काल में थे, और जिनमें अधिकांश के बारे में हम सबका व्यक्तिगत अनुभव था।

एक है जो जाड़े के दिनों में भी केवल कोपीन में ही रहते हैं, और बर्फीले स्थानों में जाकर भी रहते हैं, तो केवल कोपीन ही में पर क्या इसी का नाम है ईश्वर प्राप्ति या अध्यात्मिक प्रगति?

दूसरे हैं, जिनके बारे में ये चमत्कार है, पर देखो न, उनके चेले चाँटों ने कैसा अनर्थ मचा रखा है, उनकी आँखों के सामने और वे कुछ कहते ही नहीं है।

तीसरे हैं, जिनका खूब प्रचार चल रहा है, संसार भर में मगर देखो न कितना व्यय उनका अपनी निजी देह के संवारने पर हो रहा है इत्यादि-इत्यादि और इसी सत् विवेचना में मेरे मित्र श्री ओम जी

कपूर ने जिकर किया था इन फकीर संत का भी जिनके देहरादून पधारने की सूचना उन्होंने मुझे ऊपर कहे अनुसार दी थी, और समतावाद के प्रवर्तक महात्मा मंगतराम जी ही थे।

बारह बजे यह इत्तला मिली और साढ़े बारह बजे मेरे पास मेरे अजीज डाक्टर राम प्रकाश जी आ पहुंचे और कहा कि "भाई वे महात्मा जी आए हुए हैं।" मैने कहा, भाई ओमजी मुझे बता गए हैं। "कम चलोगे" उन्होंने पूछा! और तय हुआ कि अभी चला जाय खाना खाकर क्योंकि यही समय हम डाक्टरों के लिए जरा खाली सा होता है।

लिहाजा दो बजे दोपहर डा० राम प्रकाश जी तथा मैं दोनों जने श्री दीपचन्द जांच के बाग में पहुंचे, यहाँ घुसते ही गेट के पास ही माली से पूछा तो पता लगा कि गेट के दूसरी ओर जो कच्ची सी छोटी सी बरामदे वाली कुटिया है उसी में ठहरे हैं ये महात्मा जी।

"भाई इस समय हम मिल तो सकते हैं उनसे मैंने माली से पूछा "जी हाँ- वे तो हर समय यहीं बैठे रहते है। आप मिल सकते है। जबाब मिला।

मुझे एक-दो बार का संतों के पास जाने का यह भी अनुभव था, कि उनके साथ रहने वाले नीचे के शिष्य व स्वामी जी इत्यादि ही जवाब दे देते हैं कि आराम में है या आज नहीं मिल सकते, बहुत काम में है- परची पर नाम लिखवाकर भेजो या आप कौन है? मानो इस संत दरबार में भी आदमी आदमी देखकर इजाजत मिलती हो।

जैसे ही हम लोगों ने बरामदे के सामने साइकलें खड़ी की, महाराज जी लेटे से उठकर बैठ गए। पगड़ी सिर पर रखली हम लोगों के प्रणाम का हाथ जमीन के पास ही जोड़की सीधे - स्वभाव जवाब दे दिया।

हमने देखा कि एक सीधा सादा गांव का सा आदमी एक पगडी, कुर्ता और एक तहमद में चटाई पर पढ़ें कम्बल पर बैठा है- बढ़ी सादगी है उसके व्यवहार में संतों वाले बडप्पन का कोई सवाल ही नहीं है। वहाँ कोई ऐसी भावना नहीं देखी उनमें, कि मैं बड़ा हूँ - बड़ा भारी ज्ञानवान हूं अथवा इन लोगों से जो मेरे पास आए है - यह था पहले 3 या 4 मिनट का मानसिक विश्लेशण।

नाम पता पूछने के बाद महाराज जी ने कहा "करो प्रेमी जी कुछ सतविचार।"

"क्या सत विचार करें महाराज जी आप ही कुछ बताइये। हम तो आप के पास इस लिये आए है।"

फिर क्या बात चली और किस तरह चली ये कुछ ठीक से याद नहीं है किन्तु बातचीत होते होते फिर महाराज जी ने बतलाया कि सायँकाल इस समय से इस समय तक सत्संग होता है आया करो उस दिन सांयकाल को सत्संग में हम लोग सम्मलित हुए और बड़े खुशखुश घर लौटे और फिर तो नित्य का यह नियम बन गया कि दो बजे महाराज जी के चरणों में हाजिर हो जाना और सत्संग समाप्त होने के बाद साँयकाल **6** से **6.30** बजे अस्पताल काम पर वापस पहुँच जाना।

एक धार्मिक परिवार में जन्म लेने के नाते बचपन से ही सत्संग, स्वाध्याय व संतो के सम्पर्क का बड़ा अवसर मिला था (इस विषय में मैं अपने को भाग्यशाली कहूँगा) अनेकों संत देखे थे पर ऐसा एक न मिला था जो अपने साथ बराबर वाले की तरह मिला हो। सब में ही कुछ ऊँचे पने को भाव था और साथ हर मनुष्य के साथ प्रेम करने वाले महात्मा की तरह अपना निजी जीवन सादा समस्त भोग सामग्रियों से रहित और जीवन की हर घड़ी दूसरों की सेवा में और

हर समय दूसरे के कल्याण का भाव तो अन्य किसी सन्त के जीवन में जिनके साथ सम्पर्क आया देखने को मिला ही नहीं बाहर की रहन सहन और व्यवहार में आजकल के संतों जैसा अडम्बर और बड़प्पन का अभ्यास तक नहीं होता था और इन्हें देखकर कोई कह सकता था कि ये भी कोई महापुरूष है। इस सादे व्यक्तित्व में जिसकी ओर साधारणतया ध्यान तक न दे ये ही महापुरूष था जो संसार से अपनी प्रभुता और अध्यात्मिक क्षेत्र में अपनी उच्च स्थिती को छिपाए हुए झुलसे हुए प्राणियों को शीतलता पहुँचाने में संलग्न था।

प्रथम मिलन में ही (पहले ही दिन ऐसा लगा मानो मेरे मन की साध मिल गई। मेरे मन का आदर्श पुरुष मिल गया और मिल - गया मेरी बाँह पकड़ कर पार लगाने वाला किन्तु क्या महाराज जी, मुझे जैसे पामर को इतना लायक समझेंगे, कि मेरी बांह पकड कर मुझे भी रास्ते पर चलाते चलाते अपनी जैसी स्थिती प्राप्त करा दें जहाँ हर समय आनन्द ही आनन्द- समता समस्त संसारिक भोगो से और सुखों से उपरसता यहां तक कि अपने शरीर से भी उपरामता।

किस तरह फिर आगे गुरूदेव ने दास को अपने चरणों के ओर और नजदीक बैठने को मौका दिया अर्थात अपने चरणों में स्थान दिया, यह आगे की बात है।

अन्त में यह कहता हूँ कि आज तो महाराज जी के पास बैठकर बीती हुई ये घड़ियाँ - आपस का वह व्यवहार और बातचीत गुरुदेव की वह सारी बातें और उनके निजी जीवन का वह आदर्श ही है जो हम झुलसे हुओं हृदयों को एक मात्र याद के दो आँसुओं से ठंडा कर देता है- हृदय एकदम शीतलता महसूस करता है। मेरे मालिक की याद एक बार फिर यह ढाढ़स बँधाती है कि घबराओ मत- हम तुम्हारे साथ है, पर चलो तो सही कितना भाग्यशाली कहूँ मैं अपने को, जिसने ऐसा लामिसाल मुर्शिद पाया।।

संस्मरण (प्रथम दर्शन)

(नरेन्द्र कुमार जिन्दल, अम्बाला)

23 सितम्बर **1953** का दिन था। साँयकाल अचानक श्री गुरशरण दास जी से भेंट हुई। यह मेरे मित्र भी थे और हम दोनों एक ही महकमें में काम करते थे। उन्होंने बातों ही बातों में जिकर किया कि मेरे सत्गुरूदेव महाराज जी जगाधरी आश्रम में पधार चुके है, और कल **5.30** बजे साँयकाल की गाड़ी से हम कुछ लोग उनके दर्शनार्थ जगाधरी जा रहे हे और फिर मुझे कहने लगे अगर तुम्हारा चलने का विचार हो तो कल स्टेशन पर पहुँच जाना। इस पर मैंने उनसे प्रश्न किया क्या उनका नाम है? और किस प्रकार के वस्त्र वह पहनते है गेरुआ या सफेद।" इस पर प्रेमी ने श्री महाराज जी का नाम महात्मा मंगतराम जी बताया और वस्त्रों के बारे फरमाया कि सफेद कपड़े पहनते है। दास ने प्रेमी भाई से कहा कि में भी उनके दर्शनार्थ आपके साथ चलूंगा। मेरे मन में जिज्ञासा इसलिए उत्पन्न हुई कि न तो मैने ऐसा नाम कभी सुना था और न ही सफेद वस्त्रों में कोई संत देखा था। दूसरे रामायण का पाठ किया करता था जिसमें संत दर्शन की अपार महिमा वर्णन है। संस्कारों ने भी अपना कार्य किया।

साँयकाल की गाड़ी से हम सब लोग जगाधरी आश्रम रात्रि के **5.00** बजे के करीब पहुँच गये थे। इससे पहले मैं संगत समतावाद से परिचित नहीं था। यह मेरा पहला ही अवसर था अपने कमरे के बरामदे में श्री महाराज जी विराजमान थे एक गैस जल रहा था। बरामदे में दरी बिछी हुई थी। उसी दरी पर एक लोई बिछी थी। जिसपर श्री महाराज जी विराजमान थे बड़ी सादगी थी किसी प्रकार की कोई ठाठ बाठ, तकिया बगैरह वहाँ नहीं था। उसी दरी पर हम भी सब आकर बैठ गए। श्री महाराज जी शरीर से बड़े दुबले पतले थे।

खादी का एक बटन का कुर्ता सिर पर पगड़ी और धोती तहमत की शक्ल में बांधी हुई थी। आँखों में बड़ी चमक मालूम देती थी। चेहरे पर उदासीनता थी। कभी श्री महाराज जी आँखे खोलते और बन्द करके समाधिस्थ हो जाते दास उनके मुख को ही निहारता रहा। बड़ी ही शान्ति वहाँ महसूस हुई। जब श्री महाराज जी ने आँख खोली, फरमाने लगे प्रमियों कोई प्रश्न करो। एक प्रेमी ने आत्मा परमात्मा के बारे प्रश्न किया। श्री महाराज जी ने उसका बड़ा ही संक्षिप्त पुरदलील उत्तर दिया। उत्तर क्या था मुझे अब याद नही यह मेरा पहला अवसर था। न तो मैं किसी प्रेमी को जानता था सिवाय श्री गुरशरणदास के और न ही मैनें ऐसा माहौल अपनी जिन्दगी में देखा था। उस समय मेरी आयु 24 वर्ष के लगभग थी पर घर में माता पिता दादा दादी से मूर्तिपूजा के संस्कार विरासत में मिले थे। बचपन से पूजा पाठ और रामायण पढ़ने का स्वभाव था। कई प्रश्न उत्तर हुए परन्तु मुझे कुछ भी समझ नहीं पढ़ी। इतने में खाने की घण्टी बजी श्री महाराज जी ने सब प्रेमियों को खाना खाने और विश्राम करने के लिए कहा। खाना खाकर रात्रि को विश्राम किया। सवेरे नहा धोकर 7.00 बजे के करीब दास और कुछ प्रेमी श्री महाराज जी के कमरे में उपस्थित हुए और दंडवत प्रणाम करके उनके पास बैठ गये।

मैं मूकदर्शक ही बना रहा। पर मनमें अनेक प्रकार के विचार उठ रहे थे। श्री महाराज जी ने कहा "प्रेमियों कोई सवाल करों। जब कोई न बोला तो दास ने श्री महाराज जी से पूछा "महाराज जी मूर्ति पूजा का क्या लाभ है" श्री महाराज जी ने जो उत्तर दिया था वह बड़ा ही कठोर शब्दों में था और पंजाबी भाषा में था क्योंकि उस समय मेरे जैसे व्यक्ति को उसके रहस्य को समझ पाना बड़ा कठिन था परन्तु जब उनकी शरण में मैं आ गया अब वह मुझें भली प्रकार समझ में आता है। श्री महाराज जी के उच्चारण किये हुए शब्द अभी भी भली

प्रकार से याद है परन्तु मैं उनको दोहराना नहीं चाहता जिसे मैं पहले ही स्पष्ट कर चुका हूँ। परन्तु उन शब्दों का भावार्थ मैं प्रेमियों के लाभार्थ निम्न दे रहा हूँ।

"प्रेमी जी मूर्ति पूजा से कोई लाभ नहीं तुम हिन्दु लोग केवल मूर्ति पूजकर ही कल्याण चाहते हो जिस देवता की, भगवान की या पुरुष की मूर्ति पूज रहे हो उसके जीवन आदर्श की ओर तुम्हारा ध्यान नहीं जाता। जब तक उनके आदर्शमय जीवन को आप नहीं अपनाओगे, किसी प्रकार का भी कोई लाभ होने वाला नहीं जो ग्रन्थ और वाणी उन्होंने आप लोगो के लिए बनाए ह। उनका स्वध्याय करके जीवन में उन विचारों को धारण नहीं करते तब तक कोई लाभ उन ग्रन्थों के पढ़ने से होने वाला नहीं जो कौम अपने सत्पुरूषों की कदर नहीं करती वह तबाह हो जाती है। दूसरी कौमे आकर उनपर शासन करती है।"

यह बात आज तक दास को किसी ने समझाई नहीं थी। केवल रामायण का पाठ करने से कल्याण हो जायेगा यही धारणा स्वभाववश बनी हुई थी। प्रथम दर्शन में न तो मैं श्री महाराज जी के मरम भरे शब्दों को समझा था और न ही महाराज जी को मैं पहचान पाया। अगर मैं यह कहूँ कि श्री महाराज जी बड़े ऊंचे संत थे। यह मैं पहचान गया था। यह मेरी मूर्खता ही होगी। एक साधारण व्यक्ति ऐसी महान हस्ती को उनकी कृपा से ही जान सकता है। हाँ यह अब मैं कह सकता हूँ कि ऐसे सत्पुरूष का मिलाप होना ईश्वर की महान कृपा है जैसे रामायण में कहा है

"बिनु हरि कृपा मिले नहीं संता"

उसी दिन रात्रि के आठ बजे घर अम्बाला पहुँच गये। कई दिन वह श्री महाराज जी के शब्द मेरे कानो में गूंजते रहे और बार 2 श्री

महाराज जी का वह उदासीन चेहरा आँखों के सामनवे आता रहा अक्टूबर 1953 के सम्मेलन में तो दास न गया। परन्तु प्रेमी जी से पता चला कि श्री महाराज जी नवम्बर 1953 मास के आरम्भ में एक महीने के लिए अम्बाला पधार रहे हैं। मन में उनसे दोबारा मिलने की जिज्ञासा पूर्ण हुई।

2 नवम्बर **1953** को प्रेमी भाई श्री गुरशरणदास ने 7.00 बजे साँयकाल मेरे घर पर मुझे आवाज लगाई और कहा श्री महाराज जी अम्बाला शहर पधार चुके हैं। यह शब्द सुनकर मन बड़ा प्रसन्न हुआ और श्री महाराज जी के दर्शनार्थ में उनके साथ हो लिया। आगे का वृत्तान्त दूसरे संस्मरण में मैं वर्णन करूँगा जो कि बड़ा ही मार्मिक है। इसी समय के अन्तर्गत श्री महाराज जी की विशेष कृपा भी मुझे प्राप्त हुई थी। यह संतों की परम उदारता और परम दयालुता ही थी।

संस्मरण (हकीम राजारामदत्त, देहली)

सत्गुरूदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज कड़े खाँ के बाग में देहली पधारे। दास श्री महाराज जी के पास बैठा उनकी जीवन प्रणाली का अध्ययन कर रहा था और सोचता जाता था कि कितना कठिन तप, त्याग और वैराग्य है। इन्द्रियों पर कितना कट्रोल (काबू) है। शारीरिक व्यवस्था, खाना, पीना, सोना, जागना, सर्दी, गर्मी वगैरह पर कितना शासन है। जीवन का शास्त्र ने जो ऊँचा आदर्श भाव ही में पेश किया था वह आज साक्षात रूप में मौजूद है। जिन गाथाओं को केवल कानों से ही श्रवन किया था, आज आँखो से देख रहा हूँ। आश्चर्य की बात है, क्या मनुष्य जीवन में पेश किया था यह आज साक्षात रूप में मौजूद है। जिन गाथाओं को केवल कानों से ही श्रवन किया था आज आँखों से देख रहा हूँ। आश्चर्य की बात है। क्या मनुष्य जीवन में इस दरजे तक कमाल प्राप्त कर सकता है? लेकिन

किस तरह कितने तप और साधना के पश्चात कितने जन्मों में एक आदर्श रूपी भाव को अमली जीवन पेश किया जा सकता है। तभी तो श्री अरविन्द घोष जी ने कहा है कि यह इस युग की एक महान घटना होती है जब एक जीव मुक्तस्पी परम पद को प्राप्त कर लेता है क्योंकि वह प्रकृति के सब नियमों को तोड़कर आगे निकल जाता है।

यह कोई सुनी सुनाई कहानी न थी और नही कोई विचार, साक्षात पूर्णरूप मिसाल के रूप में श्री गुरूदेव जी अपने निजस्वरूप में विराजमान थे आँखों वाले देख रहे थे। मन वाले महसूस कर रहे थे। बुद्धिमान अनुभव कर रहे थे। मन में संकल्प उठा क्या कभी मुझे भी ऐसी मस्ती, परम शान्ति और समता स्थिती प्राप्त होगी।

इतने में अन्तर्यामी दयालु प्रभु श्री महाराज जी की कृपा दृष्टि सृष्टि पड़ी और फरमाया "लाल जी कोई प्रश्न हो तो करो" ऐसा शुभ अवसर प्राप्त कर हाथ जोड़कर श्री गुरुदेव जी के चरणों में प्रार्थना की, "महाराज जी! छोटा मुँह और बड़ी बात वाला मामला है कहने भी शर्म महसूस होती है क्षमा करें तो कहूँ। श्री महाराज जी फरमाने लगे, "हाँ कहो लाल जी संकोच करने की कोई बात नहीं। यहाँ जो कुछ भी है सब आप ही लोगों के लिए है कि एक समय राजा जनक ने भारतवर्ष के सब विद्वानों, रिषियों को निमंत्रण देकर बुलाया और भरे दरबार में प्रश्न किया। आजकल संसारी कोई तत्तवेता और ज्ञानी पुरूष है जो मुझे इतने समय में कि मैं जीन की रिकाब में पाँव रखें और घोड़े की पीठ पर पहुंचने से पहले ब्रह्म ज्ञान की प्राप्ति करा देवे। सब ऋषि मुनि हैरान थे कि यह कैसा राजा का मजाक है किसी को उत्तर देने का साहस न पडा था। दरबार में चारों ओर सन्नाटा सा छा गया। इतने में एक ऋषि बालक जिसके आठों अंग टेढ़े थे और नाम भी अष्टावक्र था। दरबार में उपस्थित हुआ और उसने राजा जनक की कामना को पूर्ण कर दिया। गाथा सच है? प्रभु जी!

ऐसा महान ब्रह्म ज्ञान क्या इतना शीघ्र और सुलभता से प्राप्त हो सकता है? यह सुनकर हजूर कहा राज जी मुस्करा दिये, यह रात ही है। घोड़े की पीठ पर जाने में तो काफी समय लग जाता है, अगर गुरू कृपा हो जाए और शिष्य सुपात्र हो, तो एक पलक के इशारे में काम बन जाता है।"

मैं ने श्री चरणों में हाथ जोड़कर निवेदन किया, प्रभु! अन्तर्यामी हैं। हम लोग भली भाँति अपनी कमजोरियों को जानते हैं और अच्छी तरह समझते भी है कि तप त्याग भक्ति योग तथा ज्ञान के साधनों के लिए न तो हम योग्य ही है और न ही इतना साहस है आयु का उत्तम भाग अज्ञान, भोग विलास और संसारी धन्धे में ही समाप्त हो गया। अब तो आयु के अन्तिम दिनों में शरीर निर्बल हो चुका। भोगों ने इसे भोग लिया, स्वभाव बिगड़ चुका है। भोगमय जीवन से आलस्य और आराम का जीवन बन गया है। ऐसे हालात में क्या हो सकता है कृपा करके बतायें कि मोक्ष प्राप्ति हेतु कोई सरल और शीघ्र प्राप्त होने वाला मार्ग है। जिसपर मनुष्य बगैर किसी साधना और कठिन तप के चलता हुआ अपने ध्येय को प्राप्त कर लेवे शिष्य होने के नाते भी हमारा अधिकार होता है कि गुरूदेव पिता श्री की अध्यात्मिक शक्ति का भाग प्राप्त करे और हम जैसे लोगों के लिए भी कोई सुलभ उपाय प्रभु प्राप्ति का हो सकता है?"

एक क्षण मात्र रुके बिना मुस्कराते हुए फरमाया "लालजी आत्म समर्पण यानी अपने आप को पूर्णरूप से प्रभु चरणों मे अर्पण कर देना, होना या न होना सुख दुःख, लाभ हानि, यश अपयश, जीवन मरण सबको प्रभु आज्ञा में देखना और अपने अहम् को मिटा देना, इससे बढ़कर सुलभ और समीप मार्ग प्रभु प्राप्ति का दूसरा नहीं। एक बार मनुष्य पूर्णरूप से प्रभु परायण हो जाये तो सहज में ही काम बन जाता है।"

संस्मरण (श्री अमोलकराम बख्शी पंजलासा निवासी)

यह प्रसंग मुझे किसी प्रेमी ने सुनाया था। अमृतसर में अन्तिम समय 3 व 4 फरवरी 1954 में कुछ प्रेमी श्री महाराज जी के पास बैठे थे उन्होंने श्री महाराज जी से प्रार्थना की "महाराज जी! आपके शरीर त्यागने के पश्चात हमारा क्या होगा और हमको किस के हवाले करके जा रहे हैं।"

श्री महाराज जी ने फरमाया "आप लोगों ने इनको अभी तक पहचाना ही नहीं यह कोई लाला की दुकान नहीं है कि ताला मर गया उसके पश्चात उसके बेटे ने दुकान सँभाल ली। इन्होंने एक व्यक्ति को नहीं हजारों को सतमार्ग पर लगा दिया है जो मेहनत करेगा, उसको फल मिलेगा। जिनके अन्दर यह रोशनी जायेगी यह किसी प्रकार से छुप नहीं सकती। चाहे वह कितना ही छुपाने का यत्न करे जो दीक्षा देने का अधिकारी हो अर्थात गुरुपद के योग्य हो प्रेमियों इन्तजार करो। आप लोगों को मुकम्मल लिटरेचर ग्रन्थ वाणी, विचार देकर जा रहे है। सौ वर्ष पश्चात लोग इसकी राही समझेंगे तो उस वक्त आप पछताओगे कि हमने बहुत बड़ी गलती की।

एक प्रवचन मे श्री सदगुरुदेव महाराज ने इस सम्बन्ध में निम्न शब्द बड़े आश्वासन के साथ फरमाए हैं।

(1) "जब सूरज पडेगा दुनिया देखेगी"

(2) "समय आने पर कोई न कोई होनहार पुरुष पैदा होकर इस घोर नास्तिकवाद के वातावरण को समाप्त करके अध्यात्मिक जीवन को पुनः स्थापित कर सकेगा। समय आने पर इस समतावादी संगठन के द्वारा सामाजिक जागरण कर सकेगा।"

(3) केवल मात्र यह कोशिश होनी चाहिए कि आत्मिक उन्नति करके अपने को उज्जवल करो। इस तरह से समतावादी संगठन में एक या दो भिक्षु भी हो गए जो कि समय पर अवश्य हो गए तो संसार को रोशन कर देंगे।

संस्मरण

(बाबू अमोलकराम बख्शी, पंजलासा)

श्री महाराज जी की अपार कृपा दृष्टि अनुसार दीक्षा प्राप्त हुई। उसके पश्चात एक दिन मैं अपने एक बुजुर्ग सम्बन्धी के साथ श्री महाराज जी के चरणों में उपस्थित हुआ।

श्री महाराज जी ने उन बुजुर्ग प्रेमी से पूछा प्रेमी कोई विचार रक्खो उस समय मेरे बुजुर्ग सम्बन्धी ने श्री महाराज जी से कहा।

प्रश्न : बुजुर्ग प्रेमी महाराज जी मुझे मेरी पाकिस्तान में रह गई जमीन जायदाद का क्लेम कब और कितना मिलेगा?

उत्तर : श्री महाराज जी - यह फकीर कोई क्लेम वगैरह दिलवाने वाले नहीं है। आप कई क्लेम इस जिन्दगी में खा चुके हो। अब अगले सफर (यात्रा) के बारे में कुछ पूछना हो तो पूछिए।

इस पर वह बुजुर्ग प्रेमी नाराज से हो गये और कहने लगे कि श्री महाराज जी हमारे हैं और इतनी सी बात बताने में मना कर दिया है। मुझे श्री महाराज जी ने कहा कि प्रेमी इन बुजुर्ग प्रेमी को तुमने बड़ा कष्ट दिया है इसलिए इनको घर पर ले जाओ। मैने श्री महाराज जी की आज्ञा का पालन किया और उनको घर पर छोड़ने के पश्चात मैं फिर श्री महाराज जी के दरबार में उपस्थित हुआ और उनसे क्षमा मांगी। तो उस समय श्री महाराज जी ने निम्न शब्द उच्चारण किये-

प्रेमी यह इस बरादरी के लोगों को अच्छी तरह जानते हैं। इन्होंने इनकी (श्री महाराज जी) कदर नहींकी। जो प्रश्न उन्होंने किया है वह तो योग की पहली जमात वाले से सम्बन्ध रखता है। यह लोग नहीं जानते कि यह (श्री महाराज जी) कहां तक पहुंच चुके हैं। यह लोगों के ऐसे सवालों का उत्तर देने के लिए नहीं आए। असल सवाल की ओर यह नहीं जाते।"

इसके अपेक्षा मैंने यह श्री महाराज जी के पास बैठकर अनुभव किया था कि किसी योग्य प्रेमी को ही दीक्षा देने की कृपा करते थे। अन्यथा तो वह प्रेमियों को महामंत्र देकर ही विदा कर देते थे।

एक बार मैंने श्री महाराज जी से प्रार्थना की कि में ऐसे महकमें में नौकर हूँ जहाँ कई बार स्नान करने का समय ही नहीं मिलता तो ऐसी हालत में अभ्यास कैसे होगा ?"

इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया, प्रेमी ! अभ्यास कभी भी किसी भी हालत में नहीं छोड़ना है। अभ्यास से कोताही करनी अपनी मूल बरबादी करनी है। तुम इस शरीर को बाहिर से साबुन मल मलकर साफ करते हो लेकिन आपके पेट के अन्दर किसी कदर गन्द भरा रहता है। जब उससे तुम्हारा शरीर भ्रष्ट नहीं है तो बाहर की मैल धोने से क्या साफ हो जायेगा ?

यह घटना मुझे मेरे चाचा श्री हीरानन्द जी ने सुनाई थी जो श्री महाराज जी के साथ पेशावर के कार्यालय में नौकरी करते थे।

पेशावर में श्री महाराज जी प्रायः प्रभुभक्ति में तल्लीन रहते थे और रात उस मालिक की याद में रहते थे। एक दिन की बात है कि श्री महाराज जी प्रभु की भक्ति में इतने लीन हो गये कि उन्हें समय पर प्रातः कार्यालय जाने की सुधि न रही जब श्री महाराज जी की समाधि टूटी तो काफी समय पश्चात अपने कार्यालय में गये। मन में

यह विचार चल रहा था कि आज बड़े आफीसर ने दफ्तर की निरीक्षण के लिए आना था यह तो बहुत बड़ी गलती हो गई। अब क्या होगा। यह विचार मन ही मन में चल रहे थे कि दफ्तर के बाहर खड़े एक चपरासी से पूछा कि आज हम देर से आये है आफिसर तो नाराज हुए होंगे, उनके बारे में आज क्या हुआ?

चपरासी ने तुरन्त उत्तर दिया "मंगतराम" आप तो दफ्तर में सबसे पहले आये थे और दफ्तर के निरीक्षण के समय आप उपस्थित थे, यह आप क्या कह रहे हो कि मैं देर से आया हूं। बड़ा ही आश्चर्य है। श्री महाराज जी ने समझा कि आज उनकी नौकरी समाप्त हो गई होगी यह कुछ मजाक कर रहा है।

फिर श्री महाराज जी कार्यालय के अन्दर गये और वहां अपने एक साथी से पूछा और उसने भी आश्चर्य से यही उत्तर दिया। इसपर श्री महाराज जी को यह विश्वास हो गया कि मेरे मालिक ने आज स्वयं उनके स्थान पर मेरे रूप में ड्यूटी दी है। उसी समय उन्होंने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और उन्होंने उच्चारण फरमाया कि जिस प्रभु ने उनके स्थान पर ड्यूटी दी है अब वह उन्हीं की नौकरी करेंगे।

“भगवान कृष्ण ने गीता में यह घोषणा की, कि हे अर्जुन! जो मेरे लिए ही मेरे को भजता है वह मेरा अनन्य भक्त है" उसके योग और क्षेम का मैं जिम्मेवार हूं। इस घटना से यह स्वतः सिद्ध हुआ कि प्रभु उसके योग और क्षोम के जिम्मेवार है जो उनको सच्चे मन से प्यार करता है।

संस्मरण

(बाबू अमोलकराम बख्शी, पंजलासा)

1939 में दिसम्बर मास में जब पूज्य महाराज जी ने हमारे गांव

बमनियाला (जो अब पाकिस्तान में है) में पधारने की कृपा की तो उन दिनों दास घर पर नहीं था। बड़ी कठिन तपस्या उस समय श्री महाराज जी ने यहाँ एक पहाड़ी पर की केवल एक बार श्री महाराज जी के लिए मेरे चाचा बख्शी हीरा नन्द जी चाय लेकर जाते थे। किसी को उस समय झोपड़ी खोलने या अन्दर जाने की आज्ञा न थी।

हमारे गांव के साथ ही भलोट नाम के गांव का एक फकीर था जिसको पता चला कि एक हिन्दू पीर पहाड़ी पर चिल्ला काट रहा है, और किसी को रात झोपड़ी में जाने की आज्ञा नहीं है। इसके बावजूद वह रात को यहाँ पहुँचा तो साथ की पहाड़ी में आवाज सुनी। वह आवाज उसके कहने के अनुसार "तू ही" "तू ही" थी। जब वह मुसलमान फकीर उस आवाज की तरफ बढ़ा और निकट गया तो यह आवाज साथ वाली पहाड़ी की तरफ से आने लगी। यानी वह फकीर सारी रात इस प्रकार इधर उधर भटकता रहा। दूसरे दिन फिर वह फकीर रात को श्री महाराज जी की झोंपड़ी की ओर गया तो क्या देखता है कि झोंपड़ी के पास एक शेर बैठा है। इससे यह डर कर वापिस अपने स्थान पर चला गया। तीसरी रात फिर झोपड़ी के पास गया तो क्या देखता है कि श्री महाराज जी की टाँगें एक ओर पड़ी है। बाहें एक ओर पड़ी है और सिर किसी और स्थान पर पड़ा है। उसके पश्चात वह फकीर रात को उस ओर नहीं गया। परन्तु जब श्री महाराज जी ने तपस्या समाप्त की तब वह मुसलमान फकीर ने श्री महाराज जी के चरणों में माथा टेक कर क्षमा माँगी उस की तरफ से और संगत की ओर से इस सब हालात के बारे पूछने पर श्री महाराज जी ने टिप्पणी करते हुए फरमाया कि यह कोई विशेष बात नहीं थी। उस मुसलमान फकीर के मन में जो कल्पना उठी थी। वैसा ही दृश्य उनको झोंपड़ी के पास नजर आता था।

यह बात बतानी आवश्यक है कि मैं इस घटना के समय घर पर

नहीं था घरवालों ने ही मुझे यह सब हालात बताए थे। यह कहना अनुचित है कि कुछ मुसलमान हथियारों सहित श्री महाराज जी की झोंपड़ी की ओर गये थे। यह कहना अक्षरशः सत्य है कि उस आसपास के इलाके के मुसलमान लोगों की श्री महाराज जी के प्रति अपार श्रद्धा व प्रेम था। श्री महाराज जी के तप के पश्चात वहाँ पर यज्ञ हुआ। जिसमें हिन्दू व मुसलमान जनता ने इकट्ठे बैठकर लंगर पाया। फकीरों के दरबार में सब को एक निगाह से देखा जाता है। वहाँ पर कोई भेदभाव नहीं था ऐसा दृश्य यहाँ स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

संस्मरण

(बाबू अमोलकराम बख्शी, पंजलासा द्वारा)

यह संस्मरण मैनें अपने चाचा बख्शी हीरानन्द जी से श्रवण किया था जो कि श्री महाराज के साथ पेशावर में नौकरी करते थे। यह उनकी आँखों देखी घटना है।

श्री गुरू महाराज कल्लर कस्बे में आठवीं तक पढ़ाई करने के पश्चात अपने घर गंगोठियां पहुंचे कुछ घरेलू लाचारियों व अपनी पूज्य माता जी के आदेश अनुसार पेशावर (जो इलाका अब पाकिस्तान में है) में मिलिट्री एकाउण्टस डिपार्टमेन्ट में नौकरी करनी पड़ी।

उन दिनों मेरे चाचा बख्शी हीरा नन्द जी भी श्री महाराज जी के साथ नौकरी करते थे। अन्य कुछ साथियों सहित यह लोग एक ही स्थान पर रहते और भोजन भी बनाया करते थे। सर्दी का मौसम था। खाना खाने पश्चात् यह सब साथी तन्दूर के पास आग सेंक रहे थे। तन्दूर में लकड़ियाँ जल रही थी और वह तपकर लाल हो गया था।

उसी समय भक्त प्रहलाद व उनके पिता श्री हिरण्यकश्यप का वर्णन चल पड़ा।

उस समय श्री महाराज जी ने फरमाया कि देखो प्रहलाद को ईश्वर पर भरोसा था और जब उसके पिताजी ने प्रहलाद को एक बहुत गर्म लोहे के खम्बे से लिपट जाने की आज्ञा (हुक्म) दी। उस समय प्रहलाद को भय लगा और मन ही मन सोचने लगा कि अब बचना कठिन है। उसी समय प्रभु कृपा से गरम खम्बे पर एक चींटी चलती हुई दृष्टि से गोचर हुई। उस समय भक्त प्रहलाद को पूर्ण विश्वास हो गया कि अगर यह छोटी सी चींटी इस लाल गरम खम्बे पर चल सकती है और इसका जरा सा भी प्रभु कृपा से अनिष्ट नहीं हुआ तो मुझे भी इसको लिपट जाने से किसी भी प्रकार की हानि नहीं होगी और भगवान को स्मरण करके भक्त प्रहलाद उस खम्बे से लिपट गये और उसका जरा सा भी बाल बांका नहीं हुआ।

मेरे चाचा बख्शी हीरानन्द जी बड़े हठी थे और उन्होंने उसी समय बड़े कड़े शब्दों में खण्डन किया कि ऐसा होना असम्भव है और वाद विवाद आरम्भ कर दिया। श्री महाराज जी ने इस सम्बन्ध में मेरे चाचा जी को बहुत समझाया। जब यह समझाने बुझाने पर जरा से टस से मस नहीं हुए तो इस पर मेरे चाचा ने श्री महाराज जी से कहा, अगर ऐसा ही है तो दिन रात जिस प्रभु का आप नाम लेते हो जरा इस जलते तन्दूर में अपनी टांग डाल कर दिखाओ देखें आपकी वह कैसे रक्षा करता है। फिर भी श्री महाराज जी ने उन्हें समझाने का प्रयत्न किया परन्तु उन पर किसी भी बात का प्रभाव न पड़ा।

प्रभु प्यारे भक्तों की लाज रखते आये है उसी समय श्री महाराज जी ने अपनी टाँग तन्दूर (जलते हुए) में डाल दी। पास में बैठे हुए तमाम साथी भयभीत हो गये और झटपट श्री महाराज जी की टाँग

तन्दूर से निकाल दी और उन्हें तन्दूर से परे ले गये।

आश्चर्य की बात यह है कि टाँग जलने की तो दूर की बात है यहाँ टाँग का एक बाल भी न झुलसा था। प्रभु भी दिव्य है उनके खेल भी दिव्य है। जो चीज़ असम्भव हो वह भी सम्भव हो जाती है। यहीं उनकी अश्चर्ज माया है। श्री महाराज जी ने अपनी अनुभवी वाणी में फरमाया है।

"साची प्रीती राख के जो सिमरन करे दयाल ।

बाल ना बाँका कर सके चक्रवर्ती भूपाल । "

इस घटना के पश्चात श्री महाराज जी ने बहुत पश्चाताप किया और रोकर कहा कि इन्होंने अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं करना था और यह भूल जो अचानक इनसे हो गई वह बहुत पीछे चले गये और काफी समय तक इनको अपनी इस भूल का पश्चाताप करना पड़ेगा। इसके पश्चात जब भी मेरे चाचा श्री हीरानन्द जी श्री महाराज जी से मिलते थे तो उन्हें पश्चाताप ही इस घटना का करते पाया ।

यहाँ पर यह बताना ठीक होगा कि श्री गुरू महाराज जी किसी भी प्रकार की ऋद्धि सिद्धि दिखलाने के पक्ष में न थे और अपने शिष्यों को भी इस बारे में विशेष तौर से मनाही थी। यदि हम इस महान सत्गुरु महात्मा मंगत राम जी के जीवन का अध्ययन करें तो हमें पता चलेगा कि उनका जीवन चमत्कारों से कम नहीं। उनका जीवन इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है।

संस्मरण

(श्री संत राम गोसाँई, काहनुवान)

1947 में देश के विभाजन के पश्चात् काहनुवान जिला गुरदासपुर में एक अध्यापक की नौकरी स्कूल में मिली। 1950 में

दूसरी बार श्री महाराज जी काहनुवान पधारे। उप्पल वंश के लाला जी के बगीचे में उनको ठहराया गया जो आबादी से बहुत दूर था। संगत की ओर से सांयकाल का समय सत्संग के लिए निश्चित हुआ। बाहिर से भी कुछ प्रेमी आए थे प्रेमियों के खाने और रहने का प्रबन्ध हकीम जसवन्तराय जी की ओर से था। कस्बे की संगत भी सत्संग से लाभ उठाती थी। दास पर अभी नामदान की कृपा नहीं हुई थी। एक वर्ष पहले भी सत्संग के विचारों से लाभ उठाया था। कुछ अन्य जानकारी हकीम जसवन्तराय जी से मिल गई थी। सत्संग में श्रद्धा बढ़ती जा रही थी। समय पर सत्संग में पहुँच जाता था। इस बात का दुःख मन में था कि सत्पुरूष से सम्पर्क के लिए शारीरिक तौर पर बहुत कम समय मिला था। फिर भी वह हमारे अंग संग है।

एक अनोखा अनुभव हुआ कि श्री महाराज जी चमत्कार या करामात दिखाने में विश्वास नहीं रखते थे लेकिन सूर्य से जब किरणें फूटती है तो इन्हें रोक सकना अति कठिन है। प्रतिदिन मैं और मेरे साथी डाक्टर ब्रह्मकुमार उप्पल सत्संग में आया करते थे और हम दोनों कुछ धार्मिक प्रश्न सोचकर आते थे कि आज सत्संग के पश्चात यह सवाल पूछेंगे। लेकिन होता यह कि जो प्रश्न पूछने होते उन सभी प्रश्नों का उत्तर श्री महाराज जी अपने प्रवचन में ही दे दिया करते थे। जब प्रवचन की समाप्ति पर श्री महाराज जी फरमाते "प्रेमियो कोई बात पूछनी हो तो अवश्य पूछो तो हम दोनों एक दूसरे के मुंह की ओर देखकर चुप रहते तीन चार दिन ऐसा ही होता रहा। वापसी पर हम फिर यही विचार करते हुए घर पहुँचे, कि महात्मा तो बहुत देखे सुने हैं परन्तु ऐसा नहीं देखा कि जो प्रश्न पूछना हो तो उसका उत्तर बिना पूछे ही दे देवे.....यह महात्मा बहुत पहुँचे हुए लगते हैं। जो मन की बात बिना बताए जान लेते हैं आदि-आदि।

एक दिन श्री महाराज जी ने कहा "डाक्टर साहिब कोई विचार

हो तो करो।" डाक्टर साहिब ने कहा "महाराज जी पूछें क्या, जो कुछ पूछने का हम निश्चय करके आते है उसका उत्तर तो आप बिना पूछे ही दे देते हैं पूछने या कहने की कोई बात रहती ही नहीं।" श्री महाराज जी ने मेरी ओर देखकर हल्की सी मुस्कराहट "मास्टर जी आपने क्या समझा।" मैंने हाथ जोड़कर निम्न दोहा कहा:

"अनन प्रीति चरण की मन से आई समाये ।

'मंगत' सब सुख पाया जो वर्णन में नहीं आये"

श्री महाराज जी ने पूछा "तुमने यह दोहा कहाँ से लिया। दास ने का "पाकिस्तान बनने से पहले रसाला मार्तण्ड में उर्दू में पढ़ा था और कण्ठस्थ कर लिया था। 1947 में इधर आते ही मैंने हकीन जसवन्तराय जी को सुनाया था और पूछा था "कि यह महात्मा जी कहाँ रहते हैं। हकीम जी ने उत्तर दिया था कि इनके दर्शन यहीं हो जायेंगे"। सो महाराज जी अब आपकी कृपा हो गई। इसके पश्चात् श्री महाराज जी ने अपनी अन्तर्दृष्टि के सम्बन्ध में बताने की बात कह कर टाल दी कि कभी ऐसा हो जाता है कि प्रश्नकर्ता का उत्तर व्याख्यान में आ जाता है क्योंकि प्रायः लोग ऐसे ही सवाल करते हैं जो धर्म के सम्बन्ध में हो।

ऐसी अद्भुत शक्ति और इसे छिपाये रखने की महानता देखकर सब श्रोताओं की श्रद्धा और जिज्ञासा को शक्ति मिली और सत्संग में उपस्थित होने की रुचि बढ़ती गई।

संस्मरण

(श्री संतराम गोसाँई, काहनुवान)

सन् 1952 मार्च के महीने की बात है। बच्चों की परीक्षाएं हो

चुकी थीं। हम पांच स्कूल मास्टर गुरदासपुर गए। कोई विशेष सरकारी काम भी था। यहां से लौटते समय शाम हो चुकी थी। शहर से बाहर ही यह सड़क थी जो साईकल सवारों को नहर की पटड़ी से मिलाती थी। इस सड़क पर पहले टूटा फूटा सिनेमा हाल आता है। बाहर के बोर्ड पर लिखा था "माया मच्छन्दर"। साथी कहने लगे यह पिक्चर तो अवश्य देखनी चाहिए। मैंने इंकार कर दिया। उन्होंने हठ किया और कहा इसमें कोई बुरी बात नहीं है। गुरू मच्छन्दरनाथ को इनका शिष्य गोरखनाथ एक मायाजाल से निकालता है। अन्त में उन्होंने मुझे मना लिया। मुझे बार-बार याद आ रहा था कि श्री महाराज जी ने सिनेमा थियेटर देखने को मना किया हुआ है। इससे गन्दे विचार मिलते हैं। मगर मेरी पेश नहीं चली। बे मन से थोड़ा बहुत देखा और बीच में ही छोड़कर चल पड़े। दूसरे साथियों को भी इसमें कोई रुचि वाली बात नज़र नहीं आई। चाँदनी रात थी। रात के 11.30 बजे बातचीत करते घर पहुंच गये।

खाना खाने के पश्चात् सोने के लिए बिस्तर पर लेटा पर नींद नहीं आई। रह रह कर मन मे पश्चाताप हो रहा था कि श्री महाराज जी की आज्ञा का उलंघन हो गया। जैसे तैसे रात कटी प्रातः स्कूल गया और निश्चय किया कि आज ही श्री महाराज जी को पत्र लिखकर अपनी इस भूल की क्षमा माँगूगा। जम्मू श्री महाराज जी को पत्र लिखकर डाल दिया। कुछ हद तक मन को थोड़ी चैन सी मिली परन्तु तीसरे चौथे दिन प्रतीक्षा के कारण फिर बेचैनी आरम्भ हो गई। विचार किया अगर शनिवार तक श्री महाराज जी का कोई पत्र न मिला तो रविवार को स्वयं हजूर के दरबार में उपस्थित हो जाऊँगा। परन्तु श्री महाराज जी की अपार दयालुता के कारण शुक्रवार को पत्र मिल गया।

श्री महाराज जी ने पत्र में फरमाया था "प्रेमी पत्र मिला, तुमने

बहुत गलत काम किया है। तुम्हारे जैसे सुलझे व पढ़े लिखे आदमी। हमें ऐसी उम्मीद नहीं थी, मगर चूंकि तुमने अपनी गलती को जल्दी मानकर इधर लिख दिया है इसलिए इस बार माफी दी जाती है। आइन्दा ऐसा हरगिज नहीं करना होगा। छोटी छोटी बातों में रात का मुतलाशी साधक अपने मार्ग से फिसल जाए, यह कोई दानाई की बात नहीं है। तुम लोगों पर बहुत सी जिम्मेवारियाँ हैं। इस समा शांति का प्रसार कैसे कर सकोगे, जो ऐसी निकम्मी गल्तियाँ बार बार करोगे। इस मार्ग में तो कई तकलीफें बरदाश्त करनी पड़ती है। जान मारनी पड़ती है। हमेशा गुरु की रहनी को ध्यान में रखकर नाम सिमरण अभ्यास बढाओ। मन को काबू में रक्खो मालिक कृपा करेंगे । बहुत बहुत आशीर्वाद"

माफी मिली तो जान में जान आई। भविष्य के लिए प्रण किया कि आयु पर्यन्त सिनेमा नहीं देखूंगा।

संस्मरण

(श्री संतराम गोसाई, काहनुवान)

1951 की सर्दियों में परमपूज्य परमयोगीराज महात्मा मंगतराम जी महाराज ने काहनूवान पधारने की कृपा की। इसी समय मेरे पापी मन में श्री महाराज जी के दैनिक प्रोग्राम की देख परख हो चुकी थी। रात को बहुत अंधेरे इनका सीमे की नहर पर (जहाँ अप समतायोगाश्रम है) जाना, शोध आदि के पश्चात एक बड़वृक्ष के नीचे शान्ति से कम से कम तीन घंटे समाधिस्थ हो जाना। वापसी में दिन चढ़ आना और अपने ठहरने के स्थान पर आकर 2 मिनट मे स्नान करके अपने आसन पर बैठ जाना केवल चाय पर सारा दिन गुजर जाता था। दिन रात श्रद्धालुओं की शंका निवारण में लगे रहना, यह सब अच्छी प्रकार देखकर निश्चय किया कि चाहे मैं इस कृपा का पात्र

नहीं हूँ, फिर भी प्रयत्न तो करना चाहिए।

मैनें हकीम जसवन्तराम जी से प्रार्थना की कि मेरी सिफारिश श्री महाराज जी से कर दो ताकि नादान को कृपा हो जाए। मैंने उसी दिन से खाना छोड़ दिया। हकीम जी श्री महाराज जी से मेरे लिए हाथ जोड़कर प्रार्थना की। दो दिन ऐसी ही समाप्त हो गये परन्तु सत्संग में मैं प्रतिदिन उपस्थित होता था। श्री महाराज जी यह कहकर टालते रहे "देखो हकीम जी इन लोगों ने बहुत कुछ देखा हुआ होता है और फिर आप कहते हो यह गोसईं है यह भी गुरु वंश से है, पता नहीं इनके कैसे विचार है?"

तीसरे दिन हकीम जी ने सत्संग के पश्चात पुनः प्रार्थना की और कहा "मास्टर जी ने तीन दिन से खाना नहीं खाया और कहते है जब श्री महाराज जी की कृपा होगी तभी कुछ ग्रहण करूँगा।"

श्री महाराज जी ने पूछा कि इस समय यह कहाँ है। हकीम जी ने कहा "यह बाहिर बैठे हुए हैं" श्री महाराज जी ने आदेश दिया कि उन्हें अन्दर बुला लाओ।

ज्योंही म मैं अन्दर गया श्री महाराज जी ने फरमाया "प्रेमी इस प्रकार हट करने से यह वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती, यह तो दबाव से लेने वाली बात हुई। दास ने उस समय श्री महाराज जी से कहा "महाराज जी किसी हठ या दबाव की बात नहीं, केवल ब्रत है और बारम्बार आपके चरणों में विनती है, कृपा करके मुझे निहाल करें।"

श्री महाराज जी फरमाने लगे "क्या आपने आगे भी किसी से नाम लिया है" मैंने कहा "जी हाँ"

श्री महाराज जी "किस से नाम लिया है"

दास ने कहा "अपने जो कुलगुरु है, उन्होंने मेरे विवाह के

अवसर पर कण्ठी बाँधकर गायत्री मन्त्र मेरे कान में डाला था। चूंकि मेरे पिताजी ने गायत्री मंत्र और ऐसे कई मंत्र द्वादस अक्षर मंत्र, शिव मंत्र और स्तुतियाँ बचपन में ही सिखा दी थीं। इसलिए मैंने उसी समय शुद्ध शब्दों में मंत्र के अक्षर और अर्थ बता दिया था"

थोड़ा चुप रहने के पश्चात् श्री महाराज जी ने पूछा "अपने वंश की परमपरा से क्या कुछ गुरु शिख्या का काम भी है।"

दास ने उत्तर दिया "जी हाँ, 600 घरों की सेविकाई हमारे बाबा जी के भाग में आई थी, मेरे दो बाबा जी तो आयुपर्यन्त कुंवारे रहे, छोटे बाबा जी की इन्होने शादी करवा दी थी और वह पालकियों में बैठ कर सेवकों के यहाँ जाते थे मेरे पिता जी ने पालकियों का मामला छोड़ दिया, वह बहुत अच्छा घोड़ा रखते थे और इनके साथ तीन चार सेवादार जाते थे।"

श्री महाराज जी ने पूछा "क्या तुम भी सेवकों के यहाँ दान दक्षिणा प्राप्त करने के लिए जाते हो?

दास ने कहा "मेरे बड़े भाई प्रायः जाते हैं, अगर कोई विशेष तौर से बुलाए तो जाता हूँ क्योंकि मैं स्कूल में टीचर हूँ। इतना अवकाश कहाँ, दूसरे न तो कोई आवश्यकता है और न ही कोई भाव है।"

फिर श्री महाराज जी ने पूछा "तुम कौन सा मंत्र देते हो।" दास ने कहा "महाराजी, ब्राह्मण को तो गायत्री मंत्र और अन्य को "ओं नमो भगवते वासुदेवाय" का द्वादस मंत्र ।

उसी समय श्री महाराज जी ने मुझ से पूछा "इधर से जो मंत्र लोगे, क्या वह अपने सेवकों को दिया करोगे?"

एक मिनट मौन के पश्चात् दास ने कहा "नहीं, महाराज जी

जब मैं आपका शिष्य बन जाऊँगा तो गुरूपन छोड़ दूंगा, एक मनुष्य एक समय में एक ही रूप हो सकता है, या शिष्य या गुरु।

श्री महाराज जी ने फरमाया "जानते तो तुम बहुत कुछ हो पर मानने का पता नहीं।"

मैंने श्री महाराज जी से कहा "अबके पश्चात वही करूंगा जो आज कहेंगे, मेरे पिताजी ने यह कह दिया था कि अब गुर गूँगे, गुर बावरे का जमाना चला गया, काम करके रोटी खा, और यह बात मैंने पल्ले बाँध ली है" श्री महाराज जी ने उसी समय फरमाया "ठीक है प्रातः थोड़ा परशाद लेकर आ जाना"

रात बही प्रसन्नता से व्यतीत हुई, सुबह नहा धोकर परशाद लेकर हजूर के दरबार में उपस्थित हुआ। श्री महाराज जी की विशेष कृपा हुई।"

श्री महाराज जी ने उस समय दास को चेतावनी दी "यह मंत्र किसी को नहीं देना, जब तुम अन्दर उस तत्व को पा लो तब दे सकते हो, उस पात्र की भली भाँति परीक्षा करके।" दास ने चरणों पर सिर रख दिया और मेरे मालिक ने अपना दायाँ कर कमल मेरे सिर पर रख दिया। फिर हकीम जी जो बाहिर कुछ प्रेमियों व पूज्य भक्त जी के साथ बैठे थे बुलाकर फरमाया "जाओ अब इनको खाना खिलाओ, तुम्हें अच्छा भाई मिल गया है।" बाहर जाकर मैंने पूज्य भक्त बनारसीदास जी को प्रणाम किया, उन्होंने मेरे प्रसन्नता के आँसू अपने दुपट्टे से पूँछ दिये।"

संस्मरण

(श्री सालिगराम जी एडवोकेट की सुनाई हुई घटना श्री चुन्नी लाल जी के द्वारा)

मेरे भाई ने बताया कि आजकल गंगोठियों में महात्मा मंगतराम जी महाराज एक प्रसिद्ध व अनुभवी महात्मा है आजकल उनकी बड़ी चर्चा है। यह भी पता चला कि वह बाल ब्रह्मचारी भी है और उनके विचार बहुत ऊँचे और सत्य पर आधारित ह । परन्तु ऐसा भी कि वह विद्वान नहीं केवल मामूली सी उर्दू की शिक्षा है और सुना है बड़े ही साधारण व्यक्ति है। दोनों ने यह विचार किया कि रविवार की छुट्टी है गंगोठियां जाकर उनसे भेंट व वार्तालाप करके किसी नतीजे पर पहुँचा जाए क्योंकि बगैर शास्त्रों, वेदों, उपनिषदों और वेदान्त ग्रन्थों के अध्ययन के बिना आत्मा परमात्मा का ज्ञान कठिन है।

निश्चित प्रोग्राम के अनुसार गंगोठियां पहुंचे महात्मा जी संगत में प्रवचन कर रहे थे। कुछ समय पश्चात महात्मा जी हम दोनों अजनबियों की ओर देखा और फरमाया "आप लोग कहाँ से आए हो" हम ने कहुटा से आना बतलाया और कहा कि आपके दर्शनों के लिए आए है।

कुछ समय के पश्चात श्री सालिगराम जी ने बिनती की, महाराज जी! एक प्रश्न का उत्तर देने की कृपा करें।

श्री महाराज जी ने फरमाया "क्या प्रश्न है" श्री सालिगराम जी ने कहा "महाराज जी यह संसार सत है या असत्य"

श्री महाराज जी प्रश्न सुनकर कुछ मुसकराये और फरमाया कि "आप भी अच्छी जिज्ञासा और सूझबूझ वाले जान पड़ते हैं। इसलिये पहले यह बताएँ कि आपके विचार में यह संसार सत्य है या असत्य

बख्शी सालिगराम जी ने यह प्रश्न परीक्षा के लिए किया था और वह यह जानना चाहते थे कि महात्मा जी की विद्या व अनुभवता कितनी है। उन्होंने उतर दिया मेरे विचार में यह संसार सत्य है क्योंकि श्री महाराज जी यह आप और आप की संगत बैठी हुई है। इधर हम दोनों बैठे हैं और वह सामने गाय भैंस जारही है वह किसान हल और बैल जोते जा रहा है। यह वृक्षों पर पंछी बैठे नजर आ रहे हैं आदि-आदि।

श्री महाराज जी ने फरमाया "आपके ख्याल में संसार सत है तो यह रात ही है तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं"

सालिगराम जी ने कहा "महाराज जी! आप बताने का कष्ट करें कि यह सत्य है या असत्य क्योंकि हम गृहस्थी अज्ञानी होते हैं। महात्मा लोग अनुभवी और सिद्ध पुरुष होते हैं, इनका कथन ही सत्य माना जाता है। असलियत को जानने के लिए ही तो आपके चरणों में पधारे है।

इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया "हमारे विचार में यह संसार असत्य है।"

सालिगराम जी ने कहा "इसे साबित करके दिखाएँ ताकि निश्चय में दृढता प्राप्त हो।"

इस पर महाराज जी ने फरमाया "सिर्फ पाँच मिनट के लिए आप अपनी आँखें और मुंह बन्द करलें कानों में उंगलियों डाल लें। पूर्ण कोशिश से मन को एक जगह पर खड़ा रखें। किसी प्रकार का कोई संकल्प विकल्प न उठाएँ और समभाव व समानता का मुजस्समा (तसवीर) बन जाये सालिगराम जी ने ऐसा ही किया।

पाँच मिनट पश्चात् महात्मा जी ने आँखे, कान और मन वगैरह को खोल देने को कहा और पूछा कि अब आप ये बताएँ कि थोड़े

समय में आपको संसार जान पड़ा कि नहीं”

प्रेमी ने उत्तर दिया "महाराज जी! इस थोड़े अरसे में संसार का नाम तक न पाया।"

महाराज जी ने फरमाया "जो चीज सत होती है उसका कभी बाध नहीं होता, चूँकि तुमने खुद (स्वयं) माना है कि इस वक्फा (इस समय) में संसार नहीं पाया गया। इसलिए संसार असत है। सतवस्तु सिर्फ (केवल) आत्मा है जिसका कभी भी बाध नहीं होता। जाग्रत, स्वप्न सुषुप्ति और तुरिया चारों अवस्थाओं में बराबर मौजूद है। इसलिए यह भी केवल सत है और जगत मिथ्या है। जिसका तुमको तजुर्बा (अनुभव) हो गया है। मशहूर सूफी सन्त दादू दयाल जी ने कहा है।

"दादू दूसरा कोई नहीं, दूसरा मन की दौड़,
दौड़ मिटी शंशे गया, वस्त ठौर की ठौर"

अर्थात सिवाय परम पिता परमात्मा के कोई दूसरी वस्तु है भी नहीं मन की दौड़ धूप और यह संकल्प विकल्प भी दूई का नजारा दिखा रहे हैं। जब मन साकिन (ठहर) हो जाता है चित्तवृत्ति का निरोध होता है। समता भाव की प्राप्ति होती है तो सब नजारे (दृश्य) जो मायावी धोखे से खत्म होकर वही सत वस्तु आत्मा ज्यूँ का त्यूँ भसता है और अपने वास्तविक स्परूप की प्राप्ति होती है।

"सब जग रूप ब्रह्म का भेद भरम नहीं कोए।
'मंगत' सत तत्त खोजिए फेर जन्म नहीं होए” ।।

आत्मा शुद्ध पवित्र एक रस अपने आप में स्थित है। यह संसार भरम जान पड़ता है। सूर्य गंगाजल में चमकने के कारण ज्यादा पवित्र नहीं हो जाता और शराब में उसका अक्स पड़ने से अपवित्र नहीं हो

जाता यही हाल आत्मा का जानो। सूरज की इतनी ऊमर (आयु) होगी। इसने अंधेरा कभी ख्वाब (स्वप्न) में भी नहीं देखा। दिन रात.अंधेरा उजाला यह सब जमीन के लिए है। सूरज में न कभी रात पढ़ी और न कभी दिन चढ़ा है। इस तरह आत्मदेव के लिए अज्ञान कहाँ। थियेटर का तमाशा देखते वक्त (समय) यह मुमकिन (सम्भव) है कि लोग इस नाटक से धोखा खा जाएँ और नाटक वालों के साथ रोने और हँसने लग जायें। विशेषकर उस वक्त जबकि इस बात को भूल जाये कि जो कुछ सामने हो रहा है वह महज (केवल) खेल या तमाशा है इससे ज्यादा और कुछ नहीं इस तरह दुनिया और संसार की हकीकत का नाटक देखते वक्त धोखा खाया जाना मुमकिन (संभव) है। इसलिए इस आला सदाकत को जिसके सहारे तुम खड़े हो दिल में पक्के तौर से बिठाये रक्खो और अपनी आत्मा को हर समय अपनी आँखों के सामने रक्खो इस तरह अपने आपको धोखे में न रहने दो। मानुष जन्म दुर्लभ है अपने सतस्वरूप आत्मा में अभ्यास द्वारा क्याम (निवास) का राज (भेद) खुल जाएगा कि जगत मिथ्या और कलिपत है आत्मा सत वस्तु है जगत को देखने आये हैं, करतारको देखकर जाओ। कथनी और करनी से आग जाकर रहनी में जिस वक्त प्रवेश करोगे उस वक्त अन्तरस्वरूप आत्मा को पहचान पाओगे।"

"झूठ पसारा जगतका सिरजनहार सच एक।

बाजी झूठ बाजीगर साचा एह बिध लिखया लेख" ॥

महाराज जी का इतना उपदेश सुनकर हम दोनों गदगद हो गए। महाराज जी के सम्बन्ध में जो कुछ सुन रक्खा था वह सत था। महाराज जी को प्रणाम करके हम दोनों कहुटा वापिस जाए। महापुरूषों की महिमा अपार होती है इसका बखान (वर्णन) कौन कर सकता है।

संस्मरण

(श्री रामजी फोतेदार ए-193 नेहरू विहार, देहली-110054)

मैं मटन कश्मीर का रहने वाला हूँ। श्री सतगुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज के पवित्र दर्शन पहली बार जून 1940 में हुए। जबकि वह पहली बार जलमादा, कोहाला आदि से होते हुए चनारी (जो अब पाकिस्तान में स्थित है) पधारे थे। रात्रि मन्दिर, धर्मशाला में व्यतीत कर भक्त बनारसीदास जी के साथ मेरे डेरे पर जाए। उनके प्रथम दर्शन से ही मैं अति प्रभावित हुआ और ऐसा अनुभव हुआ कि साक्षात ईश्वर ही साकार रूप में मुझे दर्शन देकर कृतार्थ कर रहे हैं। मैं चनारी के डाकखाने में चार-पाँच वर्ष से सबपोस्ट मास्टर था। इसी कारण मुझे वहाँ के हर प्रकार के हालात से जानकारी थी। दो तीन दिन श्री महाराज जी मेरे पास ही ठहरे। रात्रि को अपने नित्य प्रोग्राम के अनुसार नदी किनारे जाया करते थे। दास की प्रार्थना स्वीकार करते हुए उन्होंने यहाँ ही दूसरे दिन मुझे मंत्र दीक्षा देकर कृतार्थ कर दिया।

इस प्रकार चनारी की संगत को उनकी महानता के बारे में सुनकर उनके प्रति श्रद्धा और सद्भावना जागृत हुई। बाजार के बीच चौबारे में श्री महाराज जी के ठहरने का प्रबन्ध किया गया। सत्संग रोजाना होने लगा। काफी जनता उनके सत्संग से लाभान्वित होती रही। रात्रि को श्री महाराज जी श्री गोकुलचन्द महाजन के चौबारे में जो कि जेहलम नदी के किनारे पर था अपनी तपस्या में लीन रहते थे।

इस प्रकार यहाँ की जनता के विचार और भावनाओं में परिवर्तन आया क्योंकि श्री महाराज जी के वचनों का प्रभाव उन पर पड़ा। दैवयोग से मेरे घरेलू हालात में परिवर्तन आया अर्थात मेरे पिताजी

और भरजाई जी का देहान्त हो गया और विवश होकर मुझे अक्तूबर मास सन 1941 में वापिस मटन काश्मीर जाना पड़ गया। घर की सारी व्यवस्था को मुझे संभालना पड़ा। इस प्रकार मुझे चनारी संगत से अलग होना पड़ा। दूसरी घटना इस प्रकार है कि जब वह काश्मीर पधारे तब मुझे उनके दर्शनों का सौभाग्य फिर प्राप्त हुआ।

सन् 1947 में श्री सदगुरुदेव महाराज ने काश्मीर मटन में हमारे घर पर पधारने की दास की प्रार्थना स्वीकार की। अनन्तनाग में श्री रघुनाथ भट्ट ने जो कि उस इलाका के डिप्टी कमीश्नर थे। अपने यहाँ ठहरने की प्रार्थना की परन्तु श्रीमहाराज जी ने कहा इनको तो अपने प्रेमी के पास मटन ही जाना है। "यह मेरे गुरुदेव की मेरे ऊपर बड़ी कृपा दृष्टि थी इसके पश्चात श्री रघुनाथ भट्ट डिप्टी कमीश्नर साहिब अपने अन्य दो साथियों सहित श्री महाराज जी के दर्शनार्थ दास के गृह पर पधारे। कई घण्टों उनके साथ सत्संग का लाभ उठाते रहे। वहां सत्संग में क्या-क्या विचार हुए यह बताना अब मेरे लिए अति कठिन है क्योंकि समय बहुत व्यतीत हो चुका है। श्री महाराज जी की सादगी, सच्चाई, नियमित जीवन और सबके प्रति सदभावना का लोगों के मन पर गहरा प्रभाव हुआ।

फिर भी महाराज जी कारकुटनाग जो कि जंगल में पास ही अति रमणीक स्थान था यहाँ पधारे कारकुटनाग जंगल से प्रेमी राधाकिशन का प्रोग्राम तशरीफ लाने के बारे में पहुंचा था तो आपके मुख से यह वचन निकले प्रेमी के प्रेम ने बांध लिया है"।

एक दिन श्री महाराज जी ने काश्मीरी पंडितों को समझाया "आप लोग माँस का प्रयोग बन्द करें यह ऋषि भूमि है। कश्यप ऋषि की काश्मीर तपोभूमि है और फरमाते गो आप लोगों का आपस में प्रेम, मोहब्बत व सलूक है लेकिन अगर निर्मल खुराक हो तो बहुत कुछ धर्म के मार्ग में आप लोग कदम आगे बढ़ा सकते हैं। उन्हें

खबरदार भी करते कि तूफान से बचाने वाले जीव के अपने कर्म ही है। कई बार इस भूमि पर तूफान आए और आप लोग बचते जाए हो, अब भी हालत बिगड़ रहे हैं। इसलिए बाहोश हो जाओ और पुरातन ऋषियों की शिक्षा को ग्रहण करो। तुम्हारे शुभ कर्म ही तुम्हारी रक्षा करने वाले हैं।"

श्री महाराज जी बातों-2 में यह सब कुछ बता रहे थे परन्तु विश्वास किसको आता था। श्री महाराज जी तो पूरे अनतर्यामी थे, सब कुछ जानते हुए भी इस बात को किसी को महसूस नहीं होने देते थे।

श्री महाराज जी के सामने कोई भी विचार रखा जाता तो वह थोड़े से शब्दों में इसका समाधान निकालकर रख देते थे। प्रश्नकर्ता भी अपने प्रश्न का उत्तर सुनकर निरूत्तर हो जाता था। उनका ज्ञान, अनुभव और वाणी का प्रवाह आश्चर्यजनक था पता नहीं कौन से शुभ कर्मों के फलस्वरूप हमें उनसे सम्पर्क प्राप्त हुआ था और मुझे तो पूर्ण विश्वास है कि चाहे हमें कितने ही जन्म धारण करने पड़े परन्तु वह हमें जीवन के उच्च उद्देश्य की प्रगति अवश्य करवायेंगे।

संस्मरण

(यह संस्मरण श्री रामलाल जी पूर्व गंगोठियां निवासी श्री महाराज जी का शुभ जन्म स्थान) अब जहाँगीरपुर निवासी तहसील बराड़ा जिला अम्बाला, ने अपने पूज्य पिता श्री अनन्तराम जी से सुना था जो कि श्री महाराज जी के बचपन के साथी थे)

श्री सदगुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज गंगोठियां के वार्षिक यज्ञ के अवसर पर कार्तिक में एक मास पूर्व अपने जन्म स्थान पर पहुँच जाते थे। एक दिन इसी अवसर पर सब गाँव के लोगों को एकत्रित किया और उनसे फरमाया" प्रेमियों अपने बैलों को दो दिन

एक महीने में छुट्टी दे दिया करो। एक अमावस्या को और दूसरे संक्रान्त को बैलों को नहीं जोतना है।"

सब उपस्थित सज्जनों ने श्री महाराज जी के प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया। हर वर्ष के लिए लकड़ी श्री महाराज पीर ख्वाजा के जंगल से कटवाते थे। इस बार कुछ सेवादारों के साथ श्री महाराज जी लकड़ी लाने चल दिये। जब पीर ख्वाजा जंगल आया तमाम सेवादार जिनकी संख्या 15 या 20 के करीब होगी वही रुक गये सबका सिर नीचे था हाथ में कुल्हाड़ी थी परन्तु अन्तर्यामी श्री सदगुरुदेव महाराज जी ने फरमाया "प्रेमियो इस बार लकड़ी यज्ञ के लिए इस जंगल से नहीं लेंगे, आओ आगे बढ़े दूसरे जंगल से लकड़ी इस बार यज्ञ के लिए ली जायगी। यह सब सुनकर तमाम सेवादार आगे बढ़ने लगे।

यह बात ऐसी थी कि पीर ख्वाजा के जंगल में हिन्दुओं की शमशान भूमि थी जहाँ पर गंगोठियां निवासी अपने मृतक प्राणियों का संस्कार किया करते थे। कुछ दिन की घटना थी कि गंगोठियां से प्रेमी एक मृतक प्राणी का संस्कार करने आए थे । संस्कार से लकड़ी भी पीर ख्वाजा जंगल से काटी जाती थी। उनमें से किसी प्राणी ने जो संस्कार करने आये थे कहा "महाराज जी भी हर वर्ष लकड़ी यज्ञ के लिए इसी परिख्याजा के जंगल से कटवाते है। ऐसा न हो कि यहाँ की लकड़ी समाप्त हो जाय और हमें अपने मृतक सम्बन्धियों के संस्कार करने में कठिनाई का सामना करना पड़े। यही कारण था कि श्री महाराज जी ने लकड़ी दूसरे जंगल से काटने के लिए सेवादारों को आज्ञा दी। सत्पुरूष अन्तर्यामी होते हैं और प्राणी मात्र के मन की बात को जान जाते हैं।

जब पीरख्याजा जंगल से दूसरे जंगल में पहुँचे वहाँ एक बहुत बड़ा पेड़ फला का खड़ा था और उसकी लकड़ी बिल्कुल सूखी थी।

श्री महाराज जी ने सेवादारों से फरमाया। प्रेमियों यह एक ही दरख्त हमारे यज्ञ की आवश्यकता को पूरी कर देगा। लिहाजा आप सब इसको काटना आरम्भ करो" सब प्रेमियों की दृष्टि जमीन की ओर हो गयी, कुल्हाड़ी हाथ से छूट गयी और सबके सब मौन हो गये।

श्री महाराज जी की आज्ञा न मानी और सेवादारों की मनोदशा को देखकर श्री महाराज जी ने तमाम मामले को भलीभांति समझ लिया। यह फल का वृक्ष एक कच्ची कबर के पास था और उस कबर के चारों और कच्ची दीवारी थी प्रेमी डर रहे थे कि कबर के पास पेड़ काटने से हमें कुछ कठिनाई न आ जाए क्योंकि यह किसी पीर की कबर दिखाई देती है। अगर पीर ऐसा करने से नाराज हो गया तो हमारा अनिष्ठ निश्चित है। परन्तु सेवादार प्रेमियों की बुद्धि पर गफलत का पर्दा छा गया था वह यह न सोच सके कि पीरों के पीर हमारे सामने खड़े हैं और वह ही यह अज्ञा दे रहे है। यहाँ अनष्ठि के बारे सोचना बढ़ी भारी भूल है। उसी समय अन्तर्यामी सत्गुरु ने एक पैर कबर पर रखा और दूसरा पैर कच्ची बाऊंडरी की दीवार पर एक सूखी टहनी जो उस वृक्ष पर लटक रही थी हाथ से छूआ देखते ही देखते यह इतना बड़ा वृक्ष धराशायी होकर कच्ची चार दीवारी से बाहर गिर गया। उसी समय श्री महाराज जी ने सेवादार प्रेमियों को आदेश दिया "प्रेमियो यह तमाम लकड़ी संभाल लो, यज्ञ के लिए काफी है।"

इस चकित कर देने वाली घटना ने तमाम उपस्थित प्रेमियों को आश्चर्य में डाल दिया। सच है सत्पुरूषों की महिमा अपार है उसका पार पाना बड़ा ही कठिन है। जो बात असम्भव है उसको सम्भव बना देते है। फिर भी संसारी लोगों को इनका समझना बड़ा कठिन है, जब तक इन की कृपा न हो इतिहास के उन पृष्ठों का अवलोकन करे जब भगवान कृष्ण माँ यशोदा को बालक रूप में दिव्य दर्शन करा देते

है परन्तु यह सब कुछ देखकर भी माँ यशोदा उनको समझा न पाई, अपना बेटा ही मानती रही। फिर भी गंगोठियां निवासियों के बड़े भाग्य है जो ऐसी महाहस्ती ने उनके गाँव में जनम लिया और वहाँ पर दिव्य लीलाएँ की गंगोठियां की धूली को शतशत प्रणाम।

संस्मरण

(श्री रतनचन्द्र महाजन, दौरांगला निवासी)

यह बात उस समय की है जब श्री महाराज जी शुभ स्थान गंगाठियां में (जिला रावलपिंडी) में यज्ञ के समय 1944 में पधारे। श्री महाराज जी का पत्र दौरांगला प्रेमियों को यज्ञ में उपस्थित होने का आया उस वर्ष दौरांगला से कोई भी प्रेमी यज्ञ में न जा सका। प्रेमियों ने सौ रुपयों का मनीआर्डर यज्ञ के लिए श्री महाराज जी के नाम गंगोठियां भेज दिया।

श्री महाराज जी ने मनीआर्डर वापिस भेज दिया और पत्र द्वारा प्रेमियों को बड़े प्रेम की झाड़ दी। उस पत्र में निम्न शब्द लिखे हुए थे।

"प्रेमियों हमें आपके दर्शन की आवश्यकता थी रुपयों की इन्हें आवश्यकता नहीं थी। रुपये के लिए तो लोग हमसे याचना करते है। आप प्रेमियों की मौजूदगी यज्ञ में जरूरी थी ताकि सब प्रेमी आपस में मिलकर एक दूसरे से परिचित हों, आपसी प्रेम बड़ा कर एक दूसरे के हित चिन्तक हो आप लोग अभी भी अनजान बने हुए हो, इसी कारण यह लापरवाही बना रखी है।"

उपरोक्त पत्र मिलने पर सब दौरांगला निवासी प्रेमियों की एक सभा हुई जिसमें गंगोठियां यज्ञ में शामिल होने का निर्णय लिया गया। इस सम्बन्ध में श्री महाराज जी को पत्र द्वारा सूचित कर दिया गया

और अपनी गलती के लिए श्री महाराज जी से क्षमा मांगी।

लौटती डाक भी महाराज जी का उत्तर हमें मिला जिसमें लिखा था "प्रेमियों जब चल पड़े हो तो अवश्य ही पहुंच जाओगे। श्री महाराज जी की महानता को विचार करें कि इतने थोड़े शब्दों में मार्फत का राज ध्यान कर दिया।

संस्मरण

(श्री रतनचन्द्र महाजन, दौरांगला जि. गुरदासपुर))

सन् 1942 में मेरे पूज्य पिता जी का स्वर्गवास हो चुका था। श्री महाराज जी का दूसरी बार दौरांगला में आगमन हुआ।

एक दिन दास श्री महाराज जी के चरणों में बैठा था। दास ने श्री महाराज जी से प्रार्थना की महाराज जी "हमारी बरादरी में कई ऐसी रसुमात है जिससे गरीब व्यक्ति उन रसुमात को पूरा करने में बड़ा दुखी व परेशान होता है मिसाल के तौर पर मृत्यु के समय को ही लें कृपा करके कुछ ऐसा विधान आप बनायें ताकि आइन्दा इससे नजात पा जायें और उसको आसानी से अपना सके।"

उस समय श्री महाराज जी ने उत्तर दिया प्रेमियों इस बारे में काफी लिखा जा चुका है। समझने के लिए बुद्धि चाहिए। खास विधान की कोई जरूरत नहीं। आगे ही इन झमेलों ने बहुत तंग कर रखा है। बस एक बात ध्यान में रक्खों। समय और लोकाचार का ध्यान रखते हुए सादगी के असूलों को अपनाते रहो।"

रात्रि के सत्संग के पश्चात जो संगत चली जाती और कुछ प्रेमी भाई रह जाते। बड़ा एकान्त होता था। दास ने भी महाराज जी से प्रार्थना की, महाराज जी ऐसी कृपा करें कि जिससे दौरांगला का नाम इतिहास में अमर हो जायें। परमदयालू श्री महाराज जी ने अमर

वाणी उच्चरण फरमाई। श्री समता प्रकाश ग्रन्थ में अलखवाणी दौरांगला में ही कलमबन्द करवाई थी। जिसके तीन सौ पद है।

अगले दिन फिर रात्रि के सत्संग के पश्चात एक प्रेमी ने श्री महाराज जी से पूछा, "महाराज जी! मेरा मन अभ्यास में नहीं लगता। श्री महाराज जी ने फरमाया" और तमाम राज़ तहरीर करके पुस्तक में लिख दिये है। अब बाकी कुछ नहीं रहा। इसलिए तुम आइन्दा इन अमर उपदेशों और अनुभवी अमरवाणी से अपना मुस्तकबिल (भविष्य) संवारते रहना। हम को नित अंगसंग देखना अभ्यास नित्य करना। अगर मन नहीं लगता तो कोई बात नहीं। निरन्तर लगे रहो। मन अपने आप एक न एक दिन इसका आदि हो जायेगा। दृढ़ता व लगन से जल्दी कामयाबी मिलती है। अभ्यास में कोताही (लापरवाही) करनी अपनी मूल बरबादी करना है।

एक दिन की बात है श्री महाराज जी कुटिया के बाहर खेत में धूप में बैठे थे। एक प्रेमी ने दंडवत प्रणाम किया और चुपचाप बैठ गया। श्री महाराज जी ने उस प्रेमी को कहा "प्रेमी कोई सवाल करो।" प्रेमी हिन्दु कौम के ज़िवाल का क्या करण है।" श्री महाराज जी ने फरमाया "प्रेमी जहाँ और बहुत से कारण है वहाँ सबसे बड़ी कमी यह है कि इन्होंने मिल बैठना और वंड खाने का असूल छोड़ दिया है।

श्री महाराज जी कई दिन यहाँ ठहरे और बहुत सी बातें हुई जो 50 वर्ष से ऊपर बीत जाने के कारण सदियों के पश्चात इसे भूतले जाते हैं। उनकी महिमा का कोई पारावार नहीं।

संस्मरण

(श्री रतनचन्द महाजन दोरांगला निवासी)

श्री महाराज जी मार्च 1942 में पहली बार दौरांगला पधारे। प्रभस्वरूप सतगुरूदेव महात्मा मंगतराम जी एक मन्दिर में ठहरे। इस मन्दिर में सुबह चार बजे ही लोगो ने घड़ियाल खड़काना शुरू कर दिया। तम्बाकू पीने वाले चिलमें पीने लगे कुछ बुजुर्ग लोग भी थे। आप यह सब दृश्य देखकर बड़े हैरान हुए। आपने लोगों को बुलाने के लिए भेजा परन्तु वह नहीं आए। आखिर में एक बुजुर्ग आपके पास आ गए। आपने उससे पूछा !

श्री महाराज जी:- "प्रेमी, यह मंदिर सत्संग की जगह है या तम्बाकू, चरस पीने का अड्डा है।"

बुजुर्ग प्रेमी- "महाराज जी! साधु संत आते हैं, उनकी धूनी बनी हुई है। शहर के लोग भी यहाँ आकर दम लगा जाते है बाकी आप कौन महात्मा है?"श्री महाराज जी आप बीमारों का इलाज करने वाले डाक्टर आये है आप सब बीमार है। बाकी कोई जगह ठहरने के वास्ते फकीरों को बताओ जहाँ ठहरकर आपको देख सके।"

महाराज जी के वचन सुनकर उस बुजुर्ग प्रेमी ने एक दो जगह बतलाई फिर साथ भी ले गया। कस्बे से बाहर खेतों में एक एकान्त कमरा आपने पसन्द किया जहाँ आपके ठहरने का प्रबन्ध कर दिया गया। शाम होने से पहले पहले आपने उस प्रेमी द्वारा शहर में सन्देशा भेज दिया कि शाम को चार बजे सत्संग होगा। सब प्रेमी दर्शन देवें। काफी संख्या में प्रेमियों सत्संग में उपस्थित होकर सत विचारों का लाभ उठाया।

उसी दिन दास भी यहाँ आ गया था। उपरोक्त वृतान्त भक्त जी ने मुझे सुनाया था। वहीं जो वार्तालाप उस समय हुई यह निम्न है। इस समय आत्मा परमात्मा के बड़े गम्भीर विचार हुए। दास को इन विषयों के बारे कुछ भी पता नहीं था। पर दास ने बुद्धि की चतुराई का प्रदर्शन किया। उस समय जो मार्मिक बात श्री महाराज जी ने फरमाई "यह ईश्वर वाले मसले जबानी बात चीत से हल नहीं हो सकते। समय आने पर जब साधना के द्वारा स्थिति प्राप्त होती है तब सब गुथ्थीयों स्वयं ही हल हो जाती है। अलफ बे तो पढ़े नहीं परन्तु प्रश्न एम०ए० के कर रहे हो। छोड़ आत्मा परमात्मा का किस्सा पहले तू आदमी बन फिर सब कुछ ठीक हो जायेगा। यह कथनी की बात नहीं, करनी का मुकाम है।

ये शब्द आज भी कानों में गूंज रहे हैं कि श्री महाराज जी ने थोड़े से शब्दों में कितना ज्ञान बीज रूप में भरा है। मैं तो यह समझ पाया हूं कि श्री महाराज जी सवाल पूछने वाले को अंतर्दृष्टि से जानकर उसकी बुद्धि के अनुरूप ही उत्तर देते थे यही उनकी बड़ी विशेषता थी।

सत्संग में विचार तो बहुत हुए परन्तु काफी समय बीत चुका है। वह स्मरण नहीं रहे। पर एक दिन के विचार अभी भी मेरे मानस पटल पर अंकित है। उन्होंने कहा था "अपनी बहुत बड़ी भूल को समय पर समझोगे हिन्दु कॉम की हालत बहुत खराब है जीते जी गुरूओं व सत्पुरुषों को नहीं मानती। उनके शरीर छोड़ने के पश्चात् उनकी समाधी व उनके बुत बनाकर पूजते है तुम अभी बच्चे हो तुम्हारे लिए हृदय में बड़ा प्रेम है अगर आप लोगों का कल्याण हमारे जीवन की आहुति से हो सके तो यह समझोगे कि इनका जीवन सफल हो गया है। आप लोगों के कल्याण के लिए आपकी सेवा में इनकी जिन्दगी का एक एक क्षण और खून की एक एक बूंद भेंट की जा रही

ये शब्द दास को तीर की तरह लगे और आँसुओं की झड़ लग गई। रोते-रोते हिचकी बंध गई। अन्तरयामी प्रभु ने धीर बधाई और फरमाया "प्यारे बच्चो, यह तो तुम्हारा कल्याण करने के लिए जगह-जगह जाकर तुमको ढूंढते फिरते हैं। तुमको आसानी से गुरू मिल गए हैं अगर तुमको ढूंढना पड़ता तब पता लगता हमारी मेहर सदा आप पर है और आपकी बेहतरी चाहते हैं। जब इन शब्दों की याद आती है और अपनी भूल का ध्यान आता है तो दिल में एक कसक सी पैदा होकर रह जाती है। उनकी याद हरसमय तड़फाती रहती है।

धन्य हो महान सत्गुरू जो दया और क्षमा के भण्डार है।

संस्मरण

(श्री ओंकारनाथ, आगरा कैंट)

पूज्य महात्मा श्री मंगतराम जी महाराज जी के सम्बन्ध में कुछ शब्द भेंट करने की इच्छा हुई जिनकी बाबत मुझे उनके निकट सम्बन्धियों विशेषकर उनकी बहनों श्रीमती करतार देवी (मेरी पूज्य माता जी) और श्रीमती देवकी से ज्ञात हुआ है। कुछ उनके जीवन की घटनाओं का उनके शिष्य से पता लगा है।

प्रथम में मैं आपके जन्मस्थान गंगोठियां के सम्बन्ध में कुछ बताना आवश्यक समझता हूँ। यह शुभ स्थान हिमालय की तराई में कलकल करके बहती हुई जेहलम नदी की घाटियों के साथ मिलता हुआ पोठोहार का रमणी प्रान्त है। गंगोठियां ब्राह्मण एक साधारण से ग्राम की तहसील कठुआ जिला रावलपिंडी है। प्रकृति के सुन्दर दृश्यों से सजी हुई यह धरती अपने हृदय में इस महापुरुष जैसे हीरों को

छुपाये बैठी थी। इस प्रान्त मे दीगर उच्च महात्माओं ने अपने स्थान बनाये हुए थे। गंगोठियां के उत्तर में पंजाड़ नामी पहाड़ों में पांडवों की गुफा और सरोवर है जो इस बात के साक्षी है। गुरु नानक देव जी के कुल में से महायोगी बाबा खेम सिंह बेदी जी ने अपना स्थान पास ही कल्लर नामी ग्राम में बनवा तपस्वी संत टहल सिंह जी ने इनके नजदीक दुखभंजनी गुफा में चौदह वर्ष तप किया। इनके साथ ही मटोर नामी ग्राम के बाहर संत बाजसिंह की कुटिया थी। पूर्व में नारा नामी ग्राम में एक बाल ब्रहाचारी सन्यासी बाबा नागाजी की समाधी और इनके छः मील दूर कनूहा ग्राम के बाहर बन में तपस्वी अतरसिंह की शिला है जिस पर बैठकर उन्होंने बारह वर्ष घोर तप किया। यह सब पवित्र स्थान इस प्रान्त की विशेषता का ज्वलन्त उदाहरण है। ऐसी विचित्र भूमि में श्री महाराज जी ने जन्म लिया।

जब आपकी आयु पाँच वर्ष की थी आपकी विद्या डेरा खालसा स्कूल में आरम्भ हुई इस पढ़ाई में इनका मन नहीं लगता था। यह तो दूसरी पढ़ाई के इच्छुक थे जो आत्मा परमात्मा के निकट कर सके। पाठशाला से घर वापिस आते समय दूसरे सहपाठियों से पृथक होकर जंगल में जहाँ से आपको गुजरना पड़ता था। पुस्तकों को एक तरफ रखकर आत्म चिन्तन में लीन हो जाते थे पुत्र की ऐसी दशा देखकर माता-पिता का मन शंकित हुआ पंडित और मुल्लाओं को बुलवाया और उनसे झाड़ फूंक कराई ताकि इनका मन पढ़ाई में लगे परन्तु यह अपने कार्य में अटल रहे। आम संसारी लोग जन्म सिद्ध बालक की अन्तर की स्थिति को कैसे जान सकते थे। अभी आपकी अवस्था छोटी थी कि आपके पिता पं. गौरी शंकर जी का स्वर्गवास हो गया और आपके पालन पोषण का सारा भार आपकी पूज्य माता श्रीमती गणेशी देवी जी पर ही पड़ गया। परन्तु उस महान देवी ने साहस नहीं खोया। आपकी उच्चतर विद्या के लिए आपको कल्लर ग्राम में

आपकी बड़ी बहन श्रीमती करतार देवी के पास भेज दिया। श्रीमती करतार देवी जी मेरी पूज्य माता जी थी। कल्लर में आप विद्यार्थी जीवन में अपने साथियों और विशेषकर अपने अध्यापक श्री. किशनसिंह जी (जो आजकल आगरा के निवासी है) की प्रसंशा का कारण बने रहे। श्री किशनसिंह जी का कथन है कि आप कक्षा में बैठे-बैठे अन्तरमुखी ध्यान में चले जाते थे। मास्टर किशनसिंह जी का कथन है कि हम इनकी वृत्ति को भंग नहीं करते थे पर आश्चर्य की बात यह थी कि फिर भी वह अपना पाठ भली प्रकार याद कर लेते थे।

भक्ति का रंग दिन प्रतिदिन बढ़ता गया और आपकी ऐसी अवस्था हो गई कि सारी सारी रात्रि आत्मचिंतन में लीन रहते थे। इस बात से बचने के लिए कि परिवार के अन्य सदस्यों को पता न चले - आप दिखावे के लिए सो जाते थे परन्तु उनकी बहन श्रीमती करतार देवी का कथन है कि जब कभी रात में नींद खुल जाती तो महाराज जी (मेरे भ्राता) बैठे प्रभु भक्ति में लीन दिखाई देते। परिवार वालो को आपके स्वास्थ्य की अधिक चिन्ता होने लगी। पूछने पर केवल इतना उत्तर देते "ऐसे ही नींद नहीं आती, मेरा स्वास्थ्य ठीक है, आप कोई चिन्ता न करें कल्लर से मिडल पास करके श्री महाराज जी अपने घर गंगोठियां आ गये।

सारी आयु आपने सादा वस्त्र पहने, विशेषकर खादी के ही होते थे। उनका कहना था कि अधिक भड़कीले वस्त्र धारण करने वाले व्यक्ति को अपना आप दूसरों से सुन्दर जान पड़ता है और निर्धनों से वह घृणा करने लगता है वह समाज में समानता नहीं रख सकता और सादगी पर तो उनका उपदेश ही होता था। यह वस्त्रों की सादगी बचपन से ही थी। एक बार जब आप छोटे थे तो आपकी दूसरी बहन श्रीमती देवकी जी का विवाह हुआ और विवाह के थोडे दिनों पश्चात आप अपनी बहन के साथ उसकी ससुराल गुजरखाँ जाने के लिए

उद्यत हुए। परन्तु उनकी बहन ने कहा कि यदि आप अच्छे कपड़े पहन कर चलो तो में साथ ले चलूँगी वरना नहीं क्योंकि मेरे ससुराल वाले आपको देखकर क्या अनुमान लगाएँगे। परन्तु श्री महाराज जी अपने प्रण पर दृढ़ रहे। यह दृढ़ता ही महापुरुषों का विशेष गुण है। आपने अपनी बहन जी से कहा "मैं तो यही वस्त्र धारण करूँगा, आप फिर उन्हीं वस्त्रों में उनके साथ गये।

जहाँ आपके वस्त्र सादा थे वहाँ भोजन भी आपका साधारण और सूक्ष्म था। चटपटे भोजन में आपकी कोई रूचि नहीं थीं वह प्रायः कहा करते थे कि आहार का साधारण और शुद्ध होना अति आवश्यक है। शुद्ध आहार के बिना शरीर और मन निर्मल नहीं हो सकता। प्रारम्भ में ही आप सूक्ष्म ग्रहण करने लगे थे यह कहा करते थे भर पेट खाने से आलस्य आ जाता है और भजन में बाधा पड़ती है। जब आप की माता जी भोजन परोस कर लाती तो आप केवल आधा भाग ग्रहण करते और आधा पहले ही अलग कर देते उनकी माता जी कहती "मंगत इतना थोडा भोजन क्यों ग्रहण करते हो? आप उत्तर देते, "माता जी, जितनी आवश्यकता है उतना ले लेते है जब देश में कितने ही मनुष्य ऐसे है कि जिनको दिन में एक बार भी भोजन प्राप्त नहीं होता तो मेरा क्या अधिकार है कि मैं भर पेट के भोजन करूँ।"

कितना दर्द है श्री महाराज जी को मनुष्य मात्र के लिए ऐसे त्यागी और देश भक्तों का जन्म भाग्यशाली हुआ करता है। वास्तव में आपका यह अभ्यास इस सीमा तक पहुँच गया कि आपने भोजन का सर्वथा ही त्याग कर दिया और थोड़े दूध पर निर्वाह करना आरम्भ कर दिया।

ईश्वर भक्ति के साथ-साथ आप माता भक्त भी थे। माता जी की हर प्रकार सेवा की माता जी ने श्री महाराज जी के विवाह के लिए हर प्रकार की मिन्नत समाजत की परन्तु महाराज जी यह कहकर

टाल देते कि माता जी मेरा विवाह हुआ हुआ है। आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें। आपकी अवस्था अभी 25 वर्ष की थी कि आपकी माता जी भी इस संसार से सदा के लिए आप से नाता तोड़ गई। अब तो दिन और रात प्रभु भक्ति में लीन रहने लगे। नींद का भी भोजन की तरह त्याग कर दिया। सारी रात प्रभु सिमरण करते रहते। इस अभ्यास को आपने जीवन पर्यन्त निभाया। आपके जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सब भाव की जनता हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख व ईसाई आदि आपके विचारों से प्रभावित हुए बिना न रह सके।

एक आश्चर्यजनक घटना उनके ग्राम की निम्न है। श्री महाराज जी ने अपने ग्रामवासियों की परेशानी देखी कि उन्हें दूर-दूर से पानी लाना पड़ता है। क्योंकि आपका ग्राम बहुत ऊँचे स्थान पर था परन्तु यहाँ जल का कोई प्रबन्ध नहीं था। ग्राम के दूर केवल एक कुंआ था जहाँ से जल लाया जाता था। आपने ग्राम निवासियों को कुआँ खुदवाने की प्रेरणा दी। ग्रामवासियों ने कहा, महाराज जी यह स्थान बहुत ऊँचा है जल निकलने की कोई सम्भावना नहीं है।" आपने उन से कहा "आप लोग साहस से कार्य आरम्भ करो ईश्वर की कृपा से आशा है जल निकल आएगा।"

श्री महाराज जी के आदेशानुसार ग्रामवासियों ने कार्य आरम्भ कर दिया। थोड़े दिनों पश्चात् कुआँ सम्पूर्ण भी हो गया परन्तु जल नहीं निकला। ग्रामवासी बहुत आश्चर्यजनक थे कि उन्होंने परिश्रम भी किया परन्तु काम नहीं बना। परन्तु श्री महाराज जी ने गाँव वालों को धीरज दिलाया कि चिन्ता की कोई आवश्यकता नहीं भगवान सब ठीक करेंगे। एक सप्ताह के पश्चात् सचमुच ही ऐसी करनी हुई कि कुएं में जल निकल आया और ग्राम वालों के चिरकालीन दुःख का अन्त हुआ। ऐसी परिवत्रता में रंगे जीवन को धारण कर आपने बहुत से ऐसे से ऐसे कार्य किये कि जिससे सर्व साधारण जनता को अधिक लाभ

प्राप्त हो। जो कार्य असंभव हो उसको संभव कर देने की क्षमता सत्पुरुषों में होती है। इस प्रकार अनेकों घटनाओं से संसार के सत्पुरुषों के जीवन इसका ज्वलंत उदाहरण है।

संस्मरण

(श्री कर्मचन्द जी टण्डन, यॉल कैम्प निवासी जिला कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश)

यह घटना उस समय की है जब श्री सतगुरूदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज ने नड़धज्जियाँ गाँव में उच्चारण हुआ था। वहीं पर एक दिन मैने गुरुदेव जी से कहा था, "श्री महाराज जी कोई, मठ आश्रम या डेरा न बनाना।" इस पर श्री महाराज जी ने कहा था "लाल जी संगत को एक जगह एकत्र होना लाभकारी होता है, मगर यह ऐसी अवस्था करेंगे कि कोई भी प्रेमी ऐसे स्थानों का दुरुपयोग न कर सके। न ही यह ऐसी मठी, समाधि आदि बनाने की आज्ञा देंगे।" वास्तव में जो-जो नियम, कानून बनाये वह श्री महाराज जी के कथनी की पुष्टि करते हैं।"

श्री महाराज जी प्रचलित गुरूडम से बहुत घृणा करते थे। यह प्रायः कहा करते थे कि गुरु की आज्ञा का पालन ही गुरु भक्ति है न कि समाधि पर फूल चढ़ना और माथा टेकना अपनी अनुभवी वाणी में भी उन्होंने फरमाया है।

एक आत्म का होवे विश्वासी, पर सेवा नित धारी

पोथी पाषाण मढ़ी नहीं पूजे, सो समता ज्ञान विचारी"

दूसरी घटना उनके शुभ जन्म स्थान गंगोठियां की है। श्रीमहाराज जी हर वर्ष शुभ स्थान गंगोठियां यज्ञ किया करते थे। 1941 के अक्टूबर मास के यज्ञ में में गया था। वहाँ बड़ी-बड़ी दूर से

जनता आती थी। दो दिन के पश्चात् शिष्यगण सब घर को वापिस लौटने लगे। सब प्रेमी बारी-बारी श्री सत्गुरुदेव के चरणों में दण्डवत प्रणाम कर रहे थे। फिर सब को विदा करने के लिए श्री सद्गुरुदेव जी महाराज कमरे से उठकर बरामदे मे आ गये। और बड़े स्नेह और प्रेम से सब विदा हो रहे थे। उसी समय श्री महाराज जी मेरे पास आये और चुपचाप चांदी के 6 रुपये मेरी जेब में डाल दिये। मैं इस बात से बहुत परेशान सा होकर चरणों में गिर पड़ा और कहा "श्री महाराज जी! यह आप क्या कर रहे हैं, मुझे पाप के गढ्ढे में क्यों धकेल रहे हैं। यह स्थान तो देने का है लेने का नहीं।" उसी समय बड़े प्यार और विनम्र भाव से फरमाने लगे "लाल जी मुझे पता है कि तुम्हारे पास वापिस जाने के लिए किराया नहीं है। चुप हो जाओ और इसको स्वीकार कर लो।" प्रेमियो बात ठीक थी। उन अन्तरयामी सद्गुरू ने अपनी अन्तर्दृष्टि से यह सब जान लिया था। मैंने सोच रक्खा था कि वापसी का किराया मैं लाला फकीर चन्द जी से उधार ले लूंगा और उन्हें घर पहुँचकर लौटा दूंगा।

आज 55 वर्ष के पश्चात् भी जब मैं इस घटना पर विचार करता हूँ तो मैं रोमांचित हो जाता हूँ। कितने महान थे मेरे सद्गुरूदेव वह शिष्यों से पुत्रवत व्यवहार करते थे।

तीसरी घटना नड़धज्जियाँ गाँव की है। इस गाँव में कई बार बड़ी संख्या में गूजर मुसलमान श्री गुरु महाराज के पास आते थे। श्री महाराज जी उन्हें सच्चे मुसलमान के सम्बन्ध में विचार दिया करते थे। कई मौलवी विचारों को सुनकर चकित हो जाते थे और उन्हें सच्चा पीर मानने लगे थे। कई बार मैंने उनको श्री महाराज जी के दरबार में दूध संगत के लिए प्रयोग में लाया जाता था।

संस्मरण

(श्री कर्मचंद टण्डन, यौल कैम्प, जिला कांगड़ा)

श्री सतगुरुदेव महात्मा मंगत राम जी महाराज एक उच्चकोटि के परमसंत थे। प्राचीन शास्त्रें में जो लक्षण गुरु के सम्बन्ध में वर्णन है यह सब के सब इनके जीवन में पूर्ण घटित होते है। इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं। उनका जीवन एक खुली पुस्तक की न्याई जनता के समक्ष था वह अपने आप में एक निराले ही गुरू थे।

1941 में ही एक सज्जन चौधरी फकीर चन्द जी सहगल उनके सम्पर्क में आए चौधरी फकीर चन्द जी गाँव शारियाँ के एक धनी दुकानदार थे और बड़े धार्मिक विचारों के थे। श्री महाराज जी से उन्होंने प्रार्थना की, "कि उनके पास कुछ दिन रह कर दर्शन देवें।

1942 की गर्मियों में श्री महाराज जी ने श्री फकीरचन्द जी के अनुरोध पर शारियाँ से सात या आठ किलोमीटर दूर सरूपा जंगल में दो मास ठहरने का निश्चय किया। चौधरी साहिब दिन रात श्री महाराज जी की सेवा में रहते उनके दो बेटे, श्री मदनलाल, श्री गिरधारी लाल और तीन चार नौकर खच्चरों के द्वारा सब सामान, खान पान जंगल सरुपा में पहुंचाते। श्री महाराज जी के दर्शनों को बहुत से प्रेमी यहां पहुंचते और यह सामान उनके खानपान की सेवा में खर्च होता था। दो मास वहाँ ठहरने के पश्चात श्री महाराज जी ने वर्षा के आरम्भ होते ही वहाँ से प्रस्थान किया ओर कुछ दिन चौधरी जी के घर शारियाँ ठहरे।

एक दिन की बात है कि मैं श्री महाराज जी के कमरे में बैठा हुआ था। चौधरी जी श्री महाराज जी के चरणों में सिर रखकर बिनती कर रहे थे "महाराज जी अब दास पर कृपा करो, और अपने श्री चरणों में स्थान दें।

चौधरी जी के नेत्रों से अनुधारा यह रही है श्री महाराज जी ने नेत्र बन्द है और मौन बैठे हैं। कुछ समय इसी प्रकार व्यतीत हो गया। जब श्री महाराज जी के नेत्र खुले तो सत्पुरूष ने अपने करकमल द्वारा श्री चौधरी जी को ऊपर उठाया और फरमाया चौधरी जी! अभी समय नहीं आया, ईश्वर आज्ञा अभी नहीं हुई" इस पर श्री चौधरी जी ने श्री महाराज जी से कहा हे प्रभु मेरा कल्याण कब होगा।" श्री महाराज जी ने फरमाया "अगले वर्ष फिर आयेंगे, जैसे प्रभु आज्ञा होगी।

प्रेमी पाठकों इस उपरोक्त घटना से यह पता चलता है कि सत्गुरु देव महात्मा मंगतराम जी महाराज वास्तव में सत्गुरू थे और कितने महान थे। आजकल के प्रचलित गुरूओं की तरह नहीं कि जो आया उसको दीक्षा दे दी या दीक्षा के लिए प्रेरणा करने लगे। इस गुरुडम ने ही भारत की महान परम्पराओं को बढ़ी हानि पहुंचाई है। भोली भाली जनता को धर्म के नाम पर ठग रहे हैं।

श्री चौधरी साहिब को दो वर्ष दीक्षा के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ी और उनपर यह विशेष कृपा श्री महाराज जी ने सन् 1943 में की।

श्री सतगुरुदेव महाराज ने फिर फिरकर पूरी जाँच पड़ताल करके जीवन भर में कुल 700 या 800 के करीब शिष्य बनाये। अधिकांश शिष्य तो जीवन के अन्तिम समय में बनाए अध्यात्मिक विद्या यह एक अनमोल रत्न है। सब विद्याओं की शिरोमणी है। इसे पाने के लिए शुद्ध हृदय की आवश्यकता है। अमृत तो सोने के पात्र में श्री महाराज जी ने कहा था,

(1) "कोई अपनी गाढ़ी कमाई नालियों में थोड़े ही डालता है।

(2) "जिन जिन के अन्दर इनके विचार चले गये है उनका किसी न किसी जन्म में अवश्य उद्धार होगा।"

यही विशेष कारण है कि हमारे शास्त्रे में तत्ववेता आत्मदर्शी महापुरुष से दीक्षा प्राप्त करने की बात फरमाई है। गीता में श्री कृष्ण और अर्जुन की वार्ता इसका ज्वलन्त प्रमाण है।

संस्मरण

(श्री कर्मचन्द टण्डन, यौलकैम्प, कांगडा (हि०प्र०)

मई 1941 में श्री महाराज जी (जलमादा, कोहाला के समीप एक गाँव जहाँ सद्गुरुदेव महाराज ने आत्म साक्षात्कार किया था) से चलकर चनारी (जो इलाका अब आजाद कश्मीर पाकिस्तान में है) पहुंचे। चनारी महाजन दुकानदारों का एक छोटा सा कस्बा था। जो काफी धनाढ्य थे परन्तु यह लोक हर प्रकार के विषयविकारों में फंसे हुए थे, शराब, जुवा, तम्बाकूनोशी, ईर्ष्या, द्वेष अर्थात हर प्रकार के अवगुण उनके निजी जीवन में विद्यामान थे जब रात आ गई ठहरने के लिए कोई स्थान नहीं एक छोटा सा शिवाला था। उसमें एक पुजारी था जो हर समय तम्बाकू और सुलफा पीता रहता था। उसी से पूछा "क्या यहाँ कोई ठहरने की जगह है?" उसने इंकार कर दिया। फिर दो चार और सज्जनों से मिले श्री महाराज जी के चेहरे को देखकर बोले "आप तपेदिक के मरीज नजर आते है लिहाजा आप किसी जंगल में चले जाएँ, यहाँ ठहरने का कोई प्रबन्ध नहीं है।" यहाँ यह बताना परम आवश्यक है कि इस कस्बे की आबादी मुसलमानो की अधिक थी हिन्दुओं के तो थोड़े से ही घर थे।

इस दिन के पश्चात वही लोग श्री महाराज जी के अनन्य भक्त बन चुके थे और शराब, हुक्का, जुआ आदि विकारों को श्री महाराज जी की कृपा से त्याग दिया था और चनारी में जुलाई मास के अन्त में एक महान यज्ञ हुआ जिसमें हिन्दु मुसलमान आदि सब लोग शामिल हुए और यह सब खर्चा चनारी निवासियों ने किया।

इसी प्रकार की दूसरी घटना है गाँव कठाई के निवासी श्री सुखदयाल। वह हर समय शराब के नशे में धुत रहता था। शराब की भट्टी घर में लगा रक्खी थी नाजायज शराब निकालते थे। स्वयं भी सेवन करते और बिक्री भी करते थे। वह अकस्मात चनारी श्री महाराज जी के सत्संग में आ गए जब सत्संग समाप्त हुआ और लोग प्रस्थान करने लगे तो क्या देखा कि श्री सुखदयाल जी श्री महाराज जी के चरणों में सिर रखकर रो रहे है। आँखों से आँसुओं की धारा बह रही है और रो रो कर हिचकियाँ बंध गई और कह रहे थे "महाराज जी! मुझे बचालो इस घोर नरकी जीवन से मैं आपकी शरण में आया हूँ।" श्री महाराज जी समाधिस्थ थे आध घण्टे के पश्चात आँखें खोली श्री सुखदयाल जी को चरणों से उठाया और सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। उस दिन के पश्चात् श्री सुखदयाल जी की काया पलट गई। प्रभु के चरणों में प्यार, पिछले शुभ संस्कारों के परिणाम स्वरूप संत कृपा के कारण, जाग उठा । अपने गाँव में वह प्रति दिन सत्संग करने लगे। सब अवगुणों को तिलांजली दे दी। यही संतों के संग का फल है। इसी प्रकार सैकड़ों नर नारियों ने अपना जीवन सुफल किया।

संतो की अपार महिमा है उनकी दयालुता ओर कृपालता की हम जीवों पर कोई गिनती नहीं।

संस्मरण

(श्री कर्म चन्द टण्डन रिटायर्ड टीचर) यौल कैम्प जिला कांगड़ा (हि० प्रदेश)

आज के युग में एक धारणा बन गई है कि कुछ लोग अपने अपने धर्म गुरु की महानता को बढ़ा चढ़ा कर पेश करते हैं और उनके जीवन की घटनाओं को इस प्रकार तोड़ मरोड़ कर पेश करते

है कि यह ही एक मात्र अध्यात्मिक विद्या के सूर्य थे। उनके जीवन की हर बात को कहानी चमत्कार मानते है और कहते है कि वह गुरु ही क्या जिसके पास करामात नहीं । परन्तु समता सम्राट सत्पुरूष महात्मा मंगतराम जी ऐसे गुरु नहीं थे। यह अध्यात्मिक शिखर पर पहुँचकर भी गुदड़ी में छिपे हुए लाल थे। उन्होंने कभी भी अपने सम्पर्क में आए शिष्यों को यह अनुभव न होने दिया कि वह आत्म साक्षात्कार की उस महान पदवी को प्राप्त कर चुके हैं यानी परम पद को प्राप्त कर चुके हैं।

मैंने श्री सतगुरुदेव महाराज के चरणों में एकान्त अखण्ड दो मास निवास किया। जब सत्गुरूदेव स्थान नड़धज्जियाँ (चिनारी से 6 मील की दूरी पर एक पहाड़ की चोटी पर बैठकर तप के लिए पधारे, दास उसी गाँव में एक स्कूल में अध्यापक था। उसी स्थान श्री सद्गुरूदेव महाराज ने मुझे अपने चरणों में स्थान दिया था। इसी समय में दास जी ने जो कुछ उनमें देखा और जो 2 बातचीत हुई उसका ब्यौरा निम्न दे रहा हूँ।

1. चमत्कारों के सम्बन्ध में वह प्रायः कहा करते थे कि यह तो मायाजाल है। परमपद की प्राप्ति में बहुत बड़ी बाधा है। साधना का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है गुरूदेव ने एक दिन फरमाया प्रेमी एक साधन 15-20 साल तक साधना करके आए। उन्हें जल पर चलकर नदी पार करने की सिद्धि प्राप्त हो गई। जनता जनार्दन को प्रभावित करने के लिए उन्होंने जन समूह के सामने गंगा पार कर सबको चकित कर दिया।

एक सिद्ध पुरुष भी यहाँ खड़े थे। उन्होंने फरमाया प्रेमी तूने कितने वर्ष तक तप किया।" उत्तर मिला पन्द्रह वर्ष तो क्या आपने 15 वर्ष तप करके केवल एक आना की सिद्धी प्राप्त की है। नाव वाला

एक आना लेकर नदी पार करा देता है। इस पर सब लोग आश्चर्य में डूब गये।

2. जीवों के कल्याण हेतु आप गाँव-गाँव भ्रमण करते थे परन्तु कभी किसी संसारी से रुपया भेंट स्वीकार नहीं किया। भोजन का त्याग तो आप 25 वर्ष पहले कर चुके थे। केवल एक समय चाय ही लेते थे। दास ने कभी नहीं देखा कि कभी आपने धन स्वीकार किया हो भक्त बनारसी दास जी जो उनके सेवक रूप में उनके साथ रहते ये उनको इस सम्बन्ध में कहा निर्देश था कि किसी भी प्रकार की भेंट न ली जाये केवल किराए का भार संगत वहन करती थी। निर्मानता और सादगी की साक्षात मूर्ति थे कभी किसी पर क्रोध नहीं किया आपकी सब शिष्यों को यह आशा थी कि किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में भाग न लें किसी गुरु पीर के सम्बन्ध में कटाक्ष न करें। किसी भी मजहब के महापुरूष की निन्दा न करें। सब धर्मो पन्थों और मजहबों के प्रति वह आदर भाव रखते थे। यह प्रायः कहा करते थे कि यह सब झगड़े संसारी लोगों ने मचा रक्खे हैं जो व्यक्ति इस संसार बन्धनों से ऊपर उठ जाता है उसे समदृष्टि प्राप्त हो जाती है तब उसे हर प्राणी मात्र में ईश्वर दर्शन होते है सब जगह उसी का रूप नजर आता है। उसकी दृष्टि में अपने पराये का भेद समाप्त हो जाता है। समुद्र की सतह पर ही लहरों की उथल पुथल दिखाई देती है परन्तु समुद्र की गहराईयों में शान्ति का साम्राज्य होता है।

संस्मरण

(श्री कर्मचन्द टण्डन यौल कैम्प निवासी द्वारा भेजा हुआ संस्मरण)

गाँव में (जो अब पाकिस्तान में है) जब श्री गुरुदेव महाराज तप कर रहे थे। दो मास तक एकान्त में घोर तप किया। उस समय में पास के गाँव में स्कूल टीचर था। श्री गुरुमहाराज जी के दर्शन करने का

सोभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय एक वार्तालाप में फरमाये थे जो बड़े मार्मिक है-

श्री गुरुदेव ने फरमाया था कि

"यह समता सिद्धान्त का बीज आगामी 100 वर्षों में फल लायेगा तब सब मत मतान्तर इसमें विलीन हो जायेंगे और समता धर्म का सूर्य सारे संसार में चमकेगा। आपने दोबारा इशारा किया कि समतावाद कोई नया धर्म या मजहब नहीं है। यह तो अनादी सिद्धान्तों वेदों और उपनिषदों की शिक्षा है जो सरल भाषा में ईश्वर आज्ञा से आ रही है।"

संस्मरण

(श्री कर्मचन्द टंडन, यौल कैम्प कांगड़ा द्वारा वर्णित)

मैनें (कर्मचन्द टंडन) ढाई मास तक नड़धजियाँ के मुकाम पर जब श्री सतगुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज तप के लिए उपयुक्त स्थान की खोज में प्रस्थान करके गये थे। उनके श्री चरणो मे अकेले ही जो अमृत पान किया उसका आनन्द अभी तक मेरे रोम रोम में समाया हुआ है। उस समय भक्त बनारसी दास जी लाहौर में ग्रन्थकी छपाई के लिए रुके थे। उस समय हर समय मैं श्री गुरुदेव की सेवा में उपस्थित रहता था। खान पान का प्रबन्ध लाला जोंदामल कुठाई निवासी के नौकर करते थे, जिनकी यहाँ दुकान थी। उनके चौबारे में ही उस समय श्री गुरूदेव का निवास था। पास ही एक सुन्दर जल का नाला बह रहा था मैं (कर्म चन्द टंडन) नड़धजियाँ में ही स्कूल टीचर था। केवल चार घण्टे स्कूल में उपस्थित होता और बाकी का समय श्री गुरूचरणों में ही बीतता था। जिससे चार पाँच घन्टे के लिए निकल जाते। इस समय के दौरान में मैंने हजारो प्रश्न

किये। इसी दौरान मुझको श्री महाराज ने अपनी शरण में लेने का आग्रह किया। मेरा घर कुठाई (नड़धजियाँ) से 4 या 5 मील की दूरी पर था। मैं हर शनिवार को घर चला जाता और सोमवार को फिर अपनी डयूटी पर जा आता था।

पहले ही शनिवार को श्री गुरुदेव ने फरमाया "लाल जी एक मलमल की पगड़ी लेकर आना।" मैं मूर्ख जीव, यौवन की 22 वर्ष की अवस्था, यह समझ न पाया कि श्री महाराज जी पगड़ी क्यों मंगवाते है। हम नौजवान उन दिनो नंगे सिर रहा करते थे और बालों को कंघा करके सवारते थे। पहली बार पगड़ी नहीं ले गया। श्री गुरूदेव ने पूछा लाल जी पगड़ी लायें हो मैं ने झूठ बोल दिया। महाराज जी! याद नहीं रहा। दूसरे शनिवार को यही फरमाया। फिर तीसरे शनिवार को श्री गुरूदेव ने मुझे बुलाकर कहा लाल जी अब यह आखरी मौका है। पगड़ी लेकर आना। फिर मैं सोमवार को पगड़ी लेकर श्री गुरुदेव के सम्मुख उपस्तिथ हुआ साँयकाल को फरमाने लगे। सुबह आठ बजे नहाकर आ जाना। आज्ञानुसार दास उपस्थित हुआ। श्री गुरुदेव ने अपने सामने बिठाकर अपने करकमलों से दास के सिर पर पगड़ी बांधी। फिर श्री गुरुदेव ने पवित्र उपदेश दिया और फरमाया "अब यह तुम्हारा नया जीवन आरम्भ हुआ है। पगड़ी के एक सिरे से पाँच गज लम्बाई में दो इंच' करीब किनारा काट कर अपने थैले में रख लिया। बस उसी दिन से मैं उनके चरणों का दास हो गया। जब वह पत्थर की शिला पर समाधिस्थ हो जाते मैं श्री गुरूदेव के मुखमण्डल को निहारता रहता। जब वह आँखे खोलते तब मैं (कर्मचन्द टण्डन) उनके श्री चरणों में अपना सिर रख देता। उस समय प्रश्न उत्तर भी आरम्भ हो जाते। यह समय दिन के दो बजे से 8-00 बजे तक रहता। मई जून का महीना था। बर्फ जैसे ठण्डे पानी वाले नाले के किनारे बैठ हम गुरू शिष्य दोनो आनन्द विभोर हो जाते । पर श्री गुरुदेव तो

ब्रह्मनन्द में लीन हो जाते। मैं उनके मुखमण्डल पर टिकटिकी जमाये अपनी आँखो द्वारा प्रेम और आनन्द की मूर्ति से प्रसारित होने वाली लहरों में गर्क हो जाता। उस समय के दौरान दो घण्टे बानी कलमबन्द की जाती। यह 2.50 माह का प्रोग्राम प्रतिदिन का था। पर एक मार्मिक बात मुझे श्री गुरुदेव ने उस समय कही थी। "लाल जी ! छः महीने का रास्ता है मात्र जल्द अज़ जल्द (शीघ्राती शीघ्र) शुरू करो तुम जल्द ही मंजिले मकसूद पर पहुँच जाओंगे।

सद्गुरू दर्शन- संस्मरण

परस राम हरयाल-दिल्ली

1942 बसन्त ऋतु में दास फौज से अवकाश पर अपने गांव मोहड़ा मिसरां जो कि हरनाल गांव के निकटवर्ती था, आया हरनाल गांव गुरुदेव के गांव गंगोठियां ब्राह्मणां से लगभग 17 कि. मीटर था। गुरुदेव महाराज मंगत राम जी ने हरनाल गांव में यज्ञ किया था। यज्ञ वाले दिन दास के एक बुजुर्ग, पशु चिकित्सक, श्री मोहन लाल बाली, ने यज्ञ में चलने की प्रेरणा की दास ने प्रार्थना की कि यज्ञ का खाना दास को अनुकूल नहीं तब बाली जी ने कहा कि पढ़े लिखे, समझदार फकीर ने हरनाल गांव में यज्ञ किया है। अतः यहां जाकर कुछ विचार विमर्श करगें। दास तैयार हो गया और हरनाल गांव पहुंचकर फकीरों के दरबार में उपस्थित हुआ।

गुरुदेव स्कूल के सामने तालाब के किनारे एक पीपल के पेड़ के नीचे बिराजमान थे। सामने तालाब के किनारे एक पीपल के पेड़ के नीचे विराजमान थे यज्ञ सम्पन्न हो चुका था। कुछ स्त्री पुरुष वहां उपस्थित थे। नमस्कार करके हम बैठ गये। एक युवक, जिसके पास एक पुस्तक थी, वेदान्त के प्रश्न पूछ रहा था।

उसके पश्चात दास ने पूछा, "कुछ लोग ईश्वर की बड़ी उस्तुति करते हैं और मांगना भीख आरम्भ करते हैं। यदि मैं उस्तुति करके अपशब्द कहूं तो क्या ईश्वर को कुछ अन्तर पड़ता है?"

गुरुदेव ने स्त्रियों को हाथ जोड़ कर जाने की आज्ञा दी। तत् पश्चात दास को पूछा, "उस्तुति और अपशब्द का प्रश्न तब उठता है जब ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास हो क्या तुम्हें विश्वास है कि ईश्वर है?

दास ने उत्तर दिया, "यदि ईश्वर पर मुझे पूर्ण विश्वास हो तो मुझे यहां आने की आवश्यकता न थी और यदि यह विश्वास होता कि ईश्वर नहीं है तो भी नहीं आता। दुविधा में हूं इसी लिये चरणों में उपस्थित हुआ हूं। मैं पूरे मन से एक बार चेष्ठा करना चाहता हूं। यदि कुछ प्रत्यक्ष न हुआ तो मैं छत पर चढ़ कर शोर मचाऊंगा कि इस विषय पर समय नष्ट न किया जाये।

गुरूदेव बोले, "ईश्वर है। उसकी उस्तुति या निन्दा से उसे कुछ प्रयोजन नहीं हां अपने मन पर प्रभाव पड़ता है"।

दास ने कहा, "पहले तो लोगों को ईश्वर का ज्ञान नहीं पर यदि किसी को पता है तो वह बताना नहीं चाहता।

गुरूदेव- "प्रेमी ईश्वर प्राप्ति का मार्ग समाचार पत्रों में छपवा दिया जाये या दीवारों पर लिखा जाये तो क्या लोग इस मार्ग पर चल पढ़ेंगे? कोई ही चलने को तैयार होता है। उनमें से कोई विरला ही पहुंच पाता है। फकीर दर दर घूम रहे हैं कि कोई इस मार्ग का अधिकारी मिले।"

तब एक बुजुर्ग सफेद पोश ने मुझे कहा "तुम जवान हो और फौज में नौकरी करते हो। किस ओर चले हो?" (मेरी आयु तब लगभग 24 वर्ष थी।)

दास ने उत्तर दिया क्या जंगल उगने दूं। फिर बड़े-बड़े पेड़ों को काटता रहूं और जंगल साफ करता रहूं। तब तक मेरा तोता उठ जाएगा।" बुजुर्ग चुप हो गया। फिर गुरुदेव ने पूछा, "शराब पीते हो?"

दास ने न में उत्तर दिया।

गुरुदेव मांस खाते हो?

दास ने न में उत्तर दिया।

गुरुदेव "सिगरेट पीते हो?

दास ने पुनः न में उत्तर दिया।

गुरुदेव "सिनेमा देखते हो?

"कभी कभी", दास ने उत्तर दिया।

गुरुदेव बोले, "तुम आधे तैयार हो अभी तुम्हे और देखना होगा। यह गंगोठियां जा रहे हैं। तीन चार दिन के बाद गंगोठियां आना।"

तीन दिन बाद दास जाने के लिये घर से निकला तो पिता जी दूसरे दरवाजे से निकल कर मेरे सामने आ खड़े हुये और कहा, "तुम मानोगे नहीं जाओगे जरूर मार्ग कठिन है। इस मार्ग में जो भी करो पाखण्ड न करना।" यह कह कर रास्ता छोड़ दिया और दास गुरुदेव की शरण में पहुंच गया।

गंगोठियां में गुरुदेव के निवास में प्रति दिन संध्या समय सत्संग होता था। एक दिन सत्संग के पश्चात काम वासना के सम्बन्ध में चर्चा चल रही थी। दास ने प्रार्थना की कि इस विषय पर समय नष्ट वर्षो किया जाता है। यह कोई कठिन समस्या नहीं है। सारी संगत मेरी ओर देखने लगी।

गुरुदेव मुस्कराये और बोले, "अच्छा बच्चू देखेंगे।" कुछ दिन

पश्चात भक्त बनारसी दास रावलपिण्डी से आये अगले दिन बनारसी दास जी दास को प्रात: समय गुरुदेव के सामने बैठ गया। गुरुदेव ने बड़ी कृपा पूर्वक दीक्षा प्रदान की और चर्णामृत दिया। गुरुदेव तब बोले, "यह जो दृश्यमान है यह सत्य नहीं है।"

दीक्षा को जीवन का अंग बनाया और गुरुदेव का आभार माना। छः महीने के अन्दर कुछ ऐसे चिन्ह प्रकट हुये जिनसे विश्वास हुआ और अधिक लगन से इस ओर बढ़ने की प्रेरणा हुई। गुरु दीक्षा और पितृ शिक्षा का पाखण्ड नहीं करना, यह दो मुख्य जीवन आधार बने हुये हैं।

अगले वर्ष श्री लंका अपनी फौजी यूनिट के साथ जाना पड़ा यहां एक व्यक्ति मटोर गांव के श्री राम लाल, ने मुझे साधना करते देख कर कहा कि वह महाराज मंगत राम जी को अपना गुरू मन से मानता है और छुट्टी जाने पर महाराज से दीक्षा ले लेगा। लेकिन अभी मार्ग दर्शन के लिये दास को प्रार्थना की। दास ने टालना चाहा लेकिन वह न माना और मजबूरी में उसे साधन बताना पड़ा। गुरुदेव को पत्र द्वारा वृतान्त लिख दिया और प्रार्थना की कि राम लाल पर कृपा करें। उत्तर में गुरूदेव ने डांटा और लिखा कि कच्ची अवस्था में किसी को बताने से हानि होगी। पत्र द्वारा क्षमा मांगी और तब गुरूदेव ने पत्र द्वारा क्षमा किया। अवकाश ग्रहण कर पुनः समयाला जाकर साक्षात क्षमा मांग ली।

यहां यह बताना आवश्यक है कि गुरूदेव सर्वत्र प्रकाश रूप व्याप्त है और जब कभी साधन में कोई आवश्यकता होती है तो मार्ग दर्शन प्राप्त होता है। गुरुदेव सब को सुमति बख्शे।

गुरूदेव चर्ण शरण- संस्मरण

(कृष्ण लाल शर्मा दिल्ली)

बालपन से रिवाजी धर्म की ओर रुचि थी। वास्तिवित्ता से अनभिज्ञ था। कालेज में पठन काल में पुस्तकालय में से स्वामी राम तीर्थ की जीवनी एवं लेख व उपदेश पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। साथ साथ हिन्दी में गीता की व्याख्या महाराष्ट्र के महान संत श्री ज्ञान देव द्वारा रचित भी पढ़ा करता था। सोचने का ढंग बदला। रिवाजी धर्म के स्थान पर वासत्विकता की ओर मन मुढ़ा ग्रन्थ "श्री समता प्रकाश" गुरुदेव की अमर वाणी का एक अंग "सम दर्शन योग" उर्दू में छपा कहीं से प्राप्त हुआ। अधिक समय उसी पुस्तक के अध्ययन में कटने लगा। बैंक कार्यालय में भी जब समय मिलता सम दर्शन योग उठा लेता। अनेक बार इसे पड़ा । अन्ततः मन में तीव्र इच्छा जगी कि जिस महापुरूष की यह वाणी है, उनके दर्शन अवश्य करने होंगे।

नवम्बर **1945** की बात है। दास लाहौर बैंक के मुख्यालय में कार्यरत था। पता चला कि एक महात्मा जी चौबुर्जी (लाहौर) में "मार्तण्ड" नामक मासिक पत्रिका के सम्पादक श्री रामलाल वर्मा "परमार्थी के घर पधारे है और सायंकाल प्रतिदिन सत्संग होता है।

अगले दिन परमार्थी जी के घर पहुंचा। सोचता था कि महात्मा जी भगवा वस्त्र धारी होंगे। गर्दन फूल मालाओं से लदी होगी। ऊंचे आसन पर आसीन होंगे। कमरे में पहुंच कर ऐसे कोई महात्मा दिखाई न दिये। एक कोने में सफेद वस्त्र धारी दुबले पतले व्यक्ति दिखाई दिये शरीर कृश था लेकिन मुख मण्डल पर तेज था। सभी लोग प्रणाम करके बैठ रहे थे। महात्मा जी के हाथ जुड़े थे और लोगों के प्रणाम करने से पहले ही यह स्वयं उन्हें प्रणाम कर देते। संत

ज्ञानेश्वर ने ऐसे महापुरूष के लक्षण ज्ञानेश्वरी के छठे अध्याय में वर्णन किये है। वह सारे लक्षण इन महात्मा जी पर पूरे उतरते थे।

सत्संग आरम्भ हुआ। जब बाणी उच्चारण होने लगी तो ऐसा लगा जैसे कबीर एवं गुरू नानक के सम्मुख बैठे हुये उन्हें सुन रहे हैं। मन ने साक्षी दी कि इन्हीं से कल्याण सम्भव है। सत्संग सम्पन्न हुआ। लोग जाने लगे। दास धीरे-धीरी आगे बढ़ते-बढ़ते श्री गुरूदेव के चरणों में पहुंच जाता रात को प्रणाम कर घर लौट जाता।

प्रतिदिन एक सप्ताह नियमित रूप से सत्संग सुना। सप्ताहांत पर बनारसी दास जी से प्रार्थना की कि महाराज जी से मार्ग दर्शन प्राप्त हो जाये तो बहुत अच्छा हो बनारसी दास जी बोले, "स्वयं प्रार्थना करो।"

अगले दिन सत्संग समाप्ति के पश्चात धीरे धीरे लोगों के जाने से रिक्त स्थान पर आगे बढ़ते बढ़ते श्री चरणों में पहुंचा। प्रार्थना की "प्रभो! मार्ग दर्शन की कृपा करें।"

गुरुदेव! "प्रेमी, यह कठिन मार्ग है।"

"प्रभु, यदि मार्ग है तो चलने के लिये है। कठिन हो तो भी सहल हो तो भी," दास ने प्रार्थना की।

गुरुदेव, "मांस, शराब का सेवन करते हो?"

दास, "नहीं, महाराज।"

गुरुदेव, "सिगरट?"

दास "नहीं महाराज।"

गुरुदेव, "सिनेमा ?"

दास, शौक नहीं। कभी कभार देख लेता हूँ" आज्ञा हुई.

"प्रातः **8** बजे आ जाओ प्रणाम करके घर लौटा लगभग 4 किलोमीटर की दूरी साईकिल पर किस मस्ती में कटी कुछ ज्ञान नहीं एक ही धुन थी। दिन निकले और श्री चरणों में उपस्थित हो जाऊँ।

दिन हुआ उठा। स्नान किया। साईकिल पर चल पड़ा। गुरु दीक्षा के लिये कुछ नियम है, भेंट पूजा के। कुछ ज्ञान नहीं और न होगा ही। श्री चरणों में पहुंचा। गुरुदेव ने सद्युक्ति समझाई। चरणामृत प्रसाद दिया और दास प्रणाम कर कार्यालय चला गया। दो दिन पश्चात् गुरुदेव कहीं और प्रस्थान कर गये। संगत के प्रेमियों ने पूछा, "भेंटा क्या हो?" चौका "अरे, लोग दीक्षा लेकर कुछ भेंट भी करते हैं। बड़ी भूल हुई लेकिन मेरे पास क्या था जो भेंट करता।" इसी उधेड़बुन में गुरुदेव को पत्र लिखा। अपनी भूल प्रकट की और क्षमा मांगी। गुरुदेव ने उत्तर दिया, "तुम रूपये, पगड़ी, बताशे से भी आते, तो बताशे प्रसाद में बंट जाते और रूपये एवं पगड़ी हम लौटा देते गुरु दक्षिणा यही है कि गुरु के मार्ग दर्शन को अपनाओं और जीवन सफल करो।" "गुरुदेव धन्य है आप" आज कल के गुरुओं की दशा देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। जो कहते है मन, धन सब कुछ गुरु के अर्पण करो।

देश का विभाजन हुआ। लाहौर से दिल्ली आ गया। संगत अच्छी प्राप्त हुई गुरू कृपा से स्वर्गीय श्री गोरख नाथ सम्पादक "ओम" पत्रिका, बंटवारे से पहले लाहौर से दिल्ली आ गये थे तीन मास उनके साथ कमला नगर में रहा और साधन सम्बन्धी गुरु आज्ञा का पालन करता रहा। स्थिति बदलने लगी सद्गुरु कृपा प्रत्यक्ष होने लगी। लेकिन पूर्व जन्म के कुकर्मों का फल सामने आया।

रविवार साप्ताहिक सत्संग कटड़ा रियोड़ी सब्जी मण्डी में श्री परमार्थी जी के घर में होता था। एक सत्संग में साधारण बात परमार्थी जी से हुई।

"गुरुदेव की वाणी में आता है- श्वास, सुरत और नाम की बन्ध गुरुमुख खोले विषमी सन्ध। कृपया इस को सविस्तार समझाने की कृपा करें।" जो व्याख्या उन्होंने की वह यर्थाथता के विपरीत थी। मन मे विक्षिप्तता आई। स्थिति बिगड़ी गुरूदेव को पत्र द्वारा सूचित किया। उत्तर में अच्छी डांट पड़ी।

"प्रेमी जी घबराने की जरूरत नहीं। फिर कोशिश सही करते रहें। प्रभु शायद दयालु होकर फिर अन्तःकरण को रोशन कर देवें। इसमें जोर किसी का नहीं चलता। उसकी दया होनी चाहिये। तुमको पहले जब यह समझा दिया था मगर फिर तुमने महफल लगानी शुरू कर दी। तो अब पछताने की बजाय अपनी लगन को दृढ़ करते जायें। प्रभु की जरूर कृपा होगी। छोटी अकल हाजमा कहां से लाए। अब अपनी गलती को समझ कर आईन्दा ज्यादा अभ्यास में प्रेम धारण करें और जबान पर मोहर लगा देवें गैब के हालात की। तब ही प्रभु जी से क्षमा करके फिर सत्शान्ति की झलक शायद अपनी अपार दया से दिखलायें। ईश्वर सत्विश्वास देवे प्रेमी जी बासमझ होकर पूर्ण जब्त से इस मार्ग पर चले तब ही सत्शान्ति को हासिल कर सकोगे। ईश्वर नित ही रक्षक होवें।"

किस मुख से सद्गुरु उपमा की जा सकती है आज के समय में ऐसे सद्पुरूष का संग कहाँ प्राप्त हो सकता है? पूर्व जन्म के सत्कर्मों के फलस्वरूप ही हमें पूर्ण पुरूष चरण शरण प्राप्त हो सकी। हर क्षण उनकी परम कृपा का मात्र बनने की हमारी चेष्टा है, यह ही गुरूदेव से प्रार्थना है।

संस्मरण

(देहली खां के बाग में सितम्बर व अक्टूबर 1952) मे जब श्री महाराज जी यहाँ पधारे तो प्रमी उलफतराय जी ग्रोवर वहां दर्शनार्थ आये, उस समय उनके बगल में अखबार थी।

श्री महाराज जी ने प्रेमी से पूछा, यह आपकी बगल में क्या है। इस पर प्रेमी ने कहा महाराज जी यह आज की अखबार है।

इस पर श्री महाराज जी ने प्रेमी से पूछाकि क्या कोई नई खबर है। श्री उलफतराय जी ने कहा कि महाराज जी लन्दन से महात्मा के दो शिष्यों की अस्थियाँ यानि भिक्षुओं की अस्थियाँ भारत लाई गई है। इस पर श्री महाराज जी ने एकदम फरमाया-ओह बुद्ध को तो दो भिक्षु मिल गये थे यहाँ तो एक भी नहीं मिला।

संस्मरण

(मास्टर जगन्नाथ और बाबू लक्षमणदास वकील)

जगाधरी अक्टूबर मास 1953 में श्री महाराज जी के पास, समता योगाश्रम जगाधरी में आये उस समय श्री लखमणदास वकील ने निम्न प्रश्न श्री महाराज जी से किया और इसका उत्तर जो श्री महाराज जी ने दिया वह भी निम्न है।

प्रेमी श्री महाराज जी, आपने जो यह इतना बड़ा फैलाओं संगत का किया है। आपके पश्चात् इस गद्दी का मालिक कौन होगा और यह आश्रम जायदाद किसके नाम होंगे?

गुरूदेव :- आश्रम जायदाद की संगत मालिक है। इसमें फकीरों का कोई ताल्लुक (सम्बन्ध) नहीं है। यहाँ कोई गद्दी वगैरह नहीं होगी। इन मठ और गद्दियों ने तो भारत को पहले ही नाश किया

हुआ है। जब सूरज चढ़ेगा तो यह खुदबखुद (स्वयं) रोशनी देगा और उसकी कशिश से लोग खुदबखुद खिंचे चले आयेंगे।

संस्मरण

(श्री रत्नचन्द अग्रवाल, अम्बाला)

मेरे विचार सन्तों के प्रति अच्छे नहीं थे मैं समझता था कि यह लोग समाज पर बोझ है। सन् 1953 का मास नवम्बर था। मुझे पं. जगन्नाथ जी ने कहा कि (जो कि सद्पुरुष महात्मा मंगतराम जी के शिष्य थे और कोहाला के रहने वाले थे जो इलाका अब पाकिस्तान में है) कि एक बहुत उच्च कोटि के परमसंत आपके नगर में पधारे हुए हैं और उनका ठहरने का प्रबन्ध नौरातााराम की बगीची में शहर के नये बांस के मरघट के आगे टैन्ट लगा कर किया हुआ है क्योंकि श्री महाराज जी आबादी से दूर रहना पसन्द करते हैं। आप उनके दर्शन करो और उनके शुभ विचारों से जीवन का लाभ प्राप्त करो।"

मन में उनके दर्शन करने की जिज्ञासा हुई और एक दिन मैं वहां गया। वहां पर देखा कि शहर से बहुत से प्रेमी वहां आये हुए थे। बड़ा ही शान्त वातावरण था मैं टैन्ट में एक तरफ जाकर बैठ गया। कई प्रेमी महाराज जी से अपने प्रश्नों के उत्तर पूछ रहे थे। श्री महाराज जी के उत्तर बड़े ही संक्षिप्त और पुरदलील होते थे। उसी समय किसी प्रेमी ने हिन्दु समाज की परिस्थिति के बारे प्रश्न किया।

श्री महाराज जी ने उत्तर दिया कि यह समता की तालीम ईश्वर आज्ञा से परगट हुई है और हिन्दु समाज की हालत को टांका इसी तालीम से लगेगा। इस समय हिन्दु समाज की हालत बिखरी हुई है।"

उसी समय श्री महाराज जी ने मेरी ओर देखकर विचार करने को कहा।

मैंने उस समय श्री महाराज जी से प्रश्न किया। श्री महाराज जी कोई भी समाज जैन, सिक्ख आर्य समाज तथा अन्य अपने आपको हिन्दु नहीं कहते फिर हिन्दु समाज का क्या बनेगा।" श्री महाराज जी ने फरमाया। "यह सब लोग इसी समता के प्लेटफार्म पर इकट्ठे होंगे।" उस दिन और भी बहुत से प्रेमियों ने प्रश्न किये लेकिन बहुत समय बीत जाने के पश्चात् स्मरण नहीं रहे। मेरा मन यहाँ इतना लगा कि वहां से उठने को जी नहीं चाहता था।

अगले दिन फिर मैं श्री महाराज जी के दर्शन करने गया। श्री महाराज जी उस समय कुटिया में (टैंट में अकेले ही बैठे हुए थे। मैं उनको दूर से ही प्रणाम करके बैठ गया। उसी समय श्री महाराज जी ने दास से कहा, प्रेमी कोई विचार करो।

दास ने उसी समय श्री महाराज जी से निवेदन की "महाराज जी! मुझे भी अपनी शरण में ले लें।" उसी क्षण श्री महाराज जी ने फरमाया, "प्रेमी सुबह आ जाओ" मैं अगले दिन सुबह निश्चित समय पर नहाकर उनके चरणों में पहुंचा और श्री महाराज जी ने दास को अपनी विशेष कृपा से निहल कर दिया।

यहाँ मैं पाठकों को स्पष्ट कर देना चाहते हूं कि मेरे मन में दीक्षा लेने का कोई लेशमात्र भी विचार नहीं था परन्तु यही सोचता रहा कि यह कौन से परम शक्ति थी। जिसने मेरे से यह प्रश्न श्री महाराज जी से करवा दिया। परन्तु यह आज भी सोचता हूं कि यह मेरे पिछले जन्म के पुण्य कर्म थे जो मेरे जैसे प्राणी पर भी उन महापुरुष की विशेष कृपा हो गई। वैसे तो दास अपने कों इस योग्य नहीं समझता था। संतों की महिमा अपरमपार है। इनकी महानता को तुच्छ बुद्धि कैसे समझ सकती है।

संस्मरण

(श्री किशोरीलाल जी मेंहगी, जम्मू)

एक बार श्री महाराज जी जम्मू में ठहरे हुए थे। मैं उनके दर्शनों को गया। श्री महाराज जी ने कहा कि प्रेमी कोई सवाल करो उस समय दास ने जो प्रश्न किया और जो उसका उत्तर मिला वह निम्न दिया जा रहा है।

दास का प्रश्न हिन्दु कौम संध्या के लिए प्रातः सूरज निकलने की तरफ और शाम को सूरज डूबने की तरफ मुंह करके संध्या करती है और आपने भी सुबह व शाम दोनो समय सत सिमरण के लिए आज्ञा दी है क्या संगत समतावाद में भी किसी विशेष तरफ मुंह करके सत सिमरण करने के लिए कोई पाबन्दी है?

उत्तर- प्रेमी जी! सत सिमरण करने के लिए कोई पाबन्दी नहीं है। जब ईश्वर सर्वव्यापक है और यह हर जगह मुसाबी तौर पर (समस्वरूप) में मौजूद है, तो किसी खास तरफ मुंह करके सतसिमरण करने पर पाबन्दी क्यो? लिहाजा आप किसी भी तरफ मुंह करके सतसिमरण कर सकते हैं।

संस्मरण

(श्री हरबंस लाल जी चावला, देहली)

1949 में कुछ माह के लिए श्री सत्गुरुदेव महाराज मंगतराम जी ने जाखू पहाड़ शिमला में एक पुरानी बिल्डिंग में तप का समय बिताया था। में उनके दर्शन करने से पहले दो दिन हरिद्वार, रिषीकेश लक्षमण झूला तीर्थ स्थान की यात्र करके श्री गुरुचरणों में शिमला पहुँचा। उन दिनों यह तीर्थ स्थान आज की तरह व्यापारी केन्द्र न थे।

धार्मिकता व सादगी का वातावरण अधिक था। कई छोटी - छोटी पहाडियों में नदी नाले कहीं कहीं भी बावलियां देखने में आई। कही-2 साधु तपस्ती भी तप में बैठे हुए दिखाई दिये।

श्री गुरुचरणों में पहुंचे हुए दूसरा दिन था वही पता लगा कि श्री बाबू अमोलकराम जी ने जगाधरी आश्रम के लिए जमीन का कार्य पूरा कर लिया है। यह सूचना बाबू जी स्वयं वहां देने आये थे उसी समय दास श्री महाराज जी के पास बैठा हुआ था जब वहां जमीन की चर्चा चली तो श्री महाराज जी ने दास से पूछा "कहो प्रेमी तुम्हारा जगाधरी आश्रम की जमीन के बारे क्या विचार है।"

दास ने श्री गुरु महाराज जी से निवेदन किया- महाराज जी लोगों के इकट्ठा होने के लिए और सम्मेलन करने के लिए तो वह जमीन ठीक ही होगी। परन्तु दास के विचार में आध्यात्मिक वातावरण यहाँ ही ठीक बनता है जहाँ प्राकृतिक वातावरण हो जैसे पहाड़ या जंगल, और आबादी से दूर तथा निकट कोई नदी बहती हो और पानी के चश्मे हो अर्थात् सारा वातावरण प्राकृतिक हो और वहाँ के दृश्यों से प्रकृति के रचियता की महानता प्रकट होती हो श्री गुरु महाराज जी यह सब सुनकर मौन हो गये।

लगभग तीन वर्ष के पश्चात् जब मैं श्री महाराज जी के दर्शन करने कालाघाट राजपुर देहरादून गया तो वहाँ पहुँचने के एक दो दिन पश्चात् श्री सतगुरूदेव महाराज जी ने फरमाया प्रेमी आओ हमारे साथ यह जगह देख आएं जो देहरादून के प्रेमियों ने संगत के लिए तपोभूमि राजपुर में ली है। श्री महाराज जी के साथ जाकर देखा, बड़ा ही रमणीक स्थान था दूसरे दिन देहरादून के प्रेमियों को इस स्थान के सम्बनध में कई सुझाव दिये। वह सुझाव क्या थे यह अब स्मरण नहीं।

समय बीतने पर विचार आता है कि सन्त या फकीर रूपये पैसे आदि से अपने को दूर रखते हैं परन्तु लोक हित में श्रद्धालुओं के लिए यह ऐसे प्रबन्ध कर जाते हैं जो बड़े-बड़े धनाढ्यों से भी ऐसी आशा नहीं की जा सकती। जगाधरी आश्रम व तपोभूमि इसके ज्वलन्त उदाहरण है। इसके मूल में उन संतों की परहित की भावना ही दृष्टिगोचर होती है।

1949 में श्री गुरुमहाराज जी जाखू पहाड़ शिमला में एक पुरानी बिल्डिंग में तप के लिए ठहरे हुए थे। दफ्तर से छुट्टी लेकर श्री महाराज जी के दर्शनों के लिए दास भी किसी विशेष कारणवश हरिद्वार व अन्य तीर्थ स्थानों से होता हुआ श्री गुरु महाराज जी के चरणों में उपिस्थत हुआ। गर्मी में लम्बी यात्रा के पश्चात् जब जाखू पहाड़ की ऊँचाई पर पहुंच कर श्री सत्गुरूदेव महाराज जी को दण्डवत प्रणाम करके बैठा। वहीं के अति शांत वातावरण से मन को बड़ा आराम मिला।

श्री गुरू महाराज जी दास से कुशलता आदि पूछने के पश्चात् समाधिस्थ हो गये। मेरे मन में विचार आया कि हम संसारी लोग इस सत्पुरूष की महानता को कैसे जान सकते हैं। हम लोगों में इतनी कमियाँ हैं कि किसी समय सत्पुरूष नाराज हो जायें तो कितना दण्ड मिल सकता है। उसी समय विचार में आया कि जब दुर्वासा ऋषि यादव वंशी लड़को से अप्रसन्न हुए थे तो उन्होंने यादव वंश के नाश होने का श्राप दिया था ऐसा श्रीमद्भागवत में आता है।

कुछ समय पश्चात जब श्री महाराज जी ने आँखें खोली तो फरमाने लगे "लाल जी कोई विचार करो।

दास ने कहा "महाराज जी। यह जो शास्त्र में वर्णन आता कि संत या सत्पुरूष किसी को वरदान देते हैं किसी को श्राप इस बारे में कुछ बताने की कृपा करें।"

श्री सत्गुरुदेव महाराज जी ने फरमाया प्रेमी जी असली संत या सत्पुरुष श्राप नहीं देते यह सब का कल्याण और भला ही चाहते है राजा व जज़ा। सब मनुष्यों को उनके अपने कर्मों के अनुसार ही मिलती है हाँ इतना जरूर है कि सत्पुरूष की दृष्टि दूर तक काम करती है मनुष्य के संस्कारों और प्रकृति को देखकर यह जान लेते हैं कि क्या यह मनुष्य इस मार्ग में अग्रसर हो रहा है जिसका नतीजा (परिणाम) सुख शांति और कल्याण है या जिसका अन्त तबाही और बरबादी है। कभी-कभी वह इसका जिक्र भी कर देते हैं वह जिक्र ही श्राप या वरदान के रूप में दिखाई देता है।

श्री गुरु महाराज जी के यह शब्द सुनकर मन के संशय और दुविधा दूर हो गई। जब यादव वंश के नवयुवकों में ऐसी गिरावट आ गई और दुर्वासा ऋषि जिनको भगवान कृष्ण ने अपनी पत्नी रूकमणी सहित रथ में जुतकर द्वारका में घुमाया था। उसने यह हंसी मजाक करने चल पड़े तो वास्तव में इस वंश का दुर्भाग्य आया हुआ था। जब उन नवयुवको ने एक नव युवक के पेट पर बर्तन बांध कर और उसे स्त्री का लिबास पहनाने के पश्चात् संत दुर्वासा जी से पूछना आरम्भ किया कि इस के घर क्या संतान होगी उस समय उन्होंने उत्तर दिया कि इस से वह पैदा होगा जो आपके वंश का नाश कर देगा।" जब इस उपरोक्त विषय पर विचार किया कि ऐसा लगा कि सत्गुरूदेव जी के थोड़े से शब्दों के उत्तर में कितना मरम (रहस्य) छुपा हुआ है। यह भी स्पष्ट हो गया कि संत दया के भंडार होते हैं और किसी का बुरा नहीं चाहते। शायद वही तपस्वी जो सतमार्ग में अपने ध्येय को प्राप्त नहीं हुए और अपने अहंकार पर विजय प्राप्त नहीं कर पाए और कुछ सिद्धयाँ उनको प्राप्त हो जाती है। ऐसे ही लोग अपने तपोबल के आधार पर दूसरे को हानि पहुंचाने के लिए प्रयोग करते हैं परन्तु सतपुरुष ऐसा नहीं करते वह तो दया

और क्षमा की साक्षात मूर्ति होते है इतिहास में सतपुरुषों के जीवन की ऐसी घटनायें भरी पड़ी है।

संस्मरण

(श्री वजीर चन्द लूथरा, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

सितम्बर मास 1951 की यह घटना है श्री महाराज मंगतराम जी अबोहर में पधारे हुए थे और प्रेमियों ने उनके ठहरने का प्रबन्ध ज्योहड़ी मन्दिर में किया हुआ था।

मुझे एक सज्जन ने सूचना दी कि एक बड़े उच्च कोटि के महात्मा ज्योहड़ी मन्दिर में ठहरे हुए है रोजाना यहाँ सत्संग भी होता है। दास ने भी यहाँ जाने का और उनके दर्शन करने का निश्चय किया। इससे पहले मैं यह बताना ठीक समझूंगा कि मैं पहले ही अन्य गुरु से दीक्षा ले चुका था परन्तु उनका पूरा हवाला देना उचित नहीं समझता क्योंकि श्री महाराज जी के मिलने के पश्चात उस दरबार को जिसका मैं परम भक्त था पूर्ण तिलांजली दे चुका था। वहाँ पूरा गुरुडम था बड़ी से बड़ी यहाँ तक सोना चाँदी की भेंट भी यहाँ देनी पढ़ती थी। अंधेरे का पता जभी लगता जब मनुष्य को चाँदना मिल जाता है।

जब मैंने श्री महाराज जी के प्रथम दर्शन किये तो उनका सादा लिवास व उनके पुरदलील प्रश्नों के उत्तर सुनकर मन उनके चरणों मे झुक गया। ऐसा प्रवचन आजतक दास ने कभी नहीं सुना था। मैं दर्शन करने से पहले श्री महाराज जी के लिए एक ऊन की जुराब घर से बनवाकर ले गया था। यह सोचकर कि श्री महाराज जी के दरबार में कुछ भेंट तो अवश्य ले जानी चाहिए। खाली हाथ जाना ठीक नहीं।

जब यह भेंट उन के परम शिष्य भक्त बनारसीदास जी के द्वारा श्री महाराज जी को भेंट की तो इस पर श्री महाराज जी ने फरमाया, "प्रेमी! इन्होंने जुराब आजतक नहीं पहनी इसे वापस ले जाओ तुम्हारे काम आएगी तुम्हारी सच्ची श्रद्धा की भेंट ही इस दरबार में काफी है।" इन शब्दों से मेरे मन पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा और मुझे झंझोड़ कर रख दिया। उसी मन में एक विचार आया कि यही वह सच्चा दरबार है जहाँ तेरा कल्याण होगा और आज प्रभु की तेरे ऊपर विशेष कृपा हुई है कि गुरुडम से तू बच गया है। उस दिन से तत्काल मैंने निश्चय किया कि मैं भी आज से जुराब नहीं पहनूंगा और फिर हमेशा हमेशा के लिए श्री गुरु महाराज जी के चरणों का दास बन गया।

संस्मरण

(श्री विशम्बरनाथ लूथरा, बीकानेर)

दिसम्बर मास की 22 तारीख सन 1953 का दिन था। मेरे हृदय के सम्राट परम योगीराज सतगुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज मलौट में पधारे हुए थे। मेरी उम्र उस समय 20 वर्ष की थी। मैं उस समय कालिज में पढ़ता था।

यहाँ यह बताना आवश्यक समझता हूँ कि इससे पहले दास ने श्री महाराज जी के 1950 में दर्शन किये थे और उस समय श्री महाराज जी से प्रार्थना भी की थी कि मुझे आप अपनी शरण में ले लें। परन्तु श्री महाराज जी ने फरमाया कि तुम क्या कालिज के विद्यार्थी इस योग विद्या की इज्जत कर सकोगे और कैसे संभाल सकोगे। जाओ पहले अपने लिवास को संभालों और जिन्दगी को पुर अमल बनाओ।"

1951 माह सितम्बर में श्री महाराज जी अबोहर पधारे हुए थे तो दास ने फिर प्रार्थना की। दास को अपने चरणों में स्थान दें। जिससे मेरा जीवन सुफल हो जाए उस समय श्री महाराज जी ने जो वचन मुझे कहे वह निम्न है।

"ईसा को तो लोगों ने गले में फाँसी दी थी लेकिन आजकल के नौजवान अपने आप हमेशा गले में फाँसी लटकाये फिरते हैं।"

मैं इस बात को सपष्ट कर देना चाहता हूँ कि उस समय मेरे गले में नकटाई लगी हुई थी और नया नया कालिज का विद्यार्थी था। श्री महाराज जी के शब्दों ने मेरे मन पर गहरा प्रभाव किया और तत्काल निश्चय किया किया आज से मैं नकटाई नहीं बाँधूगा। इस घटना से मेरे दिल में श्री महाराज जी के लिए तड़प और बढ़ गई और जिसका वर्णन शब्दों के द्वारा नहीं किया जा सकता। मन में बेचैनी रहने लगी और अनेक शंकाएं मन में उठने लगी। एक विचार बार बार जाता था "क्या श्री महाराज जी दास पर कृपा करेंगे।"

1952 में मैं अम्बाला शहर श्री महाराज जी के दर्शनों को गया। वहीं का दृश्य भी बड़ा ही आश्चर्य जनक था वहाँ मैंने ऐसा अनुभव किया कि श्री महाराज जी ने मेरे ऊपर जादू सा कर दिया है और मेरे ऊपर क्या प्रभाव हुआ यह वर्णन करना ठीक नहीं।

अतः यह शुभ घड़ी भी आ गई। 23 दिसम्बर 1953 का दिन था। मैं 22 दिसम्बर सांयकाल के समय मलोट में श्री महाराज जी के दरबार में गया और श्री महाराज जी से प्रार्थना कि अब आप मुझे अधिक न तड़पायें और अब में अधिक देर तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता।

उसी समय श्री महाराज जी ने फरमाया "तेरी कोई ज़मानत देने वाला है"।

मेरे इस गम्भीर मामले में पूज्य भक्त बनारसीदासजी ने सहायता की और कहा "हज़ूर यह वजीरचन्द जी ने सहायता की और कहा "हजूर यह वजीर चन्द जी का छोटा भाई है, मेहर कर दो।"

श्री गुरु महाराज जी ने उसी समय मुझे आदेश दिया कि प्रातः चार बजे नहाकर आ जाना।

बस फिर क्या था कि मुझे उस रात नींद ही नहीं आई और प्रातः तीन बजे उठकर ठीक चार बजे प्रातः श्री महाराज जी के दरबार में उपस्थित हो गया। उस समय जो मेरे मालिक ने मेरे ऊपर कृपा की यह दृश्य कभी भुलाया नहीं जा सकता।

जो खैरात मुझे मेरे मालिक के दरबार से मिली उसमें इतनी शक्ति और सचाई है कि तमाम दुनिया उसके सामने तुच्छ सी दिखाई पड़ती है। यही संतो की विशेष कृपा होती है जो बड़े पुण्य भाग से प्राप्त होती है।

संस्मरण

(श्री विशम्बरनाथ लूथरा, बीकानेर)

दिसम्बर 1952 की बात है जब श्री महाराज जी अबोहर में पधारे हुए थे और जोहड़ी मन्दिर में ठहरे हुए थे। मैं भाई वजीर चन्द जी के साथ उनके दर्शनों को गया सत्संग साँयकाल का समाप्त हो चूका था। प्रेमी लोग यहाँ से घर को चले थे।

कुछ प्रेमी श्री महाराज जी के पास बैठे हुए थे। हम दोनों भी यहाँ जाकर बैठ गये श्री महाराज जी ने फरमाया 1

"प्रेमी कोई सवाल करो"

इस पर एक बुजुर्ग प्रेमी ने वहाँ बड़े ही गम्भीर और सुन्दर प्रश्न किये और उनके उत्तर जो श्री महाराज जी ने दिये उनसे वह बुजुर्ग प्रेमी व अन्य उपस्थित लोग बड़े ही प्रभावित हुए। उत्तर बड़े छोटे और पुर दलील होते थे। उस समय क्या प्रश्न हुए और उनके क्या उत्तर दिये गये, ये अब मैं वर्णन नही कर सकता क्योंकि काफी समय व्यतीत हो चुका है स्मरण नहीं।

उस समय रात्रि के दस बजे चुके थे श्री महाराज जी प्रेमियों को फरमाने लगे जाओ प्रेमी अब आराम करो। पता नहीं वहाँ कौन सी कशिश थी कि मन वहाँ से उठने को नहीं चाहता था। सर्दी कड़ाके की पड़ रही थी उस बुजुर्ग प्रेमी ने श्री महाराज जी की टाँगें दबानी शुरू कर दी। श्री महाराज जी उस समय फरमाने लगे "प्रेमी इन सूखी लकड़ियों को दबा कर क्या लेते हो।"

दास ने भी डरते डरते श्री महाराज जी की कमर दबानी आरम्भ कर दी। किसी प्रकार अचानक ही मेरे कान श्री महाराज जी की कमर को छू गये। उस समय मैंने इन कानों से शंख मृदंग, घडियाल, घण्टों की आवाजें मुझे सुनाई दी जब भी यह दृश्य मुझे याद आता है तो मेरा मन आनन्द से भरपूर हो जाता है। परन्तु उस दृश्य का मेरी लेखनीय वर्णन करने में कोई शक्ति नहीं। यह जो सब कुछ हुआ मनुष्य की बुद्धि उसको सोच नहीं सकती। यह उन्ही की कृपा से ऐसा पढ़ा हुआ था कि योगियों के रोम रोम से नाद की गुजार होती रहती है वह आज प्रत्यक्ष अनुभव श्री गुरुदेव की कृपा से प्राप्त हुआ जिसका दास उनका जन्म तक आभारी है।

गुरुमिलन-संस्मरण

हरि कृष्ण कपूर

महाराज जी से मेरा पहला मिलाप देहरादून में हुआ। यह बात सितम्बर, 1953 की है। मुझे मिलाने वाले श्री नरसिंह द्वारा 'लौ' थे। वे उन दिनों दफ्तर में मेरे सुपरिटेण्डेण्ट थे और मुझसे बहुत स्नेह रखते थे। मुझे उनका सादा और सात्विक जीवन बहुत पसन्द था। एक दिन दफ्तर से छुट्टी के समय वे बोले, "कपूर, आओ आज तुम्हें एक ऐसे सनत के दर्शन कराएं जो न कुछ खाते है और न सोते हैं। बड़ी उत्सुक्ता से उनके साथ हो लिया और हम केलाघाट पहुंचे।

केलाघाट शहर से सात मील दूर राजपुर गांव से नीचे बहती नदी के तट पर बना हुआ है। यही एक टैंट में कुछ लोग हमारी तरह शहर से महाराज जी के दर्शनों के लिए आए हुए थे। हमने भी महाराज जी को प्रणाम किया और एक तरफ होकर बैठ गए महाराज जी बहुत दुबले पतले पुरुष थे। श्वेताम्बरी थे। शरीर दुर्बल और मुख पीला था। सन्यासियों की तरह कोई गेरुआ वस्त्र नहीं था। आध्यात्मिक विचार विमर्श हो रहा था। तरह तरह के प्रश्न किये जा रहे थे और महाराज जी उनके प्रभावात्मक उत्तर दे रहे थे। मुझे भी जोश आ गया और मैं भी सवाल कर बैठा, "महाराज जी "आप को सुना भूख नहीं लगती?" उत्तर मिला, "कौन कहता है इन्हें भूख नहीं लगती? हां, फर्क इतना है कि तुम्हें रोटी खाने की भूख लगती है, और इन्हें नाम सिमरन की भूख लगती है यह तो शरीर है इसे जैसा ढालो ढल जाता है।" फिर महाराज जी ने पूछा, "मांस खाते हो? उत्तर दिया, "नहीं"।

"शराब पीते हो?"

"जी नहीं।"

सिगरेट पीते हो?"

"जी नहीं।"

सिनेमा देखते हो"

"जी हाँ।"

"तो तुम्हें सिनेमा छोड़ देना चाहिए।"

महाराज जी उन दिनों शहर की तरफ ही विराजमान थे और शहर से बाहर ऋषिपर्णा नदी के किनारे एक कोठी में ठहरे हुए थे। यह जगह भी घर से 4-5 मील दूर थी। रोज दर्शनों के लिए जाने लगा। काफी भीड़ रहती थी महाराज जी बड़े सुन्दर विचार सामने रखते थे। दुबले-पतले शरीर की आवाज में बहुत जोर था। विचार सामने रखते थे। दुबले-पतले शरीर की आवाज में बहुत जोर था। बिना लाउडस्पीकर के बोलते थे। सुबह छः बजे से रात 10 बजे तक आसन पर बैठे रहते थे और संगत के प्रश्नों का उत्तर देते रहते थे। मैं रोज सोचकर जाता था कि प्रतिदिन खाली लौट आता था। नाम लेने के इच्छुकों में स्वर्गीय कुन्दनलाल जी वर्मा भी थे। मैंने उनसे पूछा, "आप तो नाम लिये हुये है, दोबारा क्यों लेना चाहते हैं?" उत्तर मिला, "मेरे गुरु आडम्बरी है।" मैंने फिर सवाल किया, "हो सकता है यह गुरु भी आडम्बरी ही हो कौन जानता है?

दस बजे महाराज जी सबसे हाथ जोड़कर कह दिया करते थे, "प्रेमी जी, अब जाइए। देर हो चुकी है। कल फिर दर्शन होंगे। उसी दिन रात दस बजे तक मैं और पूज्य वर्मा साहिब भी बैठे रहे हम दोनो को गुरुदीक्षा के लिए विनती करनी थी। संगत हिलने का नाम नहीं ले रही थी। महाराज जी के बार-बार कहने पर भी लोग बैठे हुये

थे। उस दिन पता चला कि महाराज अगले दिन देहरादून से जा रहे है। आखिर वर्माजी ने कह ही दिया, मुझ पर भी कृपा कीजिये।" महाराज जी मुस्कराये और बोले, "अच्छा कल सुबह छः बजे आ जाना।" वर्मा जी प्रसन्न होकर प्रणाम करके चलते बने। केवल मैं ही रह गया। मैंने भी हाथ जोड़कर विनती की, "महाराज जी मुझ दास पर भी कृपा कीजिए।" ध्यान से मेरी ओर देखते रहे "इतने दिन से क्यों नहीं कहा? कल जबकि हम जाने वाले है तो तुम कह रहे हो। वह भी रात के दस बजे ! दीक्षा कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो हर एक को माँगने पर दे दी जाय। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध जन्म-जन्म का होता है। क्या मालूम हम आडम्बरी हो।"

मेरे ऊपर एक बिजली सी गिरी मैं पसीना पसीना हो गया और कुछ न कह सका। इतना ही कह सका, "महाराज जी मैं नादान बालक हूँ ना समझ हूँ मैं इस योग्य नहीं कि आपकी कसौटी पर ठीक उतर सकूं और न मुझ में इतनी बुद्धि है कि आप जैसे महापुरुष को परख सकूँ। मुझे तो एक अनजान बालक समझ कर अपनी शरण में ले लीजिये।"

महाराज जी ने कहा, "अभी जल्दी ही क्या है? अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है ? फिर किसी और समय पर विचार करेंगे।' दिल में घनी उदासी लेकर घर की ओर चल पड़ा। मन में बहुत दुःख था साथ में क्रोध भी सोचने लगा कि वर्माजी को तो झट से साफ इन्कार कर दिया। ऐसी ठेस पहुंचाने वाला संत पूरा संत नहीं हो सकता।" इन विचारों में उल्झा मैं कोई 12 बजे घर पहुँचा। पत्नी पूछने लगी, "आप उदास क्यों है? क्या महाराज जी ने दीक्षा नहीं दी ? मैंने उत्तर दिया, "नहीं! और न ही देंगे। ये हमें परखना चाहते हैं। किसी और को तो परखते नहीं हम ही रह गये है परखने के लिये!"

पत्नी ने कहा, उन्होंने दीक्षा देना स्थगित ही तो किया है, इन्कार थोड़े ही किया है। इसमें भी अवश्य कोई भला होगा।

रात का एक बज चुका था परन्तु नींद नहीं आ रही थी। बाहर बारिश होने को थी थोडी देर के बाद आंख लग गई। कोई तीन बजे बादलों की गडगडाहट से नींद खुल गई। बारिश जोर पकड़ रही थी। लगता था जैसे बहुत बड़ी बाढ़ आ जायेगी। मन में गुदगुदी हुई। धर्मपत्नी को जगाकर कहा, "छः बजे दीक्षा का समय है। मैं भी चलता हूँ। शायद महाराज जी कृपा कर दें। कुर्ता पाजामा पहनकर और बाटा के स्लीपर बगल में दबाकर मैंने दौडना शुरू कर दिया। जवानी के दिन थे। चार पाँच मील दौड़ना कोई बड़ी बात न थी। एक कार का हार्न सुनाई दिया। कार मेरे बिलकुल पास आकर रुक गई। अन्दर पूज्य वर्माजी बैठे थे। उनके साथ देहरादून संगत के एक प्रेमी बैठ थे। प्रेमी देहरादून के प्रसिद्ध डाक्टर थे। वर्मा जी बोले, कपूर साहिब कार में आ जाइये"। मुझे ऐसा लग रहा था कि यह वर्माजी नहीं बल्कि महाराज जी है जो कह रहे हैं कि तुम्हारी परीक्षा पूरी हो गई। उत्तर दिया, "शुक्रिया वर्माजी आप चलिये! में बिलकुल भीगा हुआ हूँ। कार खराब हो जायगी और फिर अब तो फासला भी कम गया है।"

मैंने फिर दौड़ लगानी शुरू कर दी। पहले निराशा की दौड़ थी, अब मन दोड़ते हुए उछल रहा था जैसे कोई मुहिम फतह कर ली हो । गुरुस्थान पर पहुँचने में पाँच बज गये। भक्त बनारसी दास जी बाहर बरामदा में खड़े थे। देखते ही चौके और बोले, "बिल्कुल भीग गये है। इतनी जल्दी भी क्या थी? बारिश थम जाने पर घर से चले होते! आइये अन्दर आ जाइये! कपड़े उतार कर जरा आग ताप लीजिये ।"

बारिश बन्द हो चुकी थी जैसे यह मुझे ही भिगोने के लिये आई हो भक्त जी ने एक धोती पहनने को दी। मैं अपने कपड़े सुखाने लग गया।

भक्तजी ने पूछा, "कल रात महाराज जी से पूछ तो लिया होगा दीक्षा के लिये।"

उत्तर दिया, "जी हाँ लेकिन उन्होंने इजाजत नहीं दी थी।"

भक्त जी ने पूछा ये तो किसी को मना नहीं करते।"

कहा, "उन्होंने कहा था कि तुम्हे अभी इन्होंने परखा नहीं है।"

भक्त जी मुस्कराये और बोले, "चलो अब तो रख लिया न चिन्ता न कीजिये। आज दीक्षा सबसे पहले आप को मिलेगी।

ठीक छः बजे महाराज जी बाहर से पधारे! सब प्रेमियों ने आगे बढ़ कर प्रणाम किया। महाराज जी मेरी ओर देखकर मुस्कराये। महाराज जी ने स्नान किया और कमरे में आसन पर विराजमान हो गये। भक्तजी ने दीक्षा लेने वाले प्रेमियों में सबसे आगे मुझे बिठाया।

दीक्षा लेने के बाद मैंने देखाकि वर्माजी गुरुदेव को अर्पित करने के भेंट भी लाये है देखकर मैं बहुत लज्जित हुआ।

आँखें भर आई। कहने लगा, 'महाराज.....लेकिन महाराज जी, ने बीच में ही टोककर कहा, "तुम ने इनको वह दिया है जो इनमें से किसी ने भी नहीं दिया है।"

आरती

तूं पार ब्रह्म परमेश्वर, तीन काल रछपाल।
नित पाऊँ शरनागती, सत चरण कँवल दयाल॥
तूं नित पतित उद्धार है, पूरन प्रभ जगदीश।
मोह माया संकट हरो, दीजो ज्ञान संदेश॥
नित ही तेरे चरण की, मन में रहे परीत।
तूं दाता दातार है, पुरुखोत्तम सुखरीत॥
पवन पानी बैसन्तर, धरती और आकाश।
सबको सरजनहार तूं, आद पुरख अबनाश॥
घट-घट व्यापक तूं परमेश्वर, सरब जियाँ आधार।
अनमत कूकर को राख लें, किरपा निद्ध करतार॥
काल करम जाए दूषना, खल बुद्धि हरो अज्ञान।
सत श्रद्धा पाऊँ चरण की, अखण्ड प्रेम चित ध्यान॥
दीनानाथ दयाल तूं, पल पल होत सहाये।
कीरत साचे नाम की, मन तन आए सहाये॥
अन्तर का सब खेद हरो, दीजो सत विश्वाश।
शरणागत हूँ मंधमती, घट अन्तर करो परकास॥
अन्तरगत सिमरन करूँ, निरन्तर धरूँ ध्यान।
घट घट में दर्शन करूँ, आद पुरख भगवान॥
तूं साचा साहिब सरब परकाशी, शबद रूप आखण्ड।
गुनी मुनी उस्तत करें, तन मन पाएँ आनन्द॥

होवें दयाल हूँ सत परमेश्वर, देवें धीर अपार।
निमख निमख सिमरण करूँ, चित चरण रहे आधार।।
काया अन्तर परतख होवें, नाद रूप बिसमाद।
पल पल कीजूँ आरती, तन मन तजूँ व्याध।।
जग आवन सुफला होवे, तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ।
अन्तरगत करूँ आरती, भव दुस्तर तर जाऊँ।।
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरनी करे पुकार।
'मंगत' माँगे दीनता, सत धर्म सुख सार।।

समता मंगल

समता धरम हृदय रसे, बिख ममता होवे नाश।
सत सरूप परमात्मा, जल थल पाऊँ प्रकाश।।
सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार।
समता साधन पाये के, नित परसाँ जैकार।।
सत कर्म सत निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार।।